Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान (मासिक)

वरी से १५ फरवरी, १६८६ तक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

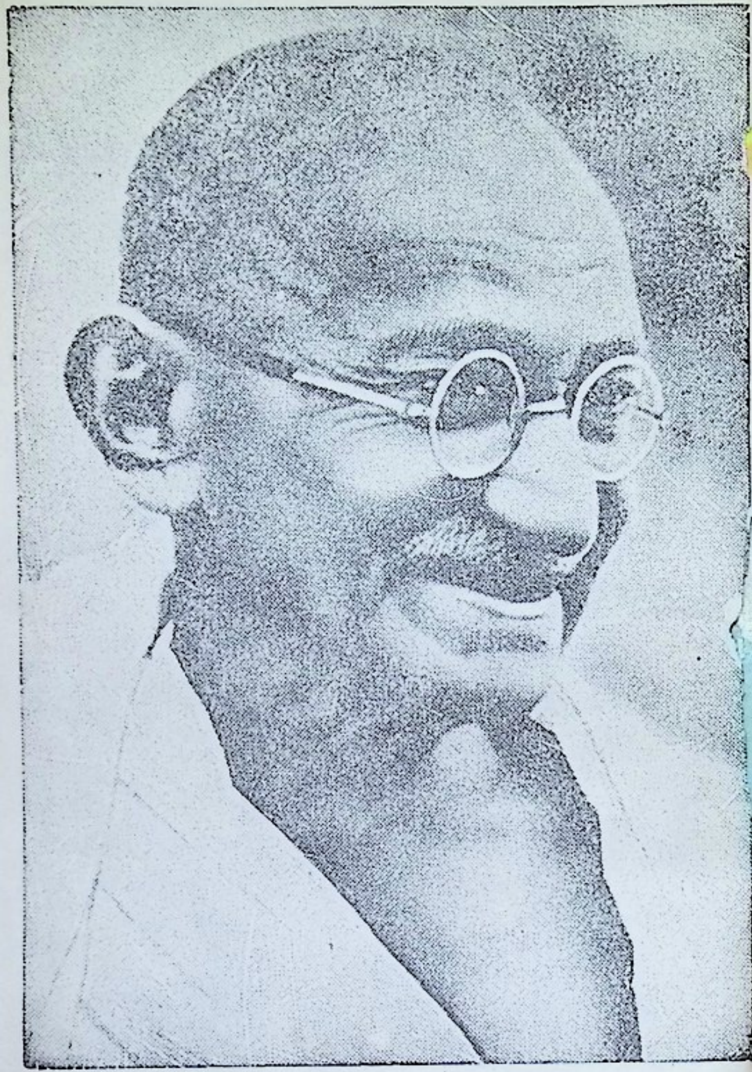

विश्ववन्द्य महात्मा गांधी

(विशेष लेख इसी अंक में देखें।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

प्राप्त

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस अंक में पढ़िये

सम्पादकीय		२
महात्मा वेदभिक्षु: की अमरवाणी		६
क्या इस देश में हिन्दू होना अपराध है ?	—पंडिता राकेशरानी	११
क्रान्तिवीरों की अमर ओजस्वी वाणी	—संकलयित्रा राधेलाल मित्तल	१७
वास्तविक हिन्दू राज्यवस्था में क्या होगा ?	—विश्वम्भरसहाय विनोद	२१
कांग्रेस की मौलिक भूलें	—स्व इन्द्र विद्यावाचस्पति	२५
लहू (कविता)	—सूरज	३१
आप ही के पत्र		३३
उदर के रोगों से कैसे बचें ?	—डा. कमला प्रधाना	३७
सुखी जीवन की सप्तपदी	—पं. सत्यदेव विद्यालंकार	४०
आज की समस्यायें और उनका समाधान	—महात्मा नारायण स्वामी 'क्रान्तिकारी'	४२
वैदिक सन्ध्या की विशेषता	—सत्या पथरिया	४५
स्वामी विवेकानन्द, जिन्होंने हिन्दुत्व में प्राण प्रतिष्ठा की	—धर्मपाल शर्मा	४६
राज्याभिषेक के समय राष्ट्रपति की प्रतिज्ञा	—डा. रामनाथ वेदालंकार	५४
अपनों से अपनी बात उत्तिष्ठत जाग्रत...	—प्रमोद कुमार आर्य	५६
आपका स्वास्थ्य कैसा है ?	—डा. बोधायन	६५
भारत को तोड़ने के लिए विदेशी धन	—आलोक मेहता	६६
करेंगे योग, रहेंगे नीरोग.	—योगाचार्य के एम. गांगुली	७१
वेद ही शिक्षा नीति का आधार हो	—कर्पूरचन्द्र कुलिश	७५
जहर भरा है—चाय व अंडे में	—चन्द्रशेखर	८३
लालबहादुर शास्त्री : जो भीतर-बाहर समान थे	—सुरेश राम	८६
सच्ची सत्याग्रह भावना (कांग्रेस की अन्त:कथा)	—अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द	६५
रजनीश हिमगिरि की शरण में	सत्यपाल शास्त्री	१०२
दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य (सूचीपत्र)		१०७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू राज्य स्थापना हेतु संघर्ष करो।

संस्थापक—स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः
सम्पादक—राकेशरानी
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग,
करौलबाग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५७२२६३६
५७२४७४१
८०१२११

वार्षिक मूल्य : ३० रुपये
विदेश में : विमान से ४२ पौंड
६० डालर
समुद्री डाक से ४ पौंड, ६ डालर
आजीवन : ५०१ रुपये
विदेश में : १५०१ रु.
यह अंक : तीन रुपये
पौष संवत् २०४२
जनवरी १९८६, वर्ष १६, अंक ९

वेदोपदेश

दान की महिमा

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकि
कृतस्य कार्यस्य चेह स्फातिं समाव

पदार्थ—(शतहस्त) हे सौ ह
वाले मनुष्य ! (समाहर) तू इक
कर और (सहस्रहस्त) हे ह
हाथों वाले ! (संकिर) तू दान
बिखेर। इस तरह (कृतस्य)
किए हुए की (कार्यस्यच)
किए जाने वाले की (स्फाति
बढ़ती को, फसल को (इह) त
संसार में (समावह) ठीक प्रक
प्राप्त कर।

विनय—हे दो हाथों
मनुष्य ! तू सौ हाथों वाला
धन संग्रह कर, सौ गुनी शवि
धन धान्यादि ऐश्वर्यों को इ
कर। परन्तु इस उपार्जन कि
अपने धन को हजार हाथों
होकर सत्पात्र में दान कर दे
संग्रह करने के लिए यदि तू सौ
वाला हुआ है तो धन को
बांट देने के लिए, दान कर
लिए, तू हजारों हाथों वाला हो
इससे निःसन्देह तेरी बढ़ती
तेरी उन्नति होगी, तेरा बढ़ा
कल्याण होगा। तू अपनी 'कृत
'कार्य' कमाई को देख। तू
कमाया है वह तो कमाया ही
तेरी 'कृत' कमाई है; परन्तु ज
हजार हाथों से दूर-दूर अपने
फैलाया है वह भी तेरी ही कम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संपादकीय

गणतन्त्र पर्व: संकल्प की वेला

२६ जनवरी को भारतीय गणतन्त्र की घोषणा की वर्ष गांठ है। प्रत्येक नागरिक जिसकी मातृ भूमि के प्रति निष्ठा असंदिग्ध है, जो स्वदेश के कण-कण को काशी, वृन्दावन, अमरनाथ तथा कन्याकुमारी जैसा ही पावन मानता है, जिसने इस परम पुनीत आर्यावर्त्त हिन्दुस्थान की भूमि को अपनी प्रेरणास्थली माना है, उसके लिए ब्रिटिश शासन से इस महान् देश की पूर्णतः मुक्ति का यह स्मृति दिवस निश्चय ही दीवाली और दशहरे जितना ही हर्ष, उल्लास तथा आह्लाद का प्रदाता है।

गणतन्त्र दिवस निश्चय ही संकल्प दिवस भी है। अपने इस संकल्प को दोहराने में हम अपने संकीर्ण विवादों, क्षेत्रीय भावनाओं और व्यक्तिगत महत्त्वकांक्षाओं तथा दलगत निष्ठाओं को स्वदेशनिष्ठा के आड़े नहीं आने देंगे। स्वदेश के बाहरी और आंतरिक शत्रुओं के मुकाबले में "वयं पंचाधिक शतम्" के उद्घोष को ही अपना पथ-प्रदर्शक मानेंगे। आज का यह दिन इस तथ्य का परिचायक है कि इसी दिन विश्व के इतिहास में हमारी राष्ट्रीय विजय का स्वर्णिम पृष्ठ जुड़ा था।

निश्चय ही यह दिवस हमारी शानदार विजय का दिवस है। यह हमारी उस विजय का प्रतीक है, जिसे असंख्य राष्ट्रभक्तों ने स्वातन्त्र्य समर में अपना रक्त बहाकर प्राप्त किया था। आज ऐसे भी विद्वत्-जन हैं जो हमें यह बताना चाहते हैं कि रातों-रात ब्रिटिश साम्राज्यवाद का हृदय परिवर्तन हुआ था और उन्होंने भारत के स्वतन्त्रता देने की सदाशतता दर्शायी थी, जबकि ऐतिहासिक तथ्य यही है कि भारत की राष्ट्रभक्त जनता ने उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर भारत से कूच करने पर बाध्य किया था।

बताया जाता है कि जब रोमन विजेताओं ने ब्रिटेन छोड़ा था तो ब्रिटिश जनों ने घुटने टेककर यह याचना की थी कि वे उन्हें गहन सागर और आपदाओं के बीच इस तरह छोड़कर न जायें। किन्तु हम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गिड़गिड़ाये नहीं थे, अपितु हमने तो अपने प्रचंड पराक्रम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद को गहन सागर में उठा फका था। यदि हमें स्वतन्त्रता देने में ब्रिटिश साम्राज्यवाद इतना ही उदार हो गया था तो फिर उसमें यही सद्भावना और चेतना उस समग्र अफ्रीकी महाद्वीप के प्रति क्यों नहीं जगी, जिस पर वे तब भी अपना कब्जा जमाते रहे और आज भी उन्हीं लोगों को सत्ता में बैठाये हुए हैं, जो अपनी गोरी चमड़ी कोप्रभुका विशेष वरदान मानकर वहां की अश्वेत जनता को अपनी गुलामी की जंजीरें में जकड़े हुए हैं।

ऐतिहासिक तथ्य यही है कि १८५७ से ही जबकि भारत ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध स्वातन्त्र्य संघर्ष का श्री गणेश किया था, हम अपनी मातृभूमि की मुक्ति का संग्राम अविराम चलाते रहे थे। भारतीय स्वतन्त्रता के पुजारियों ने स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए संवैधानिक प्रक्रियाओं का सहारा लिया तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन के माध्यम से भी इस संघर्ष को गतिमान् किया था। भारतीय क्रांतिकारी स्वदेश ही नहीं; अपितु विदेशों में भी स्वतन्त्रता संघर्ष की पताका फहराते रहे थे। उन्होंने सशस्त्र संघर्ष का मार्ग अपनाया था अहिंसा तथा सशस्त्र क्रान्ति पथ पर चलने वाले दोनों ही वर्गों के राष्ट्रभक्तों की साधना अंततः सफलीभूत हुई थी। दो विश्व युद्धों में अपनी जनशक्ति के क्षय और थकान के बाद ब्रिटिश सत्ता ने देखा था कि वह भारतीय सेना (विशेषतः नौ सेना) जो उनका अंतिम सहारा थी, उनके विरुद्ध उठ खड़ी हो गई है। तो उन्हें श्वेत पताका फहराने और रण भूमि से हटने तथा भारत को मुक्त करने पर विवश होना पड़ा था।

यह भी एक वास्तविकता है कि यदि स्वदेश से बाहर सक्रिय रहे क्रान्तिकारी भारतीय नेताओं ने सन् १९४२ में बनी परिस्थितियों का लाभ उठाकर भारत में क्रान्तियज्ञ को अपने सहयोग से गतिमान् न किया होता तो ये अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थतियां भी हमारी स्वतन्त्रता में सहायक सिद्ध नहीं हो सकती थीं। यदि भारत की आजादी के लिए ब्रिटेन विरोधी राष्ट्रों में गठित "आजाद हिन्द फौज" जैसी प्रहारक शक्ति का उदय नहीं होता तो यह अंतर्राष्ट्रीय स्थिति भी हमारे लिए सहायक सिद्ध नहीं हो पाती। यह कहना भी इतिहास के तथ्यों को झुठलाना है कि रक्त की एक बूंद बहाये बिना ही हिन्दु-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्थान ने स्वतन्त्रता का वरदान न पाया। इस प्रकार के विचार कल्पना को उड़ान ही हैं। ऐसा लगता है कि इतिहास को झुठलाकर इस प्रकार का तर्क प्रस्तुत करने वालों का उद्देश्य यह बताना ही है कि ब्रिटिश शासकों ने प्रभु से भय खाकर भारतीय रक्त को बहाने में संकोच किया था। यह तो हो सकता है कि ऐसे विचार व्यक्त करने वाले देशभक्तों ने अपने रक्त की एक बूंद भी न बहाई हो, किन्तु यह ऐतिहासिक तथ्य है कि १८५७ के स्वातन्त्र्य समर में हजारों सैनिकों और भारतीय नागरिकों ने रणभूमि में अपना रक्त ही नहीं, जीवन भी समर्पित किया था। वे इसलिए लड़ते-लड़ते अपनी रक्तांजलियां समर्पित कर चिर विदाई ले गये थे कि अन्य भारत भूमि के मस्तक पर लगा गुलामी का कलंक धो सकें।

सन् १८५७ से शुरू हुआ यह सिलसिला अविराम १९४७ तक चला था। शहीदों ने अपना पावन तप्त रक्त मातृभूमि की दासता के कलंक को धोने के लिए बहाया था। पुणे में चाफेकर बन्धुओं से लेकर लन्दन में ऊधमसिंह और मदनलाल ढींगरा तक ने अपना रक्त स्वदेश को स्वतन्त्र कराने के लिए ही तो बहाया था। स्वतन्त्रता का सर्वप्रथम उद्घोष करने वाले महर्षि दयानन्द के शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर और भाई परमानन्द ने विदेशों में रहकर भी भारतीय स्वतन्त्रता यज्ञ को गतिमान् बनाये रखने के लिए ही तो एक बड़ा काल खंड -अंडमान की घोर यातनाओं को झेलते हुए बिताया था। स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है के उद्घोषक बाल गंगाधर तिलक और ब्रिटिश सत्ता के क्रीतदासों की लाठियों से लहू लुहान होकर अपना जीवन बलिदान करने वाले लाला लाजपतराय और बंग भूमि के उद्भट स्वातन्त्र्य सेनानी विपिनचन्द्रपाल का रक्त भी पानी तो नहीं था। कामागाटा मारू के स्वातन्त्र्य सैनिकों का खून भी तो उतना ही लासानी था, आजाद हिन्द फौज का गठन करने वाले रासबिहारी बोस और उसकी कमान संभालने और ब्रिटिश सत्ता से टकराने वाले सुभाषचन्द्र बोस की रंगों में भी तो गरम रक्त ही प्रवाहित हो रहा था। महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरु तथा सरदार पटेल ने भी तो स्वतन्त्रता के लिए ही जेलयातनाएं झेली थीं। इतना ही नहीं, अपितु ब्रिटिश कर नीति के फलस्वरूप जब विभाजन की त्रासदी भारत भूमि ने झेली, तब भी भारत माता के लाखों पुत्रों और पुत्रियों का रक्त ही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहा था और वह भी इतना कि अनेकों सरिताओं को प्रवाहमान रखने के लिए पर्याप्त था।

इन सब तथ्यों से यही सिद्ध होता है कि यह आजादी हमने कठोर तप-त्याग और बलिदानों से अर्जित की है। भारतीय गण-तन्त्र सहस्रों राष्ट्रभक्तों के बलिदानों का प्रतिदान है। अतएव गण तन्त्र दिवस का हर्ष और उल्लास सहित मनाना जहां हमारा पावन कर्त्तव्य है, वहीं हमें अपने दायित्वों को भी सदैव स्मरण रखना होगा क्योंकि अपने दायित्वों का पालन करके ही हम अपनी स्वतन्त्रता को अक्षुण्ण रख सकेंगे। आज भी देश के लिए बाहरी खतरे और चुनौतियां मौजूद हैं, और देश के भीतर भी डालरों ओर पैट्रो-डालरों के बल पर कुछ राष्ट्रविरोधी शक्तियां अपने षड्यन्त्रों की बारूदी सुरंगें बिछाकर इस स्वतन्त्रता को नष्ट करने के लिए अहर्निश सक्रिय हैं। एतत्व आज का दिवस संकल्प दिवस है और साथ ही ऐसी बाहरी और भीतरी भारतविरोधी शक्तियों के नापाक इरादों को खाक में मिलाने का और "सत्यमेव जयते" के प्रेरक उद्बोधन को अपने जीवन का मूल्य मन्त्र बनाने का संकल्प ग्रहण करने का दिवस भी है।

सत्य ही जीतता है इससे तो किसी को भी इनकार नहीं हो सकता, किन्तु सच्चाई की जाती के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम राम-सासत्संकल्प, वीरव्रती लक्ष्मण जैसा अनुराग और तेज पुंज हनुमान जैसा सेवा भाव तथा योगेश्वर श्रीकृष्ण-सी प्रज्ञा भी अपेक्षित हैं। आइये, इस संकल्प दिवस पर हम संकल्प ग्रहण करें कि राष्ट्र के कण-कण में असंदिग्ध राष्ट्रनिष्ठा के भाव सर सायेंगे।

हिन्दू राष्ट्र को परम वैभव तक पहुंचायेंगे ताकि विश्व से अन्याय और अत्याचार को मिटाने में भारत सबलतम शक्ति के रूप में विश्व के मंच पर उभरे और विश्व शांति की स्थापनार्थ "सर्वे भवन्तु सुखिनः" वैदिक उद्घोष को चरितार्थ करने में अपनी सफल भूमिका निभा सके।

("महात्मा वेदभिक्षुः के शब्दों में भारत राष्ट्र ही विश्व शान्ति की प्रतिश्रुति है। ऐतिहासिक तथ्य है।" शीघ्रति शीघ्र भारत देश उसी गत गौरव को प्राप्त करे। यही हमारी साधना की प्रेरणा शक्ति बने जिसके मूक रूप का दर्शन कर विश्व का विकल मानव समाज शान्ति के सुखद समीर से आनन्दित होकर श्रद्धा सहित उच्चचारे "जगत् गुरु भारत की जय"।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असम चुनाव : सत्यमेव जयते

असम विधान सभा और इस प्रदेश से लोक सभा की चौदह सीटों के लिए हुए निर्वाचनों में असम गण परिषद् को मिली उल्लेखनीय सफलता ने इस तथ्य को उजागर कर दिया है कि संकल्प शक्ति और सत्य सिद्धान्तों की सफलता के मार्ग में बाधाएं, आपदाएं और समस्याएं तो आती हैं, किन्तु अंततोगत्वा हिन्दू संस्कृति का यह उद्घोष, जो भारत का राष्ट्रीय उद्घोष भी है, सत्य सिद्ध होता है कि 'सत्यमेव जयते'।

विदेशियों की समस्या को लेकर छह वर्ष के सतत संघर्ष के उपरान्त असम की राष्ट्रवादी युवा शक्ति की साधना सफल हुई और असम समझौते के रूप में देश के युवा प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने भी विदेशी घुसपैठियों के कारण असम अपनी अस्मिता, एकता और देश की संस्कृति के अस्तित्व के लिए भी इस प्रदेश में उत्पन्न संकट के प्रति वहां की युवा शक्ति की पीड़ा को अनुभव कर समस्या के समाधान का पथ अपनाया। जो कार्य उनकी महिमा मयी मां श्रीमती इंदिरा गांधी नहीं कर पायी थीं वह श्री राजीव गांधी ने अपनी निर्णयक्षमता के बल पर कर दिखाया। उसके पश्चात असम विधान सभा को भंगकर वहां नये चुनाव कराने का निर्णय भी जहां युवा प्रधानमंत्री की लोकतंत्र को गतिमान रखने की प्रबल आकांक्षा का ही प्रमाण बना वहीं असम के राष्ट्रवादी युवकों ने भी उस राज्य में पूर्ण उत्साह किन्तु साथ ही साथ असीम धैर्य और विवेक का परिचय देकर चुनाव समरांगण में पदार्पण किया। उनका एक ही सहारा था सत्यमेव जयते।

स्वयं को राष्ट्रवादी कहने वाले कतिपय तत्वों ने जब असम के चुनावों में अल्पसंख्यक संरक्षण के नाम पर साम्प्रदायिकता के दिये को और अधिक तीव्र बनाने का प्रयास किया तब भी असम गण परिषद के युवकों ने पूर्ण विवेक और समस्याओं से बूझने की अपनी प्रवृत्ति का परिचय दिया और तथाकथित संयुक्त अल्प संख्यक मोर्चे के रूप में खड़े हुए अलगववादी तत्वों सेभी लोहा लिया और उन्होंने अल्पसंख्यक तुष्टीकरण के लिए कुख्यात हुई असम प्रदेश कांग्रेस (इ) और संयुक्त अल्पसंख्यक मोर्चा दोनों से ही टक्कर ली और इन दोनों के चुनाव की समर भूमि में पटखनी देकर विजय विजयश्री प्राप्त की। उन युवकों में राजनीतिक अनुभव की कमी भले हो रही हो किन्तु राष्ट्र रक्षा के लिए लगाये और तड़प की जो पूंजी उनके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पास थी, उसने उनकी राह हमवार की और इस परीक्षा में भी विजय प्राप्त कर उन्होंने विश्व इसी सिद्धान्त को दर्शन किया कि सत्यमेव जयते।

राजनीति के अनेक दिग्गज समीक्षकों ने यह विश्लेषण करने में कोई कोर कसर नहीं रखी कि असम गणपरिषद् को इन चुनावों में स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हो पाएगा। किंतु परिषद् के युवकों का सबसे बड़ा धन था उनका यह आत्म विश्वास कि 'हमारा संघर्ष व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति अथवा पद प्राप्ति के लिए नहीं है, अपितु हम संघर्ष कर रहे हैं, असम को भारत का अविभाज्य अंग बनाए रखने के लिए हैअत:व प्रदेश की जनता का मानस हमें अपनायेगा और हमारी सफलता की राह बनाएगा।' उन्हें विश्वास था कि 'हम सत्ता के लिए नहीं सत्य के लिए संघर्षरत हैं।' हम कुर्सियों के लिए नहीं अपितु प्रदेश में राष्ट्रीय ऊर्जा को बनाए रखने के लिए कार्यरत हैं, अतएव हम विजयी होंगे। पथ के शूल हमारे लिए फूल बनेंगे, कठिनाइयां हमारी कर्मठता की परीक्षा लेंगी, किंतु हम तो योगेश्वर श्रीकृष्ण के उस प्रेरक संदेश के प्रति आस्थावान् हैं कि 'कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन, (कर्म करना ही तुम्हारा अधिकार है, हम फल की चिंता से रहित होकर कार्य करें) और उनकी यह आस्था ही विजयी हुई और इस युवा शक्ति की विजय की कामना को हृदय में बसाए देश भर के राष्ट्रवादी तत्वों की आशा अन्तत: सफल हुई और राष्ट्र के इतिहास में असम के खेत-खलिहानों, कल कारखानों और चाय बागानों ने फिर इसी सत्य को उद्घोषित किया कि "सत्यमेव जयते।"

असम देश की एक सीमा है तो गुजरात दूसरी। उस सीमावर्ती प्रदेश की ऐतिहासिक नगरी गोदरा के सयाजीगंज विधानसभा क्षेत्र मेंभी एक उपचुनाव असम चुनावों के साथ ही संपन्न हुआ है। उस चुनाव क्षेत्र से विजयी हुए हैं भूतपूर्व पुलिस आयुक्त श्री जसपाल सिंह। उन्होंने कांग्रेस (इं) के प्रत्याशी को पराजित किया तो भारतीय जनता पार्टी और जनता पार्टी के संयुक्त प्रत्याशी को भी उनके मुकाबले में जमानत गंवानी पड़ी। श्री सिंह की ख्याति राष्ट्र-विरोधी तत्वों से निपटने के लिए अद्भुत साहस का परिचय देने वाले एक साहसी अधिकारी के रूप में रही है। उन्हें परास्त करने के लिए सत्तापक्ष (कांग्रेस-इं) से लेकर विपक्ष तक ने जोर लगाया। किंतु हिन्दुत्व की भावना जो अब तक सुस्त थी, इस उपचुनाव में अंतत: प्रदीप्त हुई और एक वर्ष में ही जहां वे पहले दो बार चुनाव हारे थे वहाँ इस बार विजयी हुए और इसी सत्य का साक्षात्कार हुआ कि सत्यमेव जयते। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महात्मा वेदभिक्षुः की अमरवाणी

मन : आव्हान : खोज संतान की

मन बहुत चंचल है, निर्बल भी है और बली भी। उसके जीते जीत और हारेहार मिलती है। मन अनुपमेय है। वह अणु से अधिक सशक्त, विद्युत् से अधिक वेगवान् और धरती का निर्माता है। मेरा मन और आपका मन एक दूसरे को बहुत शीघ्र पहचान लेते हैं। इसीलिए तो कहा है, मन चंगा तो कठौती में गंगा।

इसी मन ने मुझे पागल बना दिया है। पता नहीं कहां क्या मिल गया है इसे कि यह जमीन पर नहीं रहता, आसमान की बातें करता है। असंभव को संभव करना चाहता है। युग के साथ चलने को तैयार नहीं, युग को बदलना चाहता है। मुझे इसके कारण ही निरन्तर जागरूक रहना पड़ रहा है।

यह मन मुझे ही नहीं उठा रहा औरों का भी आह्वान कर रहा है। जागरण के गीत गुंजाने के स्वर इसने छेड़ रखे हैं। इसकी शक्ति मुझे मथ रही है। यह सब सड़ा-गला जर्जर मिटा देना चाहता है और करना चाहता है ऐसा निर्माण, जो इसके स्वप्नों के अनुरूप हो।

आह्वान इसका स्वभाव है। कंपन इसका गीत है। प्रस्थान इसकी शक्ति और निरन्तर चिन्तन इसकी अभिव्यक्ति है। प्राणों के स्पंदन सुनने की सामर्थ्य सभी में उत्पन्न करने के लिए यह व्याकुल है। इसकी गति में निरन्तर तीव्रता आती जाती है और अबाध गति से अपने लक्ष्य के लिए इसका आह्वान गूंज रहा है।

इस गूंज में खोज की भावना निहित है। खोज सत्य की, साधना की, जप की, उद्बोधन की और निरन्तर उभरते चरण में जय—वरदान की। शून्य में मोती खोज पाना आसान नहीं। जीवन में वरदान ढालना भी साधारण नहीं। फिर भी खोज सत्य—विजय—जय के साधन की जारी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने मन के भाव पढ़ने में मैं भी तो असमर्थ रहा हूं। मैंने जब भी इसके साथ चलने का यत्न किया, पिछड़ गया हूं। मेरा मन मुझ से बहुत आगे है। उसके सपने बहुत-बहुत ऊंचे हैं। एकता का स्वप्न, मानवता का स्वप्न, प्यार की मादक झंकृतियों का स्वप्न, युद्ध, महानाश और घृणा-द्वेष की समाप्ति का स्वप्न उसने देखा है और मुझे देखने के लिए झकझोरा है।

और अब तो मैं भी अपने मन के प्रभाव से ग्रस्त होकर उसका अनुचर बन गया हूं। मेरा मन मुझ से अधिक पवित्र है। इसलिए मैं उसकी भाषा से प्रभावग्रस्त हो अनेक व्यथाएं पाल चुका हूं। असंभव कुछ भी वह मानता नहीं, झुकना उसे आता नहीं, बस विजय के लिए संघर्ष करना ही उसका स्वभाव है।

यह स्वभाव लक्ष्यसिद्धि के लिए संतान चाहता है। संतान का अर्थ है—धारा—विस्तार—फैलाव, विचार-प्रवाह और एक ऐसा कल्पवृक्ष जिसके द्वारा मेरी चाह पूरी हो सके। लेकिन भाषा में संतान का अर्थ है पुत्र, पुत्री आदि। पर वस्तुतः संतान का अर्थ है वह शक्ति जो मेरे भावों को साकार करे।

संतान नहीं, उत्तराधिकारी नहीं, मेरी कल्पनाओं को मूर्तरूप देने वाले व्यक्ति नहीं, इसलिए मैं घुट रहा हूं, रो रहा हूं। सोचता हूं, इस जीवन से क्या लाभ ? जब सपने ही अधूरे रह जाएं तो क्यों रहे यह देह ?

मेरा आर्तनाद सुनने वाला कोई नहीं, मेरे मन तारों से निकले गीतों के अर्थ समझने वाला कहीं नहीं। अपने मन की बात सुनकर मैं पागल हो गया हूं और चाहता हूं कि कोई मेरी बात सुने, समझे और मेरी संतान बनकर मेरी कल्पना का चित्र धरती को बनाए। भौतिक संगीत प्रबल है। मन का संगीत दुर्बल, ऐसा मैं नहीं मानता हां यह जानता हूं कि मेरे मन-गीत इस धरती पर सुनकर उनके भाव समझने की विद्या लुप्त है, सुप्त है। ज्ञान में अवरोध है, भावना अबोध है। प्राण में अवमानना है और क्रिया निष्क्रिय है।

गंगा की धारा में चांद की चांदनी की किरणें अगर अग्नि प्रज्वलित कर सकतीं तो आप आश्चर्य करेंगे पर मैं प्रसन्न हूंगा। इसलिए कि यही सत्य है, यही धर्म है, यही ज्ञान है।

संतान चाहिए। इसलिए कि मैं स्वप्न पूर्ति यज्ञ में उसकी आहुति दे सकूं। ४०० करोड़ जीवित आत्माएं मानव योनि में विचरण कर रही है। उनमें से एक-दो भी मेरे तन मन की झंकृतियां सुन दौड़कर मेरे पास आ गयीं तो चिरनिद्रा में भी मैं जागरण के गीत गा सकूंगा। प्यार का अभिसार बलिदान का संकल्प मांग रहा है। कौन भिक्षा देगा—प्रतीक्षा कर रहा हूं।

(१२ दिसम्बर १९७६ के साप्ताहिक जन-ज्ञान से उद्धृत)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या इस देश में हिन्दू होना अपराध है ?

—पंडिता राकेशरानी

यह विडम्बना ही है कि इस महान् हिन्दू देश में जो आदिकाल से हिन्दुत्व और हिन्दू संस्कृति का ध्वज वाहक रहा है, जिसका सारा इतिहास और समस्त प्रेरणाएं हिन्दुत्व में निहित हैं और जिसके उत्थान-पतन का इतिहास हिन्दू समाज के उत्थान-पतन का इतिहास है, इसमें आज हिन्दू ही सर्वाधिक अपमानित, पीड़ित और उपेक्षित है। सत्ताधारियों द्वारा वोट के लालच में यह स्थिति उत्पन्न की गई है। इस स्थिति में सामान्य हिन्दू यह सोचने को मजबूर होने लगा है कि क्या इस देश में हिन्दू होना अपराध है ?

मुस्लिम और ईसाई मजहब के मानने वालों का वोटों के लालच में इतना तुष्टीकरण किया गया है कि उनकी गतिविधियां देश की एकता और अखंडता के लिए घातक हो गई हैं। साथ ही इस तुष्टीकरण के कारण उनकी मांगें इस प्रकार पूरी की जा रही हैं कि हिन्दू जीवन मूल्यों को उनसे भारी आघात पहुंच रहा है, और इस देश का गौरवपूर्ण राष्ट्रीय चरित्र नष्ट होता जा रहा है। इतना ही नहीं, इस तुष्टीकरण के कारण देश को २१वीं सदी में ले जाने की योजनाएं साकार होने की बजाय देश १४वीं सदी की ओर लौट रहा है।

विगत कुछ मास पूर्व एक समाचारपत्र में गुप्तचर विभाग की एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी, जिसमें जामा मस्जिद के इमाम अब्दुल्ला बुखारी पर स्पष्ट आरोप लगाया गया था कि अपनी पाकिस्तान यात्रा के दौरान उन्होंने भारत के राष्ट्रीयहितों के विरुद्ध अनेक ऐसी बातें कहीं जो अक्षम्य थीं, लेकिन सरकार ने उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की। हाल ही में मध्यप्रदेश के वनवासी क्षेत्रों में काम कर रहे तीन पादरियों को राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के कारण भारत से निष्कासित कर दिया गया था किन्तु उच्चस्तरीय दवाव के कारण उनका निष्कासन रद्द कर दिया गया। इसी प्रकार सन् १९७८ में श्री ओम्-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
प्रकाश त्यागी द्वारा लाये गये धर्मान्तरण विरोधी विधेयक को भी तुष्टीकरण के कारण ही वापस ले लिया गया था, जबकि यह स्पष्ट है कि वह छल बल और धन के लालच द्वारा धर्मान्तरण पर रोक लगाने के लिए ही लाया गया था।

दुर्भाग्य यह है कि कहने को तो हमारी सरकार धर्मनिरपेक्ष है लेकिन सचाई यह है कि धर्मनिरपेक्षता की आड़ में ईसाई और मुस्लिम मजहब के लोगों को विशेषाधिकार दिये जा रहे हैं। यह विडम्बना एकमात्र भारत में ही है कि बहुसंख्यक राष्ट्रीय समाज उन अधिकारों और सुविधाओं से वंचित है, जो धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यकों को दी जा रही हैं। उदाहरण के लिए वे अपनी विशिष्टता बनाए रखने के लिए अपने स्कूलों में विशेष शिक्षा दे सकते हैं और इसके बावजूद सरकार उन्हें सहायता देती है। तर्क यह है कि अल्पसंख्यकों को अपनी विशिष्टता और पहचान बनाए रखने के लिए सतर्क रहना पड़ता है और सघन प्रयास करने पड़ते हैं, इसलिए उन्हें अपने स्कूलों में विशेष धार्मिक शिक्षा प्रदान करने की छूट दी जाती है। इतना ही नहीं, १९८३ में उनके लिए १० विशेष पालिटेकनिक स्कूल भी खोले गए, जिनमें अन्यधर्मावलम्बियों को प्रवेश की मनाही थी। जब इस पर संसद् में काफी हो-हल्ला हुआ तो शिक्षा मंत्री को कोई विशेष उत्तर नहीं सूझा और उन्होंने यह कहकर पीछा छुड़ा लिया कि अन्य छात्र भी प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं। परन्तु उसका व्यावहारिक परिणाम कुछ नहीं निकला, क्योंकि आवेदन पत्र देने के बाद प्रवेश होना तो संभव नहीं था। जनता शासनकाल में जिस अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की गई। वह भी तुष्टीकरण का एक नमूना ही था। अल्पसंख्यक आयोग के सदस्यों ने स्वयं इसके औचित्य पर प्रश्नचिह्न लगाया था। अल्पसंख्यकों को इस प्रकार की विशेष सुविधाएं देने का परिणाम यह हुआ कि हिन्दू समाज के विभिन्न सम्प्रदायों में भी इन विशेषाधिकारों को प्राप्त करने की होड़ लग गई और उन्होंने स्वयं को अल्पसंख्यक घोषित करवाने के लिए अदालत के दरवाजे खटखटाने शुरू कर दिये। हाल ही में रामकृष्ण मिशन के एक ऐसे ही दावे पर कलकत्ता हाईकोर्ट ने इस संस्था को अल्पसंख्यक होने का प्रमाण-पत्र दे दिया। इस प्रकार अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार प्रदान कर हिन्दू समाज में विघटन की प्रक्रिया को बढ़ावा दिया जा रहा है। क्या यह हिन्दू समाज को विघटित करने का षड्यंत्र नहीं है ?

अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार प्रदान करने तक ही बात सीमित नहीं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्हें हर प्रकार से हिन्दू समाज पर वरीयता देने का षड्यंत्र चल रहा है। भारत के इतिहास में यह पहला अवसर है, जबकि अपनी ही सरकार वोटों के लालच में बहुसंख्यक राष्ट्रीय हिन्दू समाज को उपेक्षित और अपमानित कर रही है। वैसे इसके लिए केवल सत्ताधारी पार्टी ही नहीं बल्कि सभी राजनैतिक दल समान रूप से उत्तरदायी हैं, क्योंकि तुष्टीकरण के लिए सभी में बराबर होड़ रहती है। हिन्दू समाज पर इन दोनों समुदायों को वरीयता देकर पक्षपात करने के अनेक ज्वलंत उदाहरण हैं। उदाहरण के लिए १९८३ में श्रीमती गांधी ने इस्लामिक सेन्टर का उद्घाटन किया और उसे प्रचुर आर्थिक सहायता भी प्रदान की, जबकि हिन्दू संगठनों और संस्थाओं को साम्प्रदायिक घोषित करके कोई सहायता देने से रोक दिया जाता है।

यह कैसा मापदंड है कि इस देश में हिन्दू संस्कृति और हिन्दू जीवन मूल्यों का रक्षा के लिए कार्य करना तो सांप्रदायिक हो जाता है लेकिन मुस्लिम और ईसाई समुदायों के लिए कार्य करना महान् सांस्कृतिक कार्य की श्रेणी में रखा जाता है। इसके विपरीत यदि हिन्दू समाज की उपजातियों के कोई सम्मेलन हों तो वे सांप्रदायिक नहीं रहते। जैसे हिन्दू समाज के जाट, ब्राह्मण, त्यागी, कायस्थ, अग्रवाल आदि वर्गों के सम्मेलन हों तो उनमें हमारे नेता सहर्ष जाते हैं और उनका प्रशस्तिगान करते हैं। इसके पीछे एक मात्र यही उद्देश्य है कि हिन्दू समाज छोटे-छोटे वर्गों में बंटा रहे तो उनके वोट प्राप्त करने में सुविधा रहती है किन्तु संगठित और विशाल हिन्दू समाज की जागृति और विराट स्वरूप से राजनैतिक दलों को डर लगता है। पुराणों में इस के लिए किसी तपस्वी के तप से इन्द्र का सिंहासन हिलने की बात कही गई है वह तप और कुछ नहीं, जन-जागरण ही है और इन्द्र है सत्ता का प्रतीक। सदैव सत्ताधारियों का यही चरित्र रहा है; वे जागरण से डरते हैं। इसलिए विराट् हिन्दू समाज की जागृति और उसका संगठन उन्हें अप्रिय लगता है। पक्षपात के ज्वलंत उदाहरण हमें दीखते रहते हैं। अब आगामी फरवरी में ईसाई धर्म गुरुपोप को भारत की राजकीय यात्रा पर आने का निमंत्रण दिया गया है जबकि यह सर्वविदित है कि पोप नाममात्र के राज्याध्यक्ष है, उनसे भारत को या किसी देश को किसी प्रकार का व्यावसायिक, औद्योगिक, तकनीकी राजनैतिक लाभ नहीं मिलने पाता है। फिर उन्हें राजकीय निमत्रण देकर क्यों बुलाया जा रहा है? इसके पीछे चुनावों के समय ईसाई समुदाय के वोटों को हथियाने का ही इरादा है। राष्ट्रहित के मामलों में भी राजनीति की घुसपैठ करना क्या देशभक्ति का परिचायक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पोप महोदय इस राजकीय यात्रा के कारण सरकारी मशीनरी का भारी सहयोग प्राप्त कर धर्मान्तरण की हवा को बल प्रदान करेंगे। इस अवसर पर भारतीय चर्च ने उनका अभिनन्दन करने के लिए एक लाख हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने का संकल्प किया है। किन्तु दूसरी ओर १९६५ में जब एकमात्र और गौरवशाली हिन्दू राष्ट्र के महाराजा महेन्द्र भारत में कुम्भ के अवसर पर एक हिन्दू समागम की अध्यक्षता करने के लिए आने वाले थे तो उन्हें आने से रोक दिया गया था। यह परस्पर विपरीत उदाहरण स्पष्ट संकेत देता है कि हम पड़ौसी हिन्दू देश के महान् राजा को निमंत्रित नहीं करना चाहते क्योंकि वे हिन्दुओं के निमंत्रण पर और उनका गौरव बढ़ाने के लिए आ रहे थे, किन्तु पोप को आमंत्रित कर रहे हैं, क्योंकि वे ईसाइयों का गौरव बढ़ाकर हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने के लिए आ रहे हैं। ऐसे पीड़क अनुभव बार-बार हमें यही विचार करने को मजबूर करते हैं कि क्या इस देश में हिन्दू होना अपराध है।

इस प्रकार मुसलमानों और ईसाइयों के निर्बाध तुष्टीकरण से उनके हौसले इतने बढ़ गये हैं कि वे सरकार के अस्तित्व को मानने से भी कभी कभी इन्कार कर देते हैं। वे राष्ट्रीय सत्ता और सार्वभौमिकता से ऊपर अपनी धर्मान्धता को प्रमुखता देने लगते हैं।

वैसे इस धर्मान्धता को हवा बहुत पहले ही मिल चुकी थी। उस समय जम्मू-कश्मीर के हजरत बल दरगाह से पवित्र बाल गायब होने पर मुस्लि उग्रवादियों ने अकारण ऐसा उत्पात मचाया था कि सरकार को झुकना पड़ और उनकी खोज के लिए करोड़ों रुपये की धनराशि खर्च की गई। इसी प्रका पिछले दिनों कुरान के सम्बन्ध में कलकत्ता हाइकोर्ट में एक याचिका दाखि होने पर कट्टरपंथी मुल्लाओं ने ऐसा तूफान खड़ा कर दिया था जो हिंस आन्दोलन में बदलने लगा था। उस समय उस जज को फांसी देने की मां की जाने लगी थी। अब पिछले कुछ मास से शाहबानो कांड को लेकर दे व्यापी तूफान मचाया जा रहा है। कैसी विडम्बना है कि एक बूढ़ी ६५ वर्षी मुस्लिम औरत शाहबानो को इस उम्र में तलाक देकर जिसके पति ने वृद्ध वस्था की असहाय हालत में उसे चौराहे पर खड़ा कर दिया हो, सुप्रीम को द्वारा उसे गुजारा भत्ता दिलाये जाने पर कठमुल्लले उसे मुस्लिम पर्सन लॉ में दखल मान रहे हैं। इस बीसवीं शताब्दी में मानवीय न्याय के खिला बोलने के दुस्साहस पर आश्चर्य होता है। इससे भी अधिक आश्चर्य की बा यह है कि हमारे प्रधानमंत्री ने उनके दबाव में आकर संविधान की धा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२५ में संशोधन करने का वायदा कर दिया है, जिस संशोधन के होने पर मुस्लिम महिलाओं के मानवीय अधिकारों की रक्षा के सारे दरवाजे बंद हो जायेंगे। किसी धर्मनिरपेक्ष कल्याणकारी राज्य में धर्म सम्प्रदाय या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होता बल्कि संविधान के अनुसार राज्य का कर्त्तव्य है कि वह उनके मौलिक अधिकारों की समान रूप से रक्षा करे सत्तारूढ दल को यह अधिकार कदापि नहीं है कि वह इस देश की मुस्लिम महिलाओं को एक सीमित कठमुल्ला वर्ग की दया पर छोड़ दे और उनके अधिकारों का अतिक्रमण होने दे। यदि जनमत की ही बात की जाये तो मुस्लिम समाज में भारी संख्या में ऐसा सुधारवादी समूह और बुद्धि जीवी वर्ग है जो सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के पक्ष में है। ऐसे ही सुधारवादी आन्दोलन के प्रणेता सय्यद भाई ने भी प्रधानमंत्री द्वारा मुस्लिम कठमुल्लाओं के दबाव के सम्मुख झुकने पर खेद व्यक्त किया है। यह विडम्बना ही है कि हमारी सरकार राष्ट्रवादी मुस्लिम नेताओं को प्रोत्साहन नहीं देती। न अन्य राजनैतिक दल ही राष्ट्रवादी मुस्लिम विचारकों को प्रोत्साहन देते हैं। शायद उनका विचार है कि ऐसे राष्ट्रवादी विचारकों के पीछे मुस्लिम जनमत नहीं खड़ा है इसलिए वोट राजनीति में इन राष्ट्रवादी तत्त्वों का कोई योगदान नहीं है। परन्तु उन्हें समझना चाहिए कि लोकतंत्र में नेतृत्व स्थापित किया जाता है, स्थापित नेतृत्व के पीछे चलना सदैव स्वस्थ लक्षण नहीं है। यदि देश में कुछ ऐसे समूह पनप रहे हों जिनका चिंतन ही राष्ट्रीय धारा से पृथक् हो तो उनका तुष्टीकरण करना कदापि राष्ट्र के स्वास्थ्य के लिए हितकर सिद्ध नहीं हो सकता किन्तु हमारी सरकार और अन्य राजनैतिक दल ऐसे समूहों का तुष्टीकरण करने के लिए व्यग्र दिखाई देते हैं, जिनके पास संगठित जनशक्ति हो— भले ही उनकी कारगुजरियां कितनी ही विघटनकारी हों।

यह तुष्टीकरण इस सीमा तक बढ़ चुका है कि अब हिन्दुओं के साथ दूसरे दर्जे के नागरिकों जैसा व्यवहार होता दिखाई दे रहा है। उदाहरण के लिए हिन्दू धर्माचार्यों की सामूहिक मांग के बावजूद इस देश के आराध्य श्रीराम के जन्म दिवस की छुट्टी केन्द्र सरकार ने नहीं की लेकिन विदेशी भूमि पर जन्म लेने वाले हजरत मुहम्मद साहब के जन्म दिवस पर छुट्टी कर दी गई। इसी प्रकार दिल्ली वक्फ बोर्ड को लाखों रुपये की सम्पत्ति तो दान में दे दी गई थी जिस पर बाद में हिन्दू संस्थाओं ने अदालत से स्थगन आदेश प्राप्त कर लिया है, लेकिन रामजन्म भूमि का ताला खोलने में हिन्द किचाहट की जा रही है, जबकि यह निर्विवाद है कि वह ऐतिहासिक रामजन्म स्थल

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है और उसे हिन्दुओं को वापस लौटाया ही जाना चाहिए। इस प्रकार स्वतंत्र भारत में हिन्दुओं की भावनाओं और उनके जीवन मूल्यों की कदम-कदम पर अवहेलना हो रही है।

राष्ट्रविरोधी तत्त्व खुले आम सरकार को चुनौती देते हैं, इस देश के हिन्दू समाज का अपमान करते हैं। आखिर क्यों ? इसमें कोई संदेह नहीं कि हिन्दू धर्म और संस्कृति विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है पर अपने ही देश में आज यह इतनी पराई क्यों हैं, अनादृत क्यों है ? केवल इसीलिए कि हिन्दू समाज संगठित नहीं है। इतिहास साक्षी है कि अपने श्रेष्ठतम तत्त्व ज्ञान के बावजूद हम हजारों साल केवल इसीलिए पराधीन रहे, क्योंकि जागृत, संगठित और ऐक्यबद्ध नहीं थे। दुर्भाग्य से आज भी हिन्दू समाज इस सत्य को पहचान नहीं सका। इसीलिए देश में महान तत्त्वदर्शियों, चिन्तकों और सन्यासियों के बावजूद हिन्दू समाज दुरवस्था के गर्त में गिर रहा है।

इस स्थिति के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस भी हिन्दू नेताओं में समाप्त प्राय हो रहा है। वे अन्याय के विरुद्ध दबी जबान में बोलते हैं। स्वर्गीय वेदभिक्षु: जी ने और मैंने इस दिशा में प्रयास किया और अनेक पुस्तकों, प्रचार पत्रकों, पोस्टरों तथा दयानन्द संस्थान के मुखपत्र (जन-ज्ञान) द्वारा हिन्दू जागरण का शंख फूंका तो हम पर चौंतीस मुकद्दमे थोप दिये गये देशद्रोह और विघटन की खुली चर्चा करने वाले इस देश में सम्मानित होते हैं, उन्हें पुरस्कृत किया जाता है और राष्ट्रीयता की बात कहने वाले दंडित किये जाते हैं। हिन्दू होना और हिन्दुत्व की बात कहना इस देश में तब तक अपराध रहेगा जब तक राजनैतिक नेताओं का यह अहसास रहेगा कि हिन्दु समाज असंगठित और विघटित है। इस स्थिति से उबरने का एक ही उपाय है कि हिन्दूमात्र के नाते आप जहां भी हैं, जिस स्थिति में हैं, हिन्दुत्व पर चोट होने की स्थिति में चुप न रहे। आपका आक्रोश केवल कंठ तक ही न रहे बल्कि वह वार्ताओं, में, गोष्ठियों में और समाचारपत्रों में अभिव्यक्त होना चाहिए और हिन्दुत्व के प्रखर योद्धाओं के समर्थन में आपके हाथ उच्च उद्घोष के साथ उठते दिखाई देने चाहिए। □

यह देखकर मन बड़ा खिन्न होता है कि आजादी के ३८ वर्षों बाद भी हम बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के दुष्टचक्र से अपने को मुक्त नहीं कर पाये हैं। ये धनी और साधन सम्पन्न कंपनियां न सिर्फ भारतीय दवा कम्पनियों की प्रगति में बाधक बनी हुई हैं, अपितु अपनी भ्रष्टाचारपूर्ण नीतियों से राष्ट्र के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करती चली आ रही हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्रांतिवीरों की अमर ओजस्वी वाणी

—संकलयिता राधेलाल मित्तल

(१) "भाइयो ! बगावत करो । अब देर नहीं करनी चाहिये । (मंगल पाडे, २९ मार्च १८५७)

(२) "(शिवाजी श्लोक)—केवल बैठे-बैठे शिवाजी की गाथा की आवृत्ति करने से किसी को आजादी नहीं मिल सकती । हमें तो शिवाजी और बाजी-राव की तरह कमर कसकर भयानक कृत्यों में जुट जाना पड़ेगा । दोस्तो ! अब आजादी के निमित्त ढाल-तलवार उठा लेनी पड़ेगी । हमें अब शत्रुओं के सैकड़ों मुंडों को काट डालना पड़ेगा । सुनो, हम राष्ट्रीय युद्ध के मैदान में अपने जीवन का बलिदान कर देंगे और आज उन लोगों के रक्तपात से जो हमारे धर्म को नष्ट कर रहे हैं या आघात पहुंचा रहे हैं, पृथ्वी को रंग देंगे । हम मारकर ही मरेंगे और तुम लोग घर बैठे औरतों की तरह हमारा किस्सा सुनोगे ।

"आर्य भ्राताओं के दिल में उत्साह की लहर पैदा हो और हम लोग विद्रोह का टीका माथे पर लगायें ।" (क्रांतिकारी हुतात्मा चाफेकर बधु, जून १८९७) ।

(३) मैं मानता हूं कि मैंने एक अंग्रेज का रक्त बहाने का प्रयास किया । किन्तु उसका उद्देश्य यही था कि अंग्रेजों ने जिस प्रकार भारतवर्ष के देशभक्त युवकों को फांसी, कालापानी या लम्बी सजायें देने का क्रम जारी कर रखा है, उसके प्रतिकारात्मक विरोध प्रकट करूं । ऐसा करते समय मैंने अपनी आत्मा के अतिरिक्त अन्य किसी व्यक्ति से नहीं पूछा न उसकी राय ली । मैंने जो कुछ किया, कर्त्तव्य के नाते ही किया ।

हिन्दू होने के नाते मेरा विश्वास है कि आत्मा कभी मरती नहीं अतः शरीर गिरने के पूर्व प्रत्येक भारतीय दो अंग्रेजों को समाप्त करता चले तो देश की स्वतन्त्रता एक दिन में प्राप्त की जा सकती है । जब तक भारत स्वतंत्र न हो जाये, श्रीकृष्ण का देशवासियों के लिए यही कर्म संदेश है ।

मेरी अंतिम कामना है कि मैं फिर से भारत की ही गोद में जन्म लूं तथा पुनः देश को स्वतंत्र कराने के कार्य में संलग्न हो जाऊं । मैं चाहूंगी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि मेरी पुनः मृत्यु होने तक मेरा प्रिय देश स्वतन्त्र हो जाये। भारत स्वतन्त्र होने तक मैं इसी ध्येय के लिए बार-बार जन्म लूं और मृत्यु वरण करूं। प्रभु मेरी यह प्रार्थना स्वीकार करें। मेरी यही कामना है वन्दे मातरम्।...."

मदनलाल ढींगरा '१७ अगस्त १९०९' पेन्टन विले कारागार, लन्दन

(४) 'तुम रोती हो तो रोओ, किन्तु इस रोने से क्या मिलेगा? दुःख तो मुझे भी है। मैंने किस बात का बीड़ा उठाया था और उसे कितना पूरा कर पाया। मर तो मैं रहा हूं, पर जिस कारण मैं मर रहा हूं, वह पूरा कहां हुआ। मैं यह देखकर मर रहा हूं कि मैंने जो कुछ भी किया वह छिन्न-भिन्न हो गया। मुझे दुःख है कि मैं माता पर अत्याचार करने वालों से बदला नहीं ले सका। जो मन की बात थी वह मन में ही रह गयी। मेरा यह शरीर नष्ट हो जायेगा, किन्तु मैं मोक्ष नहीं चाहता। मैं तो चाहता हूं कि बार-बार इसी भूमि में जन्म लूं और बार-बार इसी के लिए मरूं। ऐसा तब तक करता रहूं, जब तक देश पराधीनता के पाश से मुक्त हो जाये ....।"

(महान् क्रांतिकारी पं० गेंदालाल दीक्षित का मृत्यु पूर्व पत्नी को संदेश, २१ दिसम्बर, १९२०)।

'है देश को स्वाधीन करना जन्म मम संसार में,
तत्पर रहूंगा मैं सदा अंग्रेज दल संहार में।
अन्याय का बदला चुकाना मुख्य मेरा धर्म है;
मद-दलन अत्याचारियों का यह प्रथम शुचिकर्म है।
मेरी अनेकों भावनायें उठ रही हृद्धाम में,
बस शांत केवल कर सकूंगा मैं उन्हें संग्राम में।
स्वाधीनता का मूल्य बढ़कर है सभी संसार से,
बदला चुकेगा हरणकर्त्ता के रुधिर की धार से।
अंग्रेज रुधिर प्रवाह में निज पितृगण तर्पण करूं।
हो तुष्ट दुःशासन रुधिर के स्नान से यह द्रौपदी,
हो सहस्रबाहु विनाश से यह रेणुका सुख में पड़ी।
है कठिन अत्याचार का ऋण ब्रिटिश ने हमको दिया,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सह ब्याज उसके उऋण का हमने कठिन प्रण है किया।
मैं अमर हूं मेरा कभी भी नाश हो सकता नहीं,
है देह नश्वर 'त्राण इसका हो नहीं सकता कहीं।
होते हमारे मातृ जग में, पद-दलित होगी नहीं,
रहते करोड़ों पुत्र के जननी दुखित होगी नहीं।
उद्धार हो जब देश का इस क्लेश से तलवार से।
भयभीत होंगे नहीं हम जेल—कारागार से।
रहते हुए तन प्राण रण से मुख न मोड़ेंगे कभी,
कर शर्वित है जब तक न अपने शस्त्र छोड़ेंगे कभी।
परतंत्र होकर स्वर्ग के भी वास की इच्छा नहीं,
स्वाधीन होकर नरक में रहना भला उससे कहीं।
है स्वर्ण पिंजर वास अति दुख पूर्ण सुन्दर कीर को,
वह चाहता स्वच्छंद वितरक अति विपिन गंभीर को चाण।
जंजीर की झनकार में शुभ गीत गाते जाएंगे,
तलवार के आघात में निज जय मनाते जायेंगे।
हे ईश! भारतवर्ष में शत-बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।

(महान् क्रांतिकारी पं० गेंदालाल दीक्षित, अध्यापक व उनके साथियों की प्रतिज्ञा के स्वर,)

(५) दिनांक १९ दिसम्बर १९२७ को जो कुछ होने वाला है उसके लिए मैं अच्छी तरह तैयार हूं। यह है ही क्या? शरीर का बदलना मात्र है। मुझे विश्वास है कि मेरी आत्मा मातृभूमि तथा उसकी दीन संतति के लिए नये उत्साह और ओज के साथ काम करने के लिए शीघ्र ही फिर लौट आयेगी।

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी।

(काकोरी कांड के नायक पं० रामप्रसाद विस्मिल का फांसी के दिन १९ दिसम्बर, १९२७ के पूर्व एक मित्र को लिखा पत्र)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(६) मैंने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के नालदार जूतों के नीचे अपने देश-वासियों को रौंदे जाते देखा है। इस प्रकार अपना प्रतिवाद प्रस्तुत करते हुए मुझे कोई दुःख नहीं है। मुझे इस बात में इंच भर भी शंका नहीं है कि मुझे आप फांसी दे देंगे या और सजा देंगे। मृत्यु का भय मुझमें नहीं रह गया। बुढ़ापे तक लड़खड़ाते हुए जीने का कोई अर्थ नहीं होता। देश के लिए जवानी में मर जाना कहीं अधिक अच्छा है। ('महाक्रांतिकारी सरदार ऊधमसिंह का लन्दन के न्यायालय में बयान, बलिदान (फांसी) [३१-७-१९४०]।

(७) 'कल मैंने सुना कि प्रिवी कौंसिल ने मेरी अपील अस्वीकार कर दी। आप लोगों ने हम लोगों की प्राण रक्षा के लिए बहुत-कुछ किया, कुछ उठा नहीं रखा पर मालूम होता है कि देश की बलिवेदी को हमारे रक्त की आवश्यकता है। मृत्यु क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के अतिरिक्त और कुछ नहीं। इसलिए मनुष्य मृत्यु से दुःख और भय क्यों माने? वह तो नितान्त स्वाभाविक अवस्था है। उतनी ही स्वाभाविक जितना प्रभात कालीन सूर्योदय। यदि यह सच है कि इतिहास पलटा खाया करता है तो मैं समझता हूं कि हमारी बलिदान व्यर्थ नहीं जायेगा। सबको मेरा अंतिम नमस्कार।

[क्रांति के दीवाने राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी का बलिदान (फांसी) १७-१२-१९२७ के तीन दिन पूर्व लिखा पत्र]। □

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद के निधन पर शोक

सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता एवं स्वाधीनता सेनानी, पंजाब के भू०पू० मंत्री आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद के निधन पर दयानन्द संस्थान (वेद मन्दिर) में शोक सभा सम्पन्न हुई, जिसमें उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। उनके निधन को आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति बताते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवगत आत्मा को चिरशांति एवं सद्गति प्रदान करे तथा उनके शोकसंतप्त परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति, धैर्य एवं सांत्वना प्रदान करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वास्तविक हिन्दू राज्यव्यवस्था में क्या होगा ?

—विश्वम्भरसहाय विनोद

श्री नित्यनारायण बनर्जी सन् १९४२ तक कांग्रेस में रहे। बाद में वे डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में हिन्दू महासभा में आ गये। उन्होंने हिन्दू धर्म तथा हिन्दू राजनीति का गहन अध्ययन किया है और 'हिन्दू पालिटी पाजिटिव एंड परवर्टिड' नामक एक ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखा है। इसे पढ़कर जो विचार मेरे मन में उठे वे मैं प्रस्तुत कर रहा हूं।

आज जितने भी धर्मों व सम्प्रदायों के लोग इस देश में बसते हैं, सभी की अपनी-अपनी राजनीति है। अपनी राजनैतिक पार्टियां हैं, मुसलमानों की मुस्लिम लीग, सिखों का अकाली दल, ईसाइयों की क्रिश्चियन डैमोक्रैटिक पार्टी। यदि किसी समुदाय की कोई राजनीति नहीं तो वह है हिन्दू समाज।

देश में ऐसा वातावरण बना दिया गया है कि हिन्दू ही इस देश में साम्प्रदायिक है। वह यदि अपनी राजनीति की बात करता है तो उसे फिरकापरस्त कह दिया जाता है। जो फिरकापरस्त हैं उनसे मंत्रिमंडल बनाने के लिए गठबंधन किए जाते हैं।

हिन्दू जीवन का मुख्य उद्देश्य था आध्यात्मिक विकास, जो ऋषियों ने वर्षों की तपस्या व साधना से निर्धारित किया था। वैदिक (हिन्दू) राजनीति का आधार था धर्म, न कि आज का सैक्युलरवाद। हिन्दू राजनीति के ऊंचे आदर्श रहे हैं।

छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है कि राजा अश्वपति कहता है कि मेरे राज्य में कोई शराबी नहीं, ऐसा कोई नहीं जो यज्ञ न करता हो, कोई अपढ़ या व्यभिचारी नहीं, तो फिर वेश्याएं ही क्यों होंगी ?

शताब्दियों तक भारत में समाज का यह स्तर चला। ईसा के ४०० वर्ष पूर्व मैगस्थनीज, पांचवीं सदी में फाह्यान, सातवीं सदी में ह्यूसांग इस देश में आये और उन्होंने भारत की प्रशंसा की। वैदिक (हिन्दू) राजनीति इतने लम्बे काल तक इसीलिए चल सकी कि उसका आधार धर्म व लोकतंत्र था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू उदार रहा है, हिन्दू में विचार स्वतंत्रता रही है, वह किसी एक किताब को लेकर नहीं चला। जहां भी अच्छा मिला, हिन्दू ने उसे अपनाया।

अंग्रेजी शासन में हिन्दू समाज को भारी क्षति उठानी पड़ी, अंग्रेजी साम्राज्यवादियों का ध्येय था भारत को ईसाई देश बनाना।

लार्ड मैकाले ने १८३५ में अपने पिता को एक पत्र लिखा कि जो हिन्दू अंग्रेजी पढ़ लेते हैं, वे शकल-सूरत में ही भारतीय रहते हैं, शेष वे ईसाई बन जाते हैं। वे अपने देश की संस्कृति से घृणा करने लगते हैं, अपनी भाषा से घृणा करने लगते हैं। उनमें धर्म परिवर्तन का प्रचार किये बिना वे स्वयं ही ईसाई हो जायेंगे। वैदिक (हिन्दू) धर्म की जड़ें इतनी गहरी थीं कि गोरे पादरी उन्हें न उखाड़ सके। अंग्रेजी शिक्षा ने जरूर हिन्दू को विचारों में अहिन्दू बना दिया।

परन्तु स्वामी दयानंद, राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द व अन्य धार्मिक नेताओं के उपदेशों ने सनातन धर्म को जीवित रखा।

श्री नित्यनारायण बनर्जी द्वारा लिखित 'हिन्दू पॉलिटी' में हिन्दुओं की राजनीति पर काफी प्रकाश डाला गया है। देश के प्रशासन में हिन्दूपन की कोई छाप नहीं। ऐसा किसी अन्य देश में नहीं है कि बहुसंख्यक समाज की झलक शासन में न हो।

मार्क्स का समाजवाद सिर्फ यह कहता है कि आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा व मकान ही हैं। वैदिक (हिन्दू) समाजवाद मानता है कि ये आवश्यकताएं तो पशु की भी हैं। मनुष्य पशु से भिन्न है। पशु में ज्ञान नहीं होता। रोटी के अलावा भी मनुष्य की आवश्यकतायें हैं—धर्म, संस्कृति, परम्परायें, ज्ञान इत्यादि। □

अनमोल वचन

(१) मेरे दाहिने हाथ में कर्म है, वाएं हाथ में जय है।

—अथर्ववेद

(२) प्राणी कर्म का त्याग नहीं कर सकता, कर्मफल का त्याग ही त्याग है।

—गीता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रो. धर्मवीर आर्यसमाज की युवा पीढ़ी का वह लब्ध प्रतिष्ठित नाम है, जिस पर वैदिक वाङ्मय के अध्ययन और शोध की महती परंपरा को आगे बढ़ाने का विश्वास किया जा सकता है, दयानन्द संस्थान और अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के मंत्री प्रो. धर्मवीर को हाल में ही परोपकारिणी सभा के चुने ट्रस्टे गये हैं ? संप्रति वे दयानन्द महाविद्यालय अजमेर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष के नाते देववाणी संस्कृत के अध्यापन में कार्यरत हैं।

प्रो. धर्मवीर

श्री गजानन्द आर्य

आप प्रसिद्ध दानवीर उद्योगपति स्वर्गीय श्रीलालमन आर्य के सुपुत्र हैं आर्य समाज के कार्योंमें इनका सदैव सहयोग रहता है। इकनामिक ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन के संचालक हैं। दयानन्द संस्थान और हिन्दू रक्षा समिति के कार्यों में आपका सहयोग संदैव प्राप्त आप भी परोपकारणी सभा के ट्रस्ट्री चुने गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

असम के चुनाव से राष्ट्रीय नेतृत्व सबक सीखे

(अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की अध्यक्ष पंडिता राकेश रानी द्वारा २४ दिसम्बर को नई दिल्ली में दिया गया वक्तव्य)

असम में छात्र आन्दोलन के सत्तारूढ़ होने से जो संकेत स्पष्ट हुए हैं यदि भारत के राजनीतिक दल उनसे सबक लें तो देश को उज्ज्वल भविष्य निर्माण में वे काफी योगदान दे सकते हैं।

पहला संकेत यह कि सुदूर असम तक इस देश की जनता राष्ट्र को सुरक्षा और उज्ज्वल भविष्य के लिए हर बलिदान देने को तत्पर है आवश्यकता है एक जूझारू, समर्पित और ईमानदारी नेतृत्व की असम के छात्र संगठनों से इन्हीं गुणों से युक्त होकर असम की जनता का आह्वान किया तो असम जनता ने अनेक संकट झेलकर आन्दोलन कारियों का साथ दिया और वह साथ इस हद तक दिया कि इन तरुण छात्रों के कंधों पर असम का भविष्य ही सौंप दिया।

दूसरा संकेत यह कि देश के यौवन में कर्म की अथाह ऊर्जा है, जो दिग्भ्रमित, उदासीन या अकर्मण्य कहने की बजाय यदि राष्ट्रीय नेता अपने क्षुद्र सत्ता स्वार्थों से ऊपर उठकर व्यापक राष्ट्रीय हितों के लिए साथ लेकर चलें तो वे तूफान बनकर भ्रष्ट राजनीति के घरौंदों को धूल में मिला सकते हैं। जरूरत केवल इस बात की है कि राष्ट्रीय नेता अपने अहम् से ऊपर उठकर एक हो और छात्रवर्ग को उद्देश्यपरक दिशा में जुटाएं।

और तीसरा संकेत यह कि यदि अनुभवहीन छात्र केवल राष्ट्रभक्ति से प्रेरित होकर सारे असम प्रदेश की जनता को अपने साथ ले आ सकते हैं और असमी जनता सत्ता द्वारा उनका अभिषेक कर सकती है तो राष्ट्रीय नेता इकट्ठे होकर पृथक्तावादी शक्तियों और अराजक तत्वों के खेल को समाप्त करने में भी सफल हो सकते हैं।

उन्हें चाहिए कि वे अपने छोटे-छोटे दलों के बड़े नेता होने के अहंम को छोड़कर राष्ट्रहित में साझा मंच बनायें, अन्यथा छोटी पार्टियों के बड़े नेता बने रहने से उनके झूठे अहं की तुष्टि के सिवा कोई सार्थक परिणाम नहीं निकलेगा।

छात्र शक्ति के नेतृत्व में असम में एक अभिनव क्रांन्ति हुई है। राष्ट्रीय नेता इसे एक प्रेरक पयोग के रूप में स्वीकार करें तो देश अंधेरी खाई की ओर बढ़ने से रुक सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांग्रेस की मौलिक भूलें

—स्वर्गीय इन्द्र विद्यावाचस्पति

यह लेख अब से ३८ वर्ष पूर्व लिखा गया था। माननीय पण्डित इन्द्र जी ने स्वयं कांग्रेसी होते हुए भी जो विश्लेषण किया है, वह आज भी उतना ही सत्य है। परन्तु देश के कर्णधारों ने तब ध्यान नहीं दिया, न शासन की नीति बदली कार्य प्रणाली। आज जब पुन: देश के खण्डित होनेकी चुनौती उपस्थित है, तब हम देशवासियों को चेतावनी के रूपमें यह लेख यहां दे रहे हैं।

कांग्रेस की कार्य समिति ने अपने २४ सितम्बर (सन् १९४७) के अधिवेशन में, वर्तमान परिस्थिति के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव स्वीकार किया है, उसमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनके सम्बन्ध में कुछ निवेदन करना अत्यन्त आवश्यक है निवेदन करने से पूर्व मैं दो बातें स्पष्ट कर देना चाहता हूं। पहली यह कि मैं गत २८ वर्ष से कांग्रेस का सदस्य रहा हूं। इन वर्षों में मैं कांग्रेस का सदस्य इसलिए रहा हूं कि मैं उसके ध्येय से सहमत था मैं पत्रकार भी हूं और पत्रकार का काम, घटनाओं पर ईमानदारी और निर्भयता से सम्मति प्रकाशित करना है। कांग्रेस का सदस्य होने और कांग्रेस की कार्य समिति की नीति की समालोचना करने में कोई विरोध नहीं है। इस लेख में भी मैं कांग्रेस की कार्य समिति के प्रस्ताव के कुछ अंश का जो विरोध करूंगा, वह अपने पत्रकारिता के कर्त्तव्य और अधिकार के अनुसार करूंगा।

दूसरी बात मैं यह कह देना चाहता हूं कि मेरी समालोचनाओं का उद्देश्य कांग्रेस की कार्य समिति तथा कांग्रेस सरकार तक देश का असली लोकमत पहुंचा कर उन्हें सचेत करना है। इस समय देश का शासन कांग्रेस के हाथ में है। अधिकार बांटना भी, कांग्रेस के हाई कमान के हाथ में है। प्रतीत होता है कि हाई कमान तक जनता का असली भाव नहीं पहुंचा। इसका एक कारण यह भी है कि जो लोग अब तक जनता का प्रतिनिधित्व

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर रहे हैं, उनमें से बहुत से अधिकारियों की ठकुरसुहाती करके असली दशा पर परदा डालने की चेष्टा कर देते हैं। ऐसी दशा में, जिस जनता ने कांग्रेस की हाई कमान को बनाया है, उसके हृदय की बात कांग्रेस के नेता तक पहुंचाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि नेता लोग जनता के हार्दिक भावों से अपरिचित रहें तो देश का अकल्याण होने की सम्भावना है।

प्रस्ताव का दूसरा पैरा निम्नलिखित शब्दों से आरम्भ होता है --'यद्यपि कांग्रेस ने देश के विभाजन को मान लिया था, पर उसने मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को कभी स्वीकार नहीं किया था। भारत का बंटवारा हो जाने के बावजूद दोनों उपनिवेशों के विस्तृत इलाकों में लूट-पाट, आगजनी और निर्दोष व्यक्तियों की बड़े पैमाने पर हत्याएं हुई हैं।"

इन वाक्यों का एक साधारण देशवासी के मन पर जो असर होता है,

कांग्रेस एक संस्था या राजनीतिक दल है। देश उससे बहुत बड़ा है। कांग्रेस या देश एक नहीं हो सकते। कांग्रेस साधन है, देश साध्य है। कांग्रेस के सदस्य चाहें तो कांग्रेस का कोई भी रूप बना सकते हैं। परन्तु देश का रूप वही मानना पड़ेगा, जो वह वस्तुतः है।......इस देश के सिवाय और कोई देश नहीं जहाँ हिन्दू स्वतंत्र रूप से सिर ऊंचा करके चल सकें। इसलिए यहाँ गैर-हिन्दुओं की वह स्थिति हो सकती है जो अन्य देशों में हिन्दुओं की होती है। यदि हिन्दू यहाँ भी 'पराया' बना रहा, तो 'अपना' कहीं नहीं होगा।

वह निम्नलिखित हैं: कांग्रेस का कहना है कि उसने मुस्लिम लीग द्वारा प्रतिपादित दो राष्ट्रों के सिद्धान्त को कभी स्वीकार नहीं किया। यदि यह ठीक है तो समझ में नहीं आता कि कांग्रेस ने देश विभाजन को क्यों मान लिया? विभाजन के पक्ष में तो युक्ति ही एक थी कि देश में एक नहीं दो राष्ट्र हैं। जब उस युक्ति को कांग्रेस ने कभी स्वीकार नहीं किया था तो उसने उस युक्ति पर आश्रित बंटवारे को क्यों स्वीकार किया? यह युक्तिविरुद्ध और बुद्धि विरुद्ध काम करने का अधिकार कांग्रेस को किसने दिया था? भारत की जनता ने तो दिया नहीं, क्योंकि देशवासियों का बहुत भारी लोकमत

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभाजन के विरुद्ध था और अब भी है। कौन नहीं जानता कि विधान सभाओं के गत चुनाव में कांग्रेस को कभी ऐसी भारी सफलता न मिलती, यदि पं० जवाहर लाल जी और सरदार पटेल जैसे प्रमुख नेता देशवासियों को यह विश्वास न दिलाते कि कांग्रेस विभाजन के विरुद्ध है। देश ने कांग्रेस के पक्ष में यह समझ कर राय दी कि वह देश के टुकड़े नहीं होने देगी।

पहली भूल

कांग्रेस के हाई कमान ने लोकमत के विरुद्ध बंटवारे को स्वीकार कर लिया है, यह बहुत बड़ी भूल हुई। कांग्रेस के नेताओं ने शायद यह समझा था कि विभाजन को स्वीकार कर लेने से मुस्लिम लीग सन्तुष्ट हो जाएगी और पाकिस्तान के अतिरिक्त सारे भारत वर्ष को शान्ति का जीवन व्यतीत करने देगी। गत अनेक सदियों के अनुभवों को ताक पर रख कर कांग्रेस के नेताओं ने ऐसी आशा बांध ली। इसे साधारण भूल नहीं कह सकते। यह एक ऐसा अपराध हो गया, जिसका फल आज राष्ट्र भोग रहा है।

प्रस्ताव के इसी भाग में कहा गया है कि "भारत का बंटवारा हो जाने के बावजूद दोनों उपनिवेशों के विस्तृत इलाकों में लटपाट, आगजनी और निर्दोष व्यक्तियों की बड़े पैमाने पर हत्याएं हुई हैं।" इस वाक्य में मुझे केवल एक शब्द पर आपत्ति है। जहां "बावजूद" शब्द है वहां के कारण यह होना चाहिए। आज जो हत्याकाण्ड हो रहे हैं वे 'बटवारे के बावजूद' नहीं, अपितु 'बंटवारे के कारण' हो रहे हैं। यह कांग्रेस के नेताओं की भूल थी कि उन्होंने क्षण भर के लिए भी विभाजन से किसी भले परिणाम की आशा रखी थी। बहुत से देशवासी बराबर चेतावनी देते रहे हैं कि बंटवारा एक विष है, वह अमृत नहीं बन सकेगा। परन्तु नेताओं ने उनकी चेतावनी की ओर ध्यान नहीं दिया और अपनी लोकप्रियता के भरोसे पर देश के विभाजन रूपी पाप के भागीदार बन गए। आज देश की जो दशा है वह विभाजन का फल है। इस दृष्टि से कांग्रेस के वर्तमान कर्णधार वर्तमान परिस्थिति के लिए उत्तरदाता हैं।

शायद यह प्रश्न किया जाय कि इस समय पुरानी बातों की चर्चा से क्या लाभ ? विभाजन की बात इतनी पुरानी नहीं हुई कि उसकी चर्चा छोड़ी जा सके। यदि ऐसा हो सकता तो कांग्रेस की कार्यसमिति अपने प्रस्ताव में उसकी चर्चा न करती। जब चर्चा की है तो कार्यसमिति के सदस्यों को यह बतला देना आवश्यक है। वह समझती है कि कांग्रेस ने विभाजन को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वीकार करके देश का बहुत अनिष्ट किया है। इस समय देश की जो दुर्दशा हो रही है उसका उपाय करते हुए कांग्रेस सदस्यों को इस भावना से चलना चाहिए कि उससे जो भूल हुई है उसका प्रतिविधान करने से ही देश की दशा शीघ्र सुधर सकेगी। उसे लोकमत की उपेक्षा करके नहीं चलना चाहिए। लोकप्रियता बहुत अस्थायी वस्तु है। वह पानी के बुलबुले से भी चंचल है। लोक के नेताओं को जनता की भावनाओं का सदा ध्यान रखना चाहिए अन्यथा उनकी उपयोगिता शीघ्र नष्ट हो जायगी।

एक बार लोकमत की उपेक्षा का फल देश भोग रहा है। राष्ट्र के नेताओं को ध्यान रखना चाहिए कि दूसरी बार वैसा न हो।

दूसरी भूल

दूसरी भूल पहली भूल से भी अधिक भयंकर है, क्योंकि यदि यह जारी रही तो इसके बुरे परिणाम बहुत व्यापक और चिरस्थायी हो सकते हैं।

कांग्रेस कार्यसमिति के उसी प्रस्ताव में आगे चलकर कहा गया है 'वर्तमान उपद्रवों ने कांग्रेस के राष्ट्रीय रूप में कोई परिवर्तन नहीं किया। हिन्द देश अनेक सम्प्रदायों और अनेक जातियों का देश है और वैसा ही रहना चाहिए।'

कार्यसमिति के प्रस्ताव के इन वाक्यों में बहुत बड़े-बड़े एक से अधिक हेत्वाभास हैं। दोनों वाक्य वस्तुतः बेजोड़ हैं, यद्यपि ऊपर से देखने में वे परस्पर सम्बद्ध दिखाई देते हैं। पहले वाक्य में यह कहा गया है कि कांग्रेस पहले की भांति एक राष्ट्रीय संस्था है और दूसरे में यह प्रतिपादन किया गया है कि हिन्द अनेक सम्प्रदायों और जातियों का देश है। कांग्रेस सभा या संस्था है, जो अपने रूप का स्वयं निर्णय कर सकती है परन्तु हिन्द देश उससे बहुत बड़ा है। कांग्रेस और देश को एक नहीं माना जा सकता। कांग्रेस साधन है, देश साध्य है। कांग्रेस के सदस्य चाहें तो कांग्रेस का कोई भी रूप बना सकते हैं। परन्तु देश का रूप तो वही मानना पड़ेगा जो वस्तुतः है। वह कोई काल्पनिक चीज नहीं है। कार्यसमिति का प्रस्ताव इस रूप में होना चाहिए था, कि कांग्रेस चाहती है कि हिन्द देश रहे। "है" और "रहेगा" इन शब्दों का प्रयोग सर्वथा निराधार और असम्बद्ध है।

अब मैं कार्य समिति की इस स्थापना पर विचार करूंगा, कि हिन्ददेश अनेक सम्प्रदायों और जातियों का है, और वैसा ही रहना चाहिए। विभाजन से पूर्व कांग्रेस का दावा था कि हिन्द में एक राष्ट्र है, और एक ही रहना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए। मुस्लिम लीग इस दावे को स्वीकार नहीं करती थी। उसका कहना था कि हिन्द में एक नहीं दो राष्ट्रों का निवास है। यह विवाद कई वर्षों से चल रहा था। जब भारत के स्वतन्त्र होने का समय आया, तब व्यावहारिक रूप से मुस्लिम लीग के दावे को स्वीकार किया गया और कांग्रेस के दावे को अस्वीकार। इस अस्वीकृति पर कांग्रेस स्वयं भी रजामंद हो गई। देश दो राष्ट्रों में बांट दिया गया। पाकिस्तान मुसलमानों को दिया गया और हिन्दुस्तान हिन्दुओं को। वास्तविक स्थिति तो यही है। बाकी रही मन समझाने की बात, उसे आप चाहें तो सहस्रों रूप दे सकते हैं।

यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि बंटवारे में हिन्दुस्तान हिन्दुओं के हिस्से में आया इस स्थापना का क्या अभिप्राय है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि हिन्द देश में केवल हिन्दू रहें। सब लोग रहेंगे परन्तु मुख्य रूप से देश हिन्दू का रहेगा। हिन्दू घर के व्यक्तियों की हैसियत से रहेंगे और अन्य लोग उनके साथी बनकर। देश की नागरिकता रहेगी जो भारत के लिए वफादार होकर भारत में रहना चाहे, वह भारतवासी बन सकेगा। परन्तु इससे यह सचाई नहीं दब सकेगी कि हिन्द देश हिन्दुओं का है—बंटवारे का यही अभिप्राय है।

महात्मा गांधी अपने भाषणों में बार-बार दुहराते हैं कि हिन्दुस्तान हिन्दू का भी है, मुसलमान का भी है और सभी का है। यदि इसका यह अभिप्राय है कि इस देश में अनेक सम्प्रदाय निवास करते हैं तब तो यह सर्वथा सत्य है। परन्तु यदि इसका यह अभिप्राय है कि सब सम्प्रदायों के लोग हिन्द के लिए समान रूप से वफादार हैं, तो यह सर्वथा निराधार कथन है महात्मा जी को मानना पड़ा है कि भारत वर्ष को जो स्वाधीनता मिली है, वह मुख्य रूप से हिन्दुओं के परिश्रम और बलिदान का फल है। यदि यह बात सत्य है तो समझ में नहीं आता कि हिन्दुओं को अपने प्रयत्नों का फल भोगने से वंचित क्यों रखा जाय? सदियों के पीछे यह अवसर आया है कि हिन्दू अपने को संसार की अन्य जातियों के समान अनुभव करें और पृथ्वी पर सिर ऊंचा करके चल सकें। ईसाई और मुसलमान इस पृथ्वी के अनेक प्रदेशों पर अपना स्वतन्त्र सिर ऊंचा करके चल सकते हैं। हिन्दुओं के लिए केवल यही एक देश है जिसमें १५ अगस्त के पश्चात् उनका सिर ऊंचा हो सकता है। यह देख कर बड़ा दुःख होता है कि हमारे राष्ट्र के कई नेता भरसक यत्न कर रहे हैं कि वह सिर ऊंचा उठने न पाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि विभाजन ने देश की राजनैतिक प स्थिति को बहुत बदल दिया है। जिन विचारों और कार्यनीतियों के आध पर राजनैतिक आन्दोलन किया जाता था, उनके आधार पर शासन न किया जा सकता। आन्दोलन के समय आप दिन को रात और रात को दि कह कर भी काम चला सकते हैं, परन्तु शासन में तो जो चीज जैसी है वैसे ही देखना पड़ेगा।

पूछा जा सकता है कि यदि हिन्द देश हिन्दुओं का मान लिया जाए क्या यहां अन्य सम्प्रदायों के लोगों को रहने का अधिकार नहीं होगा। इस उत्तर है कि अवश्य होगा। परन्तु वैसा ही जैसा एक घर में अभ्यागतों होता है, जैसे इंगलैण्ड में मुसलमानों का, टर्की में ईसाइयों का अथ जापान में हिन्दुओं का है। जो प्रथा अन्य राष्ट्रों में प्रचलित है, वही भारत भी चलनी चाहिए। यहां कोई तीन लोक से न्यारी नगरी नही बस सकती हिन्दू समाज की प्रथा है कि उनके घर के आदमी की अपेक्षा मेहमानों आवभगत और सेवा अधिक की जाती है। अतिथि का स्थान घर के व्यक्ति से कुछ ऊंचा ही समझा जाता है। हिन्द में भी अन्य सम्प्रदायों की यही प स्थिति रहेगी।

बंटवारे के कारण बने हुए भारतवर्ष की जो वास्तविक परिस्थिति उसे न देख कर केवल काल्पनिक परिस्थिति के आधार पर शासन नी बनाने से भारत सरकार को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़े उनका अभी प्रारम्भ मात्र हुआ है। आवश्यक है कि कांग्रेस के कर्णध शीघ्र ही अपने दृष्टिकोण को वस्तुस्थिति के अनुसार बदल डालें, अन्यथा द बिगड़ती ही जाएगी। □

दो मुस्लिम युवक हिन्दू धर्म में दीक्षित

कानपुर। आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में दो मुस्लिम युवकों उनकी प्रार्थना पर हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। उनके नाम मुहम इस्लाम से महेन्द्र आर्य व लालमियां से लालसिंह यादव रखे गये।

शुद्धि समारोह पर आयोजित सभा में ३० वर्षीय इन युवकों ने बता कि वे सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन के पश्चात् वैदिक धर्म से प्रभावित हुये है वे जीवन भर आर्य समाज का प्रचार करेंगे।

श्री देवीदास आर्य ने इन युवकों की हिन्दू धर्म की दीक्षा देते यज्ञोपवी धारण कराकर गायत्री मन्त्र का उच्चारण कराया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कविता

लहू

—सूरज

मैं लहू हूं
मेरी जीवनी शक्ति महान है
गंगा सा पवित्र, सागर सा गंभीर
गरिमामय हिमालय के समान है
मैं लहू हूं,
तुम्हारा, हां बिल्कुल तुम्हारा, अपना
पर लगता है मित्र !
तुम, और कहीं देख रहे हो सपना
यदि न हो विश्वास
तो देखो वह गौरवान्वित इतिहास
जिसके एक एक अध्याय पर खड़ा
साक्षी दे रहा
न जाने कितने गांधी, गौतम,
नानक और वेद व्यास।
मैं लहू हूं,
पहले ही बहुत बह चुका हूं
अब और अधिक मत बहाना
देख मेरा चेहरा
क्षत विक्षत हो चुका हूं
अब और अधिक मत तड़पाना
पर, हाय। ये गैरों का दाव
अब भी रिस रहा है घाव।
मैं लहू हूं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी ओर से नैसर्गिक लकीर मिटाकर
रक्त रंजित दीवार खींचना चाहते हो
धिक्कार!
याद करो आगन्तुक पीढ़ी
जब लिखेगी इतिहास
तो तुम्हारे नाम के सामने अंकित होगा
खूनी, गद्दार।
संभव है मेरे एक-एक अणु से
जब उफनेगा राष्ट्रवाद का ज्वार
तो ढह जायगी, तुम्हारी
घृणा की कृत्रिम दीवार।
मैं लहू हूं
मेरे छींटे से दामन में लगा दाग
सात समुद्र भी कर नहीं सकेगा साफ
अंत में करोगे पश्चाताप
किन्तु मैंने जो भी किया,
वह एक मजहबी जुनून था
जिसके नाम पर लहू बहाया,
आह! वह पुण्यमयी
भारत माता का खून था।

□

हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

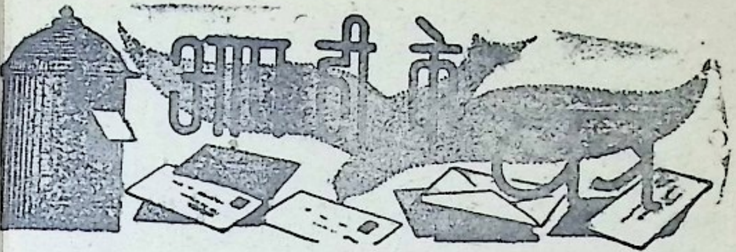

परमात्मा आपको सफलता प्रदान करे

रम आदरणीय वहन जी,

जन-ज्ञान पढ़कर पता चला कि आप पर ३५ मुकद्दमे चल रहे हैं और पने ध्येय की पूर्ति में आपको धनाभाव का भी सामना करना पड़ रहा है। री समझ में नहीं आ रहा कि दिल्ली प्रशासन ने आप जैसी देशभक्त देवी र ये मुकद्दमे क्यों चलाये। मेरे विचार में ये मुकद्दमे आप पर नहीं, सम्पूर्ण न्दू समाज पर चल रहे हैं। मैं आप से यही निवेदन करता हूं कि आप शिचन्त होकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रहें। किसी से डरने की आव- हीं। एक दिन आयेगा, जब हिन्दू समाज जागेगा और आपको पहचानेगा। री परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह आपको अपने लक्ष्य में सफलता दान करे।

रठ

विश्वबन्धु पंवार

परमात्मा आपका पथ-प्रदर्शन करे

ादरणीय बहन,

आपका साहस अदम्य है—प्रशंसनीय है। आप एक विलक्षण महिला जो प्रतिकूल परिस्थितियों से न घबराकर अप्रिय सत्य भी बोल रही हैं। ापके सम्पादकीय लेख पढ़कर मैं रोमांचित हो जाता हूं। हम सब भाई ापके साथ हैं। परमात्मा आपका पथ प्रदर्शन करे, यही प्रार्थना है।

ामत (जिला सीहोर)

कमलसिंह ठाकुर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आरक्षण से हिन्दू समाज बंट जायेगा

आदरणीय दीदी जी,

जन-ज्ञान न मिले तो मन व्याकुल हो जाता है। आप अपनी पत्रिका में आरक्षण नीति के सम्बन्ध में जो लेख प्रकाशित करते हैं, इनसे हमें प्रकाश मिलता है। इस बारे में सरकार को कोई ठोस पग उठाना चाहिए, वर्त्तमान आरक्षण नीति से तो हिन्दू समाज दो भागों में बंट जायेगा।

यह जानकर हार्दिक क्लेश हुआ कि सरकार ने आप पर पैंतीस मुकद्दमे चला रखे हैं। हम प्राणों को दांव पर लगाकर भी आपको बचाने का प्रयत्न करेंगे—जीने के मौसम बहुत हैं, मरने की ऋतु रोज आती नहीं।

हमें जन-ज्ञान से बहुत प्रकाश मिलता है। हमारे बच्चे भी प्रतिमास जन-ज्ञान आने की प्रतीक्षा करते हैं। हमसे दयानन्द संस्थान की जितनी आर्थिक सहायता हो सकेगी, हम करते रहेंगे। परमात्मा आपको दीर्घायु करे, ताकि आपका स्नेह और आशीर्वाद हमें सदा मिलता रहे।

भरतपुर — हरिप्रकाश दीक्षित

आपका लक्ष्य पूर्ण हो

माननीय राकेशरानी जी,

जन-ज्ञान में आपके विचार पढ़ने को मिले। मैंने उन पर चिंतन भी किया। प्रभावित हुआ। मेरी शुभ कामना है कि भारत को हिन्दूराष्ट्र घोषित करवाने का आपका लक्ष्य पूर्ण हो। धर्मनिरपेक्षता ने हमारे देश के लिए एक बड़ा खतरा पैदा कर दिया है। सबके लिए समान नियम और कानून होने चाहिए। अल्पसंख्यकों और बहुसंख्यकों में भेदभाव बरतना खतरनाक है। जब सबके अधिकार बराबर हैं, तब किसी के साथ अनुचित पक्षपात और किसी के अधिकारों का हनन अनुचित है।

मेरी शुभ कामनायें स्वीकृत करें।

कलकत्ता — युगलकिशोर शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संशोधित दहेज कानून कितना उपयोगी

महोदय,

पुलिस के आंकड़ों के अनुसार अकेले दिल्ली राज्य में दहेज-मौतों से मरने वाली नववधुओं की संख्या ७०० प्रति वर्ष के करीब है। अर्थात् एक दिन में दो दहेज-मौतें। और ये आंकड़े सिर्फ उन्हीं नववधुओं के हैं, जिनके पढ़े लिखे जागरूक मातापिता हिम्मत करके दहेज के कारण जलायी गयी अपनी अभागिन पुत्रियों की बेरहम मौत की खबर पुलिस को देते हैं। यह अनुमान लगाना कोई अतिशयोक्ति न होगी कि इससे भी अधिक संख्या ऐसी अभागिन नववधुओं की है, जिनके मरने पर उनके असहाय और निर्धन मातापिता सब्र करने के अलावा कुछ और नहीं कर पाते और भगवान् की मर्जी कहकर चुप बैठ जाते हैं।

यह सच है कि दहेज-प्रथा एक प्राचीन भारतीय प्रथा है, किन्तु यह पावन-पुरातन प्रथा अब काफी बदलकर एक कुप्रथा में परिवर्तित हो गयी है।

जब इन हत्याओं को लेकर काफी वावेला मचा, तो दिल्ली प्रशासन को बाध्य होकर दिल्ली पुलिस विभाग में एक 'दहेज विरोधी शाखा' खोलनी पड़ी। इस शाखा का कार्य था दहेज के कारण उत्पन्न मामलों की बारीकी से जांच करके अपराधियों का पता लगाना और उन्हें अदालत द्वारा सजा दिलवाना। आई० पी० एस० काडर की डिप्टी कमिश्नर वर्ग की एक महिला अधिकारी के जिम्मे है यह शाखा।

इस शाखा ने जनवरी, १९८२ से अपना कार्य आरम्भ किया है और उसे एक दिन में प्रायः तीन शिकायतें प्राप्त होती हैं, जो इस बात को दर्शाती है कि राजधानी में यह समस्या कितनी ज्वलन्त है। शाखा से संबद्ध पुलिस अधिकारियों का कहना है कि शिकायतों में से प्रायः एक तिहाई ही वधु-दाह से सम्बन्धित होती हैं, किन्तु सब शिकायतों का मूल का कहना है कि शिकायतों में से प्रायः एक तिहाई ही वधु-दाह से सम्बन्धित होती है, किन्तु सब शिकायतों का मूल कारण अपर्याप्त दहेज ही होता है। इस शाखा को सहेली, संजीवनी, महिला दक्षता समिति आदि संस्थाओं का सक्रिय सहयोग प्राप्त है। जरूरत इस बात की है कि आरंभ में हर बड़े नगर में पुलिस विभाग में ऐसी शाखायें खोली जायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिछले दिनों जो संशोधित दहेज कानून आया, उसे हम दो रूपों में देखते हैं। पहला—यह प्रत्येक धर्म व जाति की विवाहित महिला पर समान रूप से लागू होगा। दूसरा—इसमें दहेज को 'स्त्रीधन' मानकर उस पर पूरा अधिकार महिला का कर दिया गया है और अपराधियों के लिए और कड़े दण्ड की व्यवस्था की गयी है। किन्तु अन्य ऐसे साधारण कानूनों की भांति इसकी सफलता ईमानदार और साहसी पुलिस अधिकारियों, डाक्टरों और पड़ौसियों की तत्परता और कर्मठता पर ही निर्भर करेगी।

बम्बई — बिहारीलाल

कश्मीरी हिंदुओं पर राष्ट्रविरोधी तथा पाक-समर्थक तत्वों द्वारा अत्याचार

महोदय,

जम्मू व कश्मीर राज्य में रहने वाले हिन्दुओं के प्रति सरकारी अधिकारियों की घोर उपेक्षा के रवैये को देखकर, वहां रहने वाले राष्ट्रविरोधीत था पाक-समर्थक तत्वों के हौसले भी बढ़े हैं, और वे नये जोश के साथ अल्पसंख्यक हिन्दुओं पर अत्याचार करने और उन्हें तरह-तरह से सताने के 'पाक' काम में जुट गये हैं। कश्मीरी हिन्दुओं की हृदय-विदारक चीखें और करुण पुकारें इस बात की गवाह हैं कि आततायियों को सफलता मिल रही है।

इस वर्ष १५ अगस्त 'स्वाधीनता-दिवस' पर दर्जनों कश्मीरी लोग पुलिस की गोलियों से घायल हुए थे। ये लोग हिंसा पर उतारू उस भीड़ के कारनामों को देख रहे थे, जो 'पाकिस्तान जिंदाबाद' के नारे लगा रहे थे। इन्हीं पाक-समर्थकों ने, जिनमें अधिकतर पाकिस्तान की ओर से कश्मीरी में जासूसी करते हैं, १४ अगस्त को बड़े उत्साह से पाकिस्तान का स्वाधीनता दिवस मनाया था।

हिन्दू मंदिरों की जमीन देखते ही देखते वक्फ की सम्पत्ति बन जाती है। चाल, नागबल तथा अनंतराग आदि स्थानों के मंदिरों पर इन तत्वों के आक्रमण आम बात हो गयी है। असल में ये तत्व चाहते हैं कि सब कश्मीरी हिन्दू राज्य छोड़कर भारत भाग जायें, ताकि वे आराम के साथ राज्य को पाकिस्तान को सौंप दें, ताकि वह उसका एक हिस्सा बन जाये।

हिन्दू विद्यार्थी कितना भी मेधावी क्यों न हो, मजाल है कि उसे किसी इंजीनियरिंग या मेडिकल कालेज में प्रवेश मिल जाये। और सरकारी नौकरी तो उसे तभी मिल सकती है, जब वह अपना धर्म बदल कर मुसलमान बनने को राजी हो जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उदर के रोगों से कैसे बचें ?

—डा० कमला प्रधाना

आंन्त्रेभ्यस्ते गुदाभ्यो वनिष्ठोरुदरादधि ।
यक्ष्मं कुक्षिभ्यां प्लाशेर्नाभ्या नि वृहामि ते ॥
(अथर्व २।३३।४)

अर्थ—(ते) तेरी (आन्त्रेभ्यः) आंतों से (गुदाभ्यः) गुदा की नाड़ियों से (वनिष्ठो) भीतरी मल स्थान से (उदरात्अधि) उदर में से और (ते) तेरी (कुक्षिभ्याम्) दोनों कोखों से (प्लाशेः) कोख की थैली से और (नाभ्याम्) नाभि से (यमं) क्षीण करने वाले रोग को (नि वृहामि) मैं उखाड़ देता हूं।

मनुष्य को सावधान रहते हुए शरीर को स्वस्थ व रोग-मुक्त रखने का सदा प्रयत्न करना चाहिए।

शरीर के मुख्य पोषक अंगों को मल-रहित व पाचक क्रिया को समुचित रख कर ही मनुष्य स्वस्थ व हृष्ट-पुष्ट बना रह सकता है। पाचन अंग अन्तड़ियों आदि पर बलात्कार कर यदि अधिक भोजन ठूंसते रहे तो एक समय ऐसा आ जाता है कि ये यन्त्र भी व खाद्य पदार्थों के विकारों के बोझ से तरह-तरह के रोगों के रूप में दुःख देने लगते हैं, जैसे भोजन की अनिच्छा: उबकाई, वमन, पेट में वायु (गैस) भर जाना, सांस कष्ट से चलना, दर्द रहना, अन्तड़ियों में घाव हो जाना अथवा संग्रहणी (पुराने दस्त, पेचिश आदि) जो शरीर को क्षीण कर देते हैं। आज हम पेट के रोग गैस अटकना व उदरक्षत (Stomach Ulcer) पर ही विचार करेंगे।

शरीर की भोजन-प्रणाली बड़े वैज्ञानिक ढंग से बनी हुई है। मुख से चबाया भोजन अन्नवहा नालियों से आंतों में पहुंचता है। वहां पाचक रसों से मिलकर आगे बढ़ता है। रसों से रक्त को शुद्ध करने के लिए हृदय को भेज दिया जाता है। जितना खोजर बचा वह गुदा द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है। किन्तु जब मनुष्य जिह्वा-लोलुपता के कारण अधिक भोजन और वह भी देर में पचने वाले पदार्थ—मैदे से बने पक्वान्न, तरह-तरह की मिठाइयां, मांसादिक अपच, अधिक चिकनाइयों से भरे, अनमेल पदार्थों का एक संग खाना, ठण्डा-गर्म एक साथ लेना आदि अनियमित भोजन करता है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो प्रकृति उसे क्षमा नहीं करती। पेट फूलने लगता है, गैस बनने लगती मुंह से पानी आने लगता है, खट्टी डकारें आती हैं, सांस फूलने लगती और पेट में दर्द से बेचैनी होने लगती है। फिर विषैली गोलियों का सेव करके रोग की क्षणिक कमी हुई, किन्तु प्रतिक्रिया रूप में और बहुत-से उप उठ खड़े होते हैं।

पेट के अन्दर अन्त्र नालियाँ टेढ़ी-मेढ़ी घुसी हुई स्थिति में उदर में स्थि हैं। बहुधा घुमाव वाले स्थानों में अटका मल कोमल आंतों में लिपटा रह सड़ने लगता है। दूषित वायु से उस स्थान पर प्रदाह पैदा हो जाता है फिर धीरे-धीरे घाव बन जाता है। इसी को उदर-क्षत अथवा पेट का अल्स कहते हैं।

उदर-क्षत के लक्षण—पेट में आक्रान्त स्थान पर दर्द बना रहता जलन मालूम होती है, टपकन होने लगती है। जी मचलता है, उल्टी भी जाती है। कभी-कभी उल्टी में काला रक्त भी मिला रहता है। अधिक कोष्ठबद्धता (कब्ज) बनी रहती है। शरीर दुर्बल हो जाता है और रक्त स्वल्पता भी हो सकती है। कभी-कभी कुछ भोजन करने से क्षणिक सु मिलता है, किन्तु फिर पेट में जलन होने लगती है। ठण्डा पेय अच्छा लग है।

उपचार—१. भोजन में जब रुचि हो तो रसीला व शान्ति देने वाल पेय दें, जैसे मौसमी, संतरे का रस, लौकी, तोरई, परवल आदि का रस यदि पाचन क्रिया ठीक हो तो भीगे आटे की हल्की रोटी।

२. कोष्ठबद्धता को दूर करने के लिए भीगे मुनक्के का रस व गाय क ताजा दूध बहुत उत्तम है।

३. उपवास भी रोगी की अवस्थानुसार बीच-बीच में बहुत उपयोगी है इससे रुका मल सरकने लगता है। उपवास काल में जल पर्याप्त मात्रा पीना चाहिए।

४. आधुनिक चिकित्सा प्रणाली में ऐसे यन्त्र तैयार किए गए हैं, जिन अल्सर की स्थिति का पता लग जाये। एक नली में छोटा-सा बल्ब लग होता है, उसे रोगी को मुंह से निगलने को कहा जाता है, रोगी ब कठिनाई से उबकाई लेते हुए ऐसा कर पाता है। इससे चिकित्सक को उद के उस स्थान का ठीक पता लग जाता है, जहां अल्सर बन गये है। प्रा पेट में चीरा लगाकर क्षत भाग निकाल दिया जाता है। इस का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दायक स्थिति से बचने के लिए पहले से ही सावधानी बर्तना अच्छा है। भोजन नियमित व सादा हो, पेट नित्य साफ होता रहे। भूख न रहने पर जबरदस्ती न खिलाना ही रोगी की सच्ची परिचर्या है।

५. वैद्यक ग्रन्थ 'पथ्यापथ्य' में लिखा है—

विनापि भेषजं व्याधिः पथ्यादेव निवर्तते।
न तु पथ्यविहीनस्य भेषजानां शतैरपि॥

अर्थ—औषध का सेवन किये बिना भी केवल उचित रीति से आहार-विहार करने पर ही व्याधि निवृत्त हो जाती है किन्तु पथ्य के विपरीत आहार विहार करने से सैकड़ों औषध क्यों न दी जायें, रोग दूर नहीं होता।

अतः उचित खान-पान, उपयुक्त विश्राम, खुली वायु में टहलना, सूर्य रश्मि का सेवन आदि प्राकृतिक जीवन से ही रोग को जड़ से दूर करना उचित है।

६. त्रिफला जल का पान आंतों को शुद्ध करने के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। इसमें घाव धुल भी जाते हैं और भर भी जाते हैं। कोष्ठबद्धता नहीं रहने पाती।

७. हरड़ को पीसकर शहद में मिला कर चाटने से रोगी को सुख मिलता है। शीतल जल सुखदायक होता है।

८. उदर में वायु रुक जाने पर अदरक या सोंठ को पानी में उबाल कर चाय की भांति दूध व शक्कर मिलाकर पीने से गैस शान्त हो जाती है।

९. पेट में अपच होने पर प्रायः भोजन की अनिच्छा होती है। फिर भी स्नेही जन स्वादिष्ट चटपटा मसालेदार भोजन बनाकर रुग्ण व्यक्ति का सत्कार करते हैं। क्षणिक सन्तोष के लिए व्यक्ति के रोग को बढ़ाना भारी भूल है।

१०. उदर-क्षत बढ़ जाने पर पूर्ण विश्राम की आवश्यकता होती है। □

एकता ही वह मंत्र है, जिससे हम सारी आसुरी सेना का सामना कर सकते हैं।

भेद भुलाकर एक बनो अब, एक बनो धरती को जीतो।
जीवन की प्रेरक वीणा का, आमन्त्रण स्वीकार करो प्रिय।

—महात्मा वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुखी जीवन की सप्तपदी

—पं० सत्यदेव विद्यालंकार

सप्तपदी विधि में "इष", ऊर्ज्ज" तथा "रायस्पोष" के लिए पति ने पत्नी का सहयोग मांगा—चाहा। यह सहयोग समृद्ध और सुखी गृहस्थ-धर्म का मूल है। आगे के दो सहयोग के कदम परिणाम रूप हैं। "मयोभवाय चतुष्पदी भव" चौथा पग सुख वृद्धि के लिए रख तथा "प्रजाभ्यः पंचपदी भव" पांचवां पग सन्तानोत्पत्ति के लिए रख।

परिवार में सुख अपने आप नहीं आता, बड़े परिश्रम से उत्पन्न किया जाता है। अन्न, वस्त्र तथा धन के होते हुए भी परिवार दुःखी देखे जाते हैं। सुख एक मानसिक अवस्था है। वेद के शब्दों में—

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।"

(ऋ. १०/१९१/२)

अर्थात् संग-संग चलो, संगतिपूर्वक बोलो, तुम्हारे मन संगतिपूर्वक विचार करें।

संगमन, संवदन तथा साम्मनस्य क्रमशः बढ़ते हुए मेल के लक्षण हैं। वैदिक विवाह में अनिवार्यता की भावना है—साथ रहना है अतः साथ रहना सीखना है। वैदिक विवाह सशर्त नहीं है। एक-दूसरे को समझना, एक-दूसरे की अनुकूलता प्राप्त करने का प्रयत्न साम्मनस्य का मूल है और यही सुख का मूल है। इस अपूर्व सुख का बहुत सुन्दर चित्रण महाकवि भवभूति ने उत्तररामचरित में किया है—

अद्वैतं सुखदुःखयोरनुगुणं सर्वास्ववस्थासु यत्
विश्रामो हृदयस्य यत्र जरसा यस्मिन्नहार्यो रसः।
कालेनावरणात्ययात् परिणते यत् स्नेह सारे स्थितं
भद्रं तस्य सुमानुषस्य कथमप्येकं हितत्प्राप्यते॥

कवि कहता है कि पति-पत्नी में यदि ऐसा प्रेम हो जो सुख-दुःख में एक-सा रहे, भिन्न-भिन्न बदलती अवस्थाओं में भी अनुकूलता ही रहे, जो हृदय को शान्ति देने वाला हो, वृद्धावस्था में भी जिसका आनन्द कम न हो तथा समय के गुजरने पर एक-दूसरे को पूरी तरह समझने पर अपने उत्कृष्ट रूप में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकट हो, ऐसा प्रेम बहुत कठिनता से प्राप्त होता है पर जिन्हें प्राप्त होता है वे पति-पत्नी धन्य हैं।

गृहस्थ के सुख का यह विलक्षण रूप है। वैदिक विवाह में यह लक्ष्य था, जिसे प्राप्त होने वाला समझा जाता था। आजकल की परिस्थितियों में यह अलभ्य तो नहीं पर सामान्यतः स्वप्न हो गया है।

फिर भी इसमें सन्देह नहीं कि सब पति-पत्नी इस सुख के लिए ललकते हैं।

प्रजाभ्यः पंचपदी भव

सन्तान गृहस्थ के उद्यान का फल है, माता-पिता को बांधने वाली अटूट ग्रन्थि है। पर वर्तमान भोग युग में सन्तान एक जंजाल समझा जा रहा है। जब माता-पिता में सन्तान के प्रति घोर वितृष्णा की भावना हो तो जो भी सन्तान होगी वह अवांछित और अवांछनीय होगी। जिस बच्चे को पति-पत्नी ने ललक से उत्पन्न नहीं किया, जिसके उत्पन्न होने पर स्वाभाविक हर्ष के स्थान पर चिन्ता का वातावरण बन गया हो, जिस बच्चे की शिक्षा के प्रश्न को लेकर माता-पिता को बुखार चढ़ जाता हो, वह बच्चा बड़ा होकर क्या माता-पिता या राष्ट्र को सुख देगा, यह वर्तमान युग की एक भीषण ज्वलन्त समस्या है।

भारतीय चिन्तन में गृहस्थाश्रम का मुख्य लक्ष्य उत्कृष्ट सन्तान की उत्पत्ति है। इसे ही अब तक गृहस्थ का परम सुख माना गया है। इसी से ही पितृ ऋण और राष्ट्र ऋण से मुक्ति होती है। असंयत विलास गृहस्थ का आदर्श नहीं। यह तो बिना विवाह के भी हो सकता है। हम जिस युग में जी रहे हैं, उसमें हमारा आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक ढांचा तथा विकास सब पाश्चात्य या साम्यवादी विचारधारा पर आश्रित है। यही बात वैयक्तिक जीवन में भी आ गई है। □

---

(१) डाक्टर साहब ! जब मैं चुनाव सभा में भाषण देता हूं, तब मेरी जबान चिपक जाती है।"

"घबराने की कोई बात नहीं, झूठ बोलते समय अकसर ऐसा हो जाता है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज की समस्याएं और उनका समाधा

—महात्मा नारायणस्वामी 'क्रान्तिकारी

भारतवर्ष अखंड नहीं रह सकता यदि सरकार ने परिवार नियोज वन्द नहीं किया। परिवार नियोजन के कृत्रिम साधनों आत्मिक, मानसिक, शारीरिक और चारित्रिक पतन होता है। यह वेद, शास्त्र स्मृतियों के विरुद्ध है। दो या तीन बच्चों का नारा अवैदिक है। वेद में द संतान पैदा करने की आज्ञा है। वेद में मन्त्र है ब्रह्मचर्येण तपसा राजा रा विरक्षति। आचार्यो ब्रह्मचर्येण ब्रह्मचारिणमिच्छते। ब्रह्मचर्येण तपसा दे मृत्युमुपाघ्नत। इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्। ब्रह्मचर्य के तप से राजा राष्ट्र की विशेष रक्षा करता है। आचार्य भी ब्रह्मचारी होकर बा को ब्रह्मचारी बनाता है। ब्रह्मचर्य के तप से विद्वान् लोग मृत्यु को जीत हैं। इन्द्र भी ब्रह्मचर्य से ही देवताओं का मार्ग प्रशस्त करता है।

परिवार नियोजन के कृत्रिम साधन अर्थात् नसबन्दी, निरोध, गर्भप ब्रह्मचर्य के विरोधी है। ब्रह्मचर्य संयम सिखाता है। कृत्रिम साधन मनुष् को असंयमी और व्यभिचारी बनाते हैं। बिना संतान की कामना के पति-प का संभोग करना व्यभिचार है। मूर्ख से मूर्ख किसान भी पृथ्वी में ब इसलिए नहीं बोता कि उगे नहीं।

जनता और सरकार को चाहिए कि इस भ्रष्ट दूषित प्रणाली को समा कर ब्रह्मचर्य और संयम का प्रचार करें। राजा का काम प्रजा को संयमी बना है असंयमी नहीं। मनु महाराज लिखते हैं कि न जातु कामः काम उपभोगेन शाम्यति। हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते। काम के भोग से काम की शान्ति नहीं होती प्रत्युत जैसे अग्नि में घी डालने से अ अत्यधिक प्रज्वलित होती है उसी तरह काम भी बढ़ता चला जाता है। भो भोगने से भोक्ता में वासनायें छा जाती है। फिर वह विषयों में लीन हो पतित हो जाता है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य बन्धन से छूटकर मोक्ष प्रा करना है। केवल जीना नहीं है। जीने को तो कुत्ते गधे सूअर भी जीवि रहते हैं। परन्तु उनके जीवन का कोई लक्ष्य या उद्देश्य नहीं, बिना निशाने गोली चलाना मूर्ख सैनिक का काम है। इसी तरह उद्देश्य रहित जीवन मू का होता है। १० वर्ष भी यदि मनुष्य धर्मपूर्वक सदाचार से जीवित रहता

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो आत्मा की सद्गति होती है। धर्म और सदाचार रहित जीवन सौ वर्ष का भी व्यर्थ है। जनसंख्या बढ़ने का बहाना मूर्खों के मस्तिष्क की उपज है। विश्व में मनुष्य कितने हों यह कोई निर्धारित नहीं कर सकता जैसे एक वृक्ष में आलू के तथा टमाटर के फल कितने लगें यह मनुष्य निर्धारित नहीं कर सकता। देश में कुत्ते, घोड़े, गधे, बैल, चींटी, कीट-पतंग, कितने हों यह कोई मनुष्य नहीं बता सकता। यह परमात्मा की व्यवस्था है। जो यह कहते हैं कि संतान ज्यादा होने से भोजन कहां से आयेगा वे भोग्य-भोक्ता के सिद्धान्त को नहीं जानते। परमात्मा सृष्टि में पहले भोग पदार्थ न बनाता तो सब आदि सृष्टि में ही मर जाते।

मुसलमान परिवार नियोजन का अत्यन्त कट्टर विरोधी है। २० वर्ष में हिन्दुओं की जनसंख्या घटकर मुसलमानों की बढ़कर भारतवर्ष फिर खण्डित होगा। इसको कोई बचा नहीं सकता। वर्तमान समय में हिन्दू अल्पसंख्यक हो रहा है। इसका मुख्य कारण नसबन्दी, गर्भपात, दहेज प्रथा, हिन्दुओं द्वारा हिन्दुओं की सामूहिक हत्या तथा मुसलमानों द्वारा हिन्दू युवतियों को भगाकर विवाह एवं विदेशों में ले जाना है। जिस दिन हिन्दू अल्पसंख्यक हुआ उस दिन भारतवर्ष में धर्मनिरपेक्षता लोकतन्त्र, समाजवाद, गांधीवाद नहीं रह-जायेगा। ४८ प्रतिशत हिन्दू होने से पंजाब खालिस्तान बनने से बचा। यदि हिन्दू आबादी पंजाब में कम हो तो खालिस्तान बन जाता है। तथापि सांप्रदायिक राज्य का निर्माण तो हो ही गया, समस्त राजनैतिक नेता जिन हिन्दुओं के बहुमत से चुने जाते हैं उन्हीं की नसबन्दी कराकर उन्ही की जनसंख्या कम करते हैं। अर्थात् भविष्य में अपने हाथों से ही अपने पैर काटते हैं। मुस्लिम ईसाई सिक्ख बहुल क्षेत्रों में कोई भी हिन्दू नेता नहीं चुना जा सकता। हिन्दू बहुल क्षेत्र में मुसलमान ईसाई सिख चुने जा सकते हैं। यह हिन्दुओं की धर्मनिरपेक्ष राजनीति की देन है। यदि भारत को अखंडित रखना है तो परिवार नियोजन समाप्त किया जाय। नसबन्दी, गर्भपात, निरोध को यदि विश्व में कोई उचित शिष्टाचार (आर्य) हिन्दू संस्कृति के अनुकूल वेदों शास्त्रों के अनुकूल सिद्ध करे तो मेरी तरफ से ५० हजार रुपये का पुरस्कार है।

भारत अब निर्धन देश नहीं है। स्वतन्त्रता के पूर्व था। सिर्फ आर्थिक असमानता है, जो भारतीय राजनीति का दोष है। मनुष्य २० रुपए किलो का मांस, मछली तथा ३० रु० लीटर का शराब पीता है। अरबों रुपए धूम्रपान, और नशे में बरबाद करते हैं। ४ रुपए लिटर की दूध नहीं पी सकते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह भ्रष्ट अर्थ शास्त्र की देन है। लड़ाई, झगड़ा हत्या कर हजारों रु मुकद्दमों में बरवाद करते हैं। फिर भी गरीब का नारा लगाते हैं।

प्रतिज्ञा कीजिए कि हम अंडा मांस मछली नहीं खायेंगे। शराब, बी सिगरेट नहीं पीयेंगे। चोरी-डाका नहीं होंगे। आपस में नहीं लड़ेंगे। द नहीं लेंगे। नसबन्दी नहीं करायेंगे। भारत माता की रक्षा करेंगे। □

कैप्टिन देवरत्न को भ्रातृशोक

बम्बई। आर्यसमाज सान्ताक्रुज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य अनुज व स्वर्गीय आचार्य भद्रसेन जी के पुत्र प्रियरत्नजी आर्य का नासिक २७ वर्ष की अल्पायु में आकस्मिक निधन हो गया।

उन्होंने गत वर्ष महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अपने पिताजी स्मृति में "श्रद्धा" कैसिट तैयार किया था, जिसका विमोचन अजमेर किया गया था।

१५ नवम्बर को उनकी आत्मा की शान्ति के लिए आर्यसमाज म सान्ताक्रुज में शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया।

टंकारा में ऋषि मेला : यात्रियों को सूच

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा की एक बैठक में निश्चय हुआ हर वर्ष की भांति ७,८,९, मार्च को ऋषि मेला टंकारा में समार पूर्वक मनाया जाये।

आर्य जनता अपने-अपने नगरों में आर्यसमाजों की बैठक बुलाकर टंक के लिए स्पेशल बसें ले जाने की व्यवस्था करें। इससे भारत-भर से वाले ऋषिभक्तों को सुविधा रहती है। दिल्ली से भी बसें चलाने की यो बनाई जा रही है। जो लोग दिल्ली से टंकारा तथा टंकारा से दिल्ली वा सीधे रेल द्वारा यात्रा करना चाहें, उनके लिए रेल में "स्लीपिंग वर्थ" आर की व्यवस्था की जा रही है। उनके लिए दिल्ली से राजकोट और राज से दिल्ली तक की सीटें आरक्षित करवा दी जायेंगी। राजकोट से टंक ४० किलोमीटर तथा मोरवी से २० किलोमीटर है। दोनों स्थानों से ब की व्यवस्था रहती है। विस्तृत जानकारी के लिए ट्रस्ट के उपकार्या आर्यसमाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-१ के पते पर संपर्क कर सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक सन्ध्या की विशेषता

—सत्या पथरिया, सोनीपत

सन्ध्यायन्ति भली-भांति ध्यान करते हैं वा ध्यान किया जाय परमेश्वर का जिसमें वह सन्ध्या। सो रात दिन के संयोग समय दोनों सन्ध्यायों सब मनुष्य परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करें। क्या ु भजन संस्कृत भाषा में ही हो सकता है अन्य भाषा में नहीं? ईश्वर कह र पुकारने से वह अधिक प्रसन्न होता है, किन्तु सच्चे हृदय से अल्लाह ने से वह नाराज होता है? यह समझना भूल है। फिर प्रश्न उठता है ऋषि दयानन्द ने पंचमहायज्ञविधि में जो संध्या लिखी है उसके द्वारा न क्यों किया जाये। इस में क्या विशेषता है?

उत्तर प्रभु भजन के लिए ध्यान करते समय जो विघ्न आते हैं, ध्यान करने ले को जिन भूमिकाओं से गुजरना पड़ता है, ध्यान के लिए जो तैयारी ले करनी चाहिए, उन सबका ऐसा सुसंगत समावेश इससे अधिक मार्मिक ा भावपूर्ण शब्दों में अन्यत्र नहीं मिलता। ध्यान के लिए योग के जो आठ ग कहे गये हैं उन सबका इसमें सुन्दर ढंग से समावेश है। परन्तु इसका यह त्पर्य नहीं कि अन्य मार्ग से भजन नहीं हो सकता। लोग किसी देश काल वा षा में भजन करें। उनकी आत्मा बलवान् होकर न केवल अपने, किन्तु रों के भी कष्ट दूर करने में समर्थ होती है। जो पद्धति ठीक क्रम से ाई गई है वह शीघ्र फलदायक होती है। भजन किन्हीं शब्दों में हो परन्तु परमेश्वर का, जो उसका भजन छोड़ कर अन्य पदार्थों का भजन करेंगे अवश्य अन्धकार में प्रवेश करेंगे।

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि योग इन आठ अगों का समावेश वैदिक संध्या में कैसे है? बतलाती हूं। (२) च संतोष तप स्वाध्याय ईश्वर प्रणिधान इन पांच नियमों को पहले हैं।

१. शौच—गीता में कहा है "शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः" त् नित्य कर्म जल के समीप पवित्र स्थान में करना चाहिए। मनु ने कहा पां सपीपे नियतो नैत्यिकं विधिमास्थितः सो संध्या करने वाले को मल ग कर दन्तधावन तथा स्नान करके ध्यान में बैठना चाहिये। सर्वथा पावन र ब्रह्मध्यान के लिए जो अनुकूलता होती है वह अन्य समयों में हीं होती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. संतोषी ही संध्या करते हैं, लोभी दो पैसे और कमालूं की चिन्त में संध्या छेड़ देगा।

३. तप—जो तपस्वी नहीं वह आलस्यवश संध्या नहीं करेगा।

४. स्वाध्याय—जिसको प्रातः सायं अपने जीवन का लेखा देखना त कृत कर्मों का अध्ययन करने का अभ्यास हो चुका है ऐसा स्वाध्यायशील संध्या करता है।

५. ईश्वरप्रणिधान—गायत्री मन्त्र ईश्वर प्रणिधान के लिए है नियमि रूप से संध्या करने वाला अपना सर्वस्व परमात्मा में समर्पण करता है। व तो कर्म फल की भी इच्छा नहीं करता।

> ब्रह्मार्पणं ब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
> ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥

सब कुछ उसी को समर्पित हो जाता है। (१) यम—अहिंसा, स अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

१. सत्य—उपस्थान मन्त्र सत्य के अभ्यास के लिए है।

२. अहिंसा—मनसो परिक्रमा के मन्त्र अहिंसा के अभ्यास के लिए हैं।

३. अस्तेय—सच्चा साधक पराये द्रव्य का लालच कभी नहीं करता।

४. ब्रह्मचर्य—तच्चक्षुर्देवहितं यह मंत्र ब्रह्मचर्य की महिमा गा रहा है

५. अपरिग्रह—उपरिलिखित चारों व्रतों को धारण करने वाला साध जीवन निर्वाह के अतिरिक्त भोग साधनों को स्वीकार नहीं करता।

(३) आसन (४) और स्थिरसुखमासनम्—साधारण अवस्था सुखासन ही श्रेष्ठ है। उसमें चित्तवृत्ति की एकाग्रता नष्ट नहीं होती साधक संध्या समय आसन लगाना सीखता है।

(५) प्राणायाम—प्राणायाम तथा धारणाओं भूः पुनातु···से लेकर ब्रह्म पुनातु सर्वत्र तक मन्त्रों में 'देशबन्धश्चित्तस्य धारणा' इस धारणा ना अंग का समावेश है।

(६) प्रत्याहार—इन्द्रियां विषयों को न पाकर चित्त के स्वरूप अनुकरण करने लगती हैं। साधक को ऐसी दिव्य शक्ति मिल जाती है।

(७) और (८) समाधि—निरन्तर अभ्यास से समाधि की प्राप्ति जाने के उपरान्त प्रत्याहार और ध्यान समाधि में ही आ जाते हैं। यह अष्टांग योग का समन्वय।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक संध्या करने वाले को पहले सात भागों का अवलम्बन अवश्य करना है तभी सफलता प्राप्त हो सकती है।

१. चित्तसमाधान करने के लिए सर्व प्रथम आचमन करके आध्यात्मिक उन्नति का आरम्भ शान्ति से है और समाप्ति भी शान्ति पर ही है।

२. शान्त चित्त से आत्म परीक्षण।

३. आत्म मार्जन—इन्द्रियों में जहां-जहां दोष है उनका मार्जन होना जरूरी है।

४. आत्मप्रोत्साहन—आत्मपरीक्षण से प्रायः मानव घबराता है। अघमर्षण मन्त्र सृष्टि तथा प्रलय का वर्णन करता हुआ सान्त्वना दे रहा है कि घबराओ नहीं। तुम अमर हो। कृत कर्मों के लिए प्रायश्चित्त करते हुए सुकर्मों के लिए कटिबद्ध हो जाओ।

५. महाव्रत—मनसा परिक्रमा में साधक अहिंसा का महाव्रत लेता है।

६. ईश्वरार्पण—उपस्थान मन्त्रों में सब कुछ समर्पण करता है।

७. उपसंहार—ईश-नमन तथा त्रिविध शान्ति। सर्वे भवन्तु सुखिन: की भावना—इन कर्त्तव्य कर्मों के बिना केवल तोता रटन्त से लाभ नहीं हो सकता। महर्षि की महती कृपा है कि उन्होंने वैदिक संध्यारूपी गागर में सागर भर दिया है। इन थोड़े से मन्त्रों में कितना रहस्य है तथा परमानन्द प्राप्ति के लिए सही पथ इसमें बतला दिया है। वास्तव में सच्चा तथा छोटे से छोटा पथ यही है। इधर-उधर भटकने वाला मानव अपनी मोक्षधाम रूपी मंजिल पर देर से भटकता-भटकता पूछता-पूछता पहुंचता है। परन्तु इस छोटी-सी वैदिक संध्यारूपी भक्ति की भावना में सन्मार्ग का रहस्य छिपा हुआ है। जो जो आदेश इस वैदिक संध्या में हैं उन्हें जीवन में क्रियात्मक रूप में लाए बिना प्रभुभक्ति अधूरी है। उस परमपिता की कृपा अपने आज्ञाकारी सन्मार्ग के पथिक अमृतपुत्रों को ही मिल सकती है। सो उस परमपिता के अमृतपुत्र बनकर अमृतपद पाने का सही तथा छोटे से छोटा पथ यही वैदिक संध्या ही है। ईशकृपा से इसे श्वासों की भांति प्रत्येक भक्त अपने जीवन का अंग बनाकर ईशकृपा को प्राप्त करें। ऐसी भावना सभी रखें।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतं गमय।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारा नया प्रकाशन

हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा

महान् धार्मिक हिन्दू नेता
पंडिता राकेशरानी के
सशक्त हस्ताक्षरों में
आज की विकराल परिस्थितियों
का चित्रण और निदान

मूल्य ६० पैसे
एक हजार प्रतियां मंगाने
पर पचास प्रतिशत कमीशन

दयानन्द संस्थान, वेदमन्दिर

१५६७, हरध्यानसिंह रोड करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी विवेकानन्द, जिन्होंने हिन्दुत्व में प्राण प्रतिष्ठा की

—धर्मपाल शर्मा

भारत भूमि पर सत्पुत्रों की कमी कभी नहीं रही। ऐसे सत्पुत्र जिन्होंने समय की धारा को मोड़ा है और घने अंधकार के समय जिन्होंने विद्युल्लता की तरह चमक कर भारत ही नहीं समूचे जग के आंगन को आलोकित किया है। उन सत्पुत्रों में स्मरणीय हैं स्वामी विवेकानन्द।

१२ जनवरी सन् १८६३ ई० को श्री विश्वनाथ दत्त के घर कलकत्ता में जब इस शिशु का जन्म हुआ, तब प्रकृति भी संक्रांति का स्वागत कर रही थी। माता-पिता ने अनन्य आराधना के बल पर इस शिशु को पाया था। इसलिए उसका नाम रखा 'वीरेश्वर'। माता प्रेम से पुकारती 'बिले' और पिता ने उसका नाम रखा— नरेन्द्रनाथ।

नरेन्द्रनाथ बचपन से ही मेधावी थे। कालेज शिक्षा प्राप्त करने के दौरान वे गहन अध्ययन में जुट गए। उन्होंने पश्चिमी दार्शनिकों के साहित्य का अध्ययन किया तो उनके मन में एक झंझावात उत्पन्न हो गया। लेकिन जब उन्होने प्राच्य दर्शन का अध्ययन किया तो वे तुलनात्मक अध्ययन कर कह उठे कि "हिन्दू दर्शन परम सत्य की उपलब्धि करके जिस स्थिर सिद्धान्त पर पहुंचा है, परश्चात्य दार्शनिक उसका क्षीणसा आभास ही पा सके हैं— पूर्ण सत्य की उपलब्धि वे नहीं कर सके।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[illegible] के कारण नरेन्द्रनाथ के मन में जीवन और जगत् को जान लेने की तीव्र उत्कंठा उत्पन्न हो चुकी थी। वे सामान्य जीवन से ऊपर उठ चुके थे। वे अपने मित्रों से कहते क्या हम यौवन प्राप्त कर, विवाह कर कुछ सन्तान आदि उत्पन्न कर एक दिन चिरनिद्रा में सो जाने के लिए ही आये हैं ? और इसी प्रश्न ने उनके मन में एक महान् लक्ष्य के बीज बोये। वह लक्ष्य था सत्य की खोज। उस विराट् सत्ता की खोज जो इस सृष्टि की संचालक है। इसी खोज में वे अनेक धर्मगुरुओं की शरण में भटकते फिरे। एक दिन वे महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के पास भी पहुंचे। उनसे व्यग्रतापूर्वक पूछा "महाशय ! क्या आपने ईश्वर का दर्शन किया है ?" वे कुछ उत्तर न दे सके। पर कुछ क्षण रुक कर बोले, "तुम्हारे नेत्र योगियों जैसे हैं।' लेकिन नरेन्द्र तो अद्भुत उन्मत्तता से ग्रस्त थे। वहां से हताश होकर लौट पड़े। खोज जारी रही। इसी अनवरत खोज में उनकी रामकृष्ण परमहंस से भेंट हुई। रामकृष्ण परमहंस से भी उन्होंने सीधा वही प्रश्न किया—'क्या आपने ईश्वर को देखा है ?' 'हां, मैंने उसे वैसे ही देखा है, जैसे मैं तुम्हें देख रहा हूं। मैं तुम्हें भी दिखा सकता हूं।' वे कुछ क्षण रुक कर बोले, 'उनसे वैसे ही बातचीत की जा सकती है जैसे मैं तुमसे कर रहा हूं। पर वैसा करना कौन चाहता है ? लोग पत्नी-पुत्रों के शोक में घड़ों आंसू बहाते हैं। विषय भोगों के लिए अनवरत रोते रहते हैं परन्तु भगवान् की प्राप्ति के लिए कौन रोता है ? यदि कोई इसी आर्तभाव से उन्हें पुकारे तो वे अवश्य दर्शन देते हैं।' नरेन्द्र इन बातों से बहुत प्रभावित हुए। उन्हें लगा कि जिस तत्त्वदर्शी गुरु की उन्हें तलाश थी, वह मिल गया है।

अपने महानिर्वाण के समय रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को निर्देश दिया था कि तुम लोक-शिक्षा दोगे। उन्होंने नरेन्द्र को विवेकानन्द नाम दिया और अपनी साधना शक्तियां समर्पित करते हुए कहा, 'आज मैं सर्वस्व तुझे देकर फकीर बन गया। तू इस शक्ति बल पर संसार में अनेक कार्य कर सकेगा।' लोककल्याण के लिए समर्पित विवेकानन्द को असंख्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। वे कुछ लेने के लिए नहीं, देने के लिए संन्यासी बने थे। उन्होंने अपना वैभव युक्त घर बार लोककल्याण के लिए छोड़ा था। अतः कभी किसी से याचना नहीं थी। अल्मोड़ा और नैनीताल की यात्रा में एकबार वे भूख से मूर्च्छित होकर गिर पड़े। दैवयोग से एक फकीर ने खीरा खिलाकर उनकी प्राण रक्षा की। उन्होंने इसी तरह पद यात्रा करते हुए देश दशा देखी। भारत के दीन दुखियों के करुण आर्तनाद ने उनके मनको आन्दोलित कर दिया। कभी-कभी यह सब दारुण दशा देखकर वे कह उठते,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अरे ! वे कैसे निरुपाय एवं निस्सहाय हैं।' राजस्थान की एक सभा में बोलते हुए उन्होंने कहा था—"मैं एक ऐसा धर्म चाहता हूं, जो हम लोगों में आत्मविश्वास तथा जातीय मर्यादाओं के प्रति निष्ठा जगाने और जन-जन को अन्न, वस्त्र तथा शिक्षा देने के साथ ही हमारे चारों ओर की सभी दुःख-वेदनाओं को दूर करने की शक्ति दे सके। यदि भगवान् का साक्षात्कार करना चाहते हो तो मनुष्य की सेवा करो।"

स्वामीजी ने धर्म की यह दृष्टि पैदा करने के लिए अनुभव कर लिया था कि हिन्दू धर्म के इस स्वरूप को प्रतिष्ठित करने के लिए उन्हें अथक प्रयास करना होगा। उन्होंने देखा था कि कर्मकांड को ही धर्म समझकर हमारे देशवासी भ्रमित हो रहे हैं और इसीलिए तेजस्वी हिन्दू धर्म का तत्त्वज्ञान न उन्हें प्रकाश दिखाये रहा है और न उनके दैन्य दारिद्रय का नाश ही कर पा रहा है। धर्म की इसी प्रतिष्ठा के लिए उन्होंने शिकागो में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में जाने का फैसला किया। जब उन्होंने पश्चिम की चकाचौंध और वैभव को देखा तो उनकी आंखों में आंसू छलक आए। वे कह उठे, आह ! भारत जननी के पुत्र कितने अभिशप्त और दीन हैं, कितने शोषित हैं !" अनेक कठिनाइयों और संघर्षों से उन्हें धर्मसभा में बोलने का अवसर मिला। और जब धर्म सभा में उनका प्रवचन हुआ तो सारा अमरीका उनका दीवाना हो गया। उनका भाषण सुनने के बाद अमरीकी समाचारपत्रों ने लिखा था—"उनका भाषण सुनने के बाद, हम अनुभव करते हैं कि भारत जैसे ज्ञान संपन्न देश में धर्मप्रचारक भेजना कोरी मूर्खता की बात है।" इस धर्म सभा में स्वामी विवेकानन्द के २७ सितम्बर १८९३ के भाषण के बाद भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म का महत्व सर्वोच्च शिखर पर प्रतिष्ठित हो गया। धर्मसभा के पश्चात् उन्होंने अमरीका का भ्रमण शुरू किया सारे अमरीका में उनका भव्य स्वागत हुआ। पर इस अभूतपूर्व अभिनन्दन में वे अपनी मातृभूमि को नहीं भूले। इसके पद दलित पुत्रों की आकृति उनकी आंखों के सामने सदैव खड़ी रहती। अमरीका के वैभव से अभिभूत होकर वे मातृभूमि भारत के प्रति और अधिक करुणार्द्र हो उठे। उन्होंने भारत स्थित एक स्वजन को एक पत्र में लिखा—"आगामी ५० वर्षों के लिए सभी देवी-देवताओं को मन से निकाल देना होगा। हमारा एक मात्र जागृत देवता हमारी जाति है। इस विराट् की पूजा ही हमारी मुख्य पूजा होगी। सबसे पहले जिस देवता की पूजा करेंगे वे हैं हमारे देशवासी।"

अब स्वामी विवेकानन्द की यशोगाथा पश्चिम के अन्य देशों में फैलने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लगी थी। इंग्लैंड से भी उनके पास नियंत्रण आये। इंग्लैंड की यात्रा में उन्होंने भारत को गुलाम बनाकर रखने वाली इस जाति को भारतीय संस्कृति की महत्ता का दिग्दर्शन कराया। आधी दुनिया पर शासन करने वाली अंग्रेज जाति एक पराधीन देश के इस भगवावेशधारी धर्मगुरु की ज्ञान गरिमा के सम्मुख नत-मस्तक हो गई। स्वामीजी के प्रवचनों का ऐसा प्रभाव हुआ कि भौतिकता की चकाचौंध से चुंधियाये उस देश की एक युवती आजीवन भारत की सेवा करने के लिए स्वामीजी के साथ चली आई। स्वामी जी ने उसे भगिनी निवेदिता कहकर पुकारा।

एक बार एक अंग्रेज मित्र ने उनसे पूछा "स्वामीजी, पाश्चात्य देशों में कई वर्ष रहने के पश्चात् भारत आपको कैसा लगेगा ?" स्वामीजी ने अत्यन्त आवेश के साथ उत्तर दिया—"पाश्चात्य देशों में आने के पूर्व मैं भारत को हृदय से प्यार करता था, किन्तु अब मेरे लिए भारत की वायु यहां तक कि भारत का प्रत्येक धूलि कण स्वर्ण से भी अधिक पवित्र है। भारत भूमि पवित्र भूमि है। भारत मेरा तीर्थ है।"

१६ दिसम्बर १८९६ को स्वामीजी ने लन्दन से इटली होते हुए भारत की ओर प्रयाण किया। विदेश से लौटकर जब प्रथम बार स्वामी जी ने भारत भूमि पर कदम रखा तो अनायास उनके मुख से ये शब्द निकल पड़े— "विदेशों में रहकर जो कुछ भी अपवित्रता मेरे शरीर और मन को छू गई हो,, भारत की इस पवित्र धूल के स्पर्श से वह सब नष्ट हो गई। मां की गोद में मेरे सब कलुष धुल गये।" बार-बार वे भारत-भूमि को नमन करते और उसकी जय-जयकार करते जाते। देशभक्ति के इस प्रबल ज्वार को देखकर उनके स्वागत के लिए उपस्थित जनसमूह आत्मविभोर हो उठा।

भारत लोटकर उन्होंने जब फिर से भारत की दरिद्रता को देखा तो वे व्यग्र हो उठे और स्वागत समारोहों के बीच दरिनारायण की सेवा की योजना बनाना नहीं भूले। कलकत्ता में अपने गुरु भाई और शिष्यों के साथ मिलकर उन्होंने इस सेवा कार्य के लिए एक संगठन की स्थापना शुरू कर दी और विधिवत् रामकृष्ण मिशन की स्थापना कर देशवासियों की सेवा का कार्य शुरू कर दिया। सेवाकार्य के लिए उन्होंने अपने शिष्यों को विभिन्न प्रदेशों में भेज दिया। मिशन की स्थापना के कुछ ही दिन बाद स्वामीजी ने भारत का व्यापक भ्रमण शुरू किया। उत्तर भारत की यात्रा करते हुए वे पंजाब, कश्मीर और राजस्थान के प्रवास पर गए। उन्होंने देशवासियों को पुकार-पुकार कर कहा—तुम सभी में ब्रह्म की शक्ति है, दरिद्रों के भीतर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भगवान तुम्हारी सेवा पाना चाहता है", इस प्रकार स्वामीजी दरिद्रनारायण की सेवा के साथ एकाकार हो गये।

इस बीच स्वामीजी के पास विदेशों से निरन्तर निमंत्रण आते रहे। उनकी वाणी से अभिभूत पश्चिमी देशों के लोग उनके दर्शन और प्रवचन के लिए लालायित थे। वे एक बार फिर विदेश रवाना हुए। इस बार अमरीका में एक वर्ष रहकर वे पेरिस, वियना, हंगरी, सर्विया, बलगारिया, कुस्तुन्तुनिया होकर मिस्र का भ्रमण करते हुए बम्बई से बेलूर लौटे। अनवरत परिश्रम से उनका स्वास्थ्य काफी बिगड़ चुका था। इसके बाद स्वामी जी इतने अस्वस्थ हो गए कि उनके लिए कहीं भी आना-जाना दूभर हो गया। रोग शय्या पर पड़े हुए भी वे भारत के पुनः जागरण के बारे में सोचते रहते थे। उन्होंने लेटे ही लेटे अपने एक शिष्य को पत्र लिखा—"जब तक प्राण मेरे शरीर को छोड़ न देंगे, तब तक मैं काम करता रहूंगा और मृत्यु के बाद भी संसार के कल्याण के लिए काम करता जाऊंगा।"

रोग शय्या पर पड़े होने की स्थिति में डाक्टर उन्हें आराम करने की सलाह देते तो वे कहते "यदि स्वदेश वासियों की आत्माओं को प्रबुद्ध करने के लिए मुझे सैकड़ों बार मृत्यु यातनाओं का कष्ट भोगना पड़े तो भी मैं पीछे न हटूंगा।"

४ जुलाई सन् १९०२ को प्रातः स्वामी जी सामान्य स्थिति में नहीं थे। उनकी खिन्नता इस सीमा तक बढ़ गई थी कि वे बीच-बीच में बोल उठते—"कोई है जो समय की चुनौती को स्वीकार कर इन ऋषि-सन्तानों को पतन की ओर जाने से बचा सकें; जो इस भौतिकवाद की चकाचौंध में मानव को उसका जीवनोद्देश्य बता सके, उसे राह दिखा सके?" शायद वे उस दिव्य ज्योति पुरुष की खोज में थे, जो उनके अधूरे काम को पूरा कर सके। सबके देखते ही देखते वे अन्तिम श्वास खींचकर उस दिव्य ज्योति में मिल गए जिसके वे अंश थे। स्वामी विवेकानन्द चले गए, लेकिन वे अपने तप-तेज से इतना प्रकाश फैला गये जो युग-युग तक भारत को प्रकाश देता रहेगा। □

भारत उनका जो भारत के। विदेशी पादरियों को देश से निकाला जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज्याभिषेक के समय राष्ट्रपति की प्रतिज्ञा

—डा० रामनाथ वेदालंकार

यजुर्वेद के दशम अध्याय में राजसूय यज्ञ का वर्णन है। प्रारम्भिक मन्त्रों में राज्य के चुने हुए प्रतिनिधियों की ओर से पुरोहित द्वारा राष्ट्र- पति का अभिषेक किया गया है। अन्त में अभिषिक्त राष्ट्रपति सबके सम्मुख प्रतिज्ञा करता हुआ कहता है—

सवित्रा प्रसवित्रा, सरस्वत्या वाचा, त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभि, इन्द्रेणास्मे, वृहस्पतिना ब्रह्मणा, वरुणेनौजसा, अग्निना तेजसा, सोमेन राज्ञा, विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्रसर्पामि ।। यजु० १०.३०

शब्दार्थ— (प्रसवित्रा सवित्रा) प्रेरक सविता से (वाचा सरस्वत्या), वाग्देवी सरस्वती से, (रूपैः त्वष्ट्रा) रूपों के अधिपति त्वष्टा से, (पशुभिः पूष्णा) पशुओं के अधिपति पूषा से, (अस्मे इन्द्रेण) अपने सजातीय इन्द्र से, ब्रह्मणा बृहस्पतिना) ब्रह्मत्व के अधिपति बृहस्पति से, (ओजसा वरुणेन) ओजस्वी वरुण से, (तेजसा अग्निना) तेजस्वी अग्नि से, (राज्ञा सोमेन) राजा सोम से, और (दशम्या देवतया विष्णना) दसवें देव विष्णु से (प्रसूतः) प्रेरित होकर (प्रसर्पामि) मैं चलूंगा।

हे राष्ट्र के योग्यतम प्रतिनिधियो ! आज आप सबने एक हो राष्ट्रपति का यह गौरवपूर्ण पद देकर मुझे जो सम्मान प्रदान किया है, उसके लिए मैं आपका आभार मानता हूं। आज इस सिंहासन पर बैठकर मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि यह पद कितना गुरुतर है और कितना उत्तरदायित्वपूर्ण है। मैं जितना ही अधिक इस पद के गौरव का ध्यान करता हूं, उतना ही अधिक विनम्रता से मेरा मस्तक झुक जाता है। यह पद तो देवों का पद है। इन्द्र, वायु, यम, सूर्य. अग्नि, वरुण आदि देवों का अंश लेकर राष्ट्रपति का निर्माण होता है, यह स्मृतिकारों का कथन अक्षरशः ठीक है। अतः अपने विषय में भी मैं मानता हूं कि सच्चे अर्थों में मुझे देवों का अंश बनाना चाहिये। इस लिये आज मैं आपके सम्मुख उन सब देवों का स्मरण करना चाहता हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्वप्रथम मैं 'सविता' देव को स्मरण करता हूं। 'सविता' प्रसविता है, प्रेरणा का अधिपति है, सबको शुभ प्रेरणा करने वाला है। मैं प्रण लेता हूं कि मैं भी सविता बनूंगा। देश की प्रजा को कर्त्तव्य की प्रेरणा करना मैं अपना परम कर्त्तव्य समझूंगा। यदि कभी मेरे देखने या सुनने में आयेगा कि मेरे देश के कोई ब्राह्मण ब्राह्मणत्व से च्युत हो रहे हैं, कोई क्षत्रिय क्षात्र-धर्म से च्युत हो रहे हैं, कोई वैश्य वैश्यत्व से च्युत हो रहे हैं, कोई श्रमिक श्रम से च्युत हो रहे हैं, तो उन्हें कर्त्तव्य पालन की प्रेरणा पहुंचाना मेरा सबसे पहला कर्त्तव्य होगा। मैं सविता बनकर राष्ट्र में राजनियमों को प्रेरित करूंगा, मैं सविता बनकर प्रजा को सदा अच्छे कर्मों के लिये प्रोत्साहित करूंगा। मैं 'सत्यप्रसव' बनूंगा, सचाई की प्रेरणा करूंगा।

सविता के बाद मैं वाग्देवी 'सरस्वती' का स्मरण करता हूं। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपने राज्यकाल में सदा सरस्वती की आराधना करता रहूंगा। अपने देश की भाषा का गौरव बढ़ाने, उस भाषा में सब प्रकार का साहित्य सर्जन करने को प्रोत्साहित करूंगा। मेरा प्रयत्न होगा कि मेरे देश की भाषा में ऊंचा काव्य हो, मेरे देश की भाषा में ऊंचे से ऊंचा विज्ञान हो, संसार की बड़ी से बड़ी भाषाओं में जो भी उच्च साहित्य है उससे मेरे देश की भाषा वंचित न हो।

सरस्वती के बाद मैं 'त्वष्टा' को स्मरण करता हूं त्वष्टा रचना का देव है, रूप प्रदान करने वाला है, मैं भी त्वष्टा बनूंगा, राष्ट्र में नवीन-नवीन रचनात्मक कार्यों को प्रगति दूंगा। जिन वस्तुओं का मेरे देश में इस समय निर्माण होता है, उनके निर्माण को मैं अधिक उन्नत करूंगा और जिन वस्तुओं के लिए मेरे देश को अन्य देशों पर अवलम्बित रहना पड़ता है उनसे भी जिनका निर्माण मेरे देश में सम्भव है, उनके निर्माण को प्रोत्साहन दूंगा। मैं अपने देश के कला-कौशल को इतना विकसित करूंगा कि मेरे देश की बनी कलापूर्ण वस्तुओं का प्रयोग करने में अन्य देशों के लोग भी गौरव अनुभव करेंगे।

त्वष्टा के बाद मैं 'पूषा' का स्मरण करता हूं। 'पूषा' पशु-समृद्धि का देव है। वह हरे-भरे खेतों को देने वाला है, अन्न से भूखों का पेट भरने वाला है। वह मार्ग रक्षक है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं भी 'पूषा' बनूंगा। मैं अपने देश में पशु-पालन का अच्छे से अच्छा प्रबन्ध करूंगा, गाय, बैल, हाथी, घोड़े, भेड़, बकरी आदि उपयोगी पशुओं के पालन के नवीन वैज्ञानिक ढंग का देश में प्रचार करूंगा, देश में स्थान-स्थान पर गौशालायें खुलवाकर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुद्ध दूध, मक्खन आदि को प्रत्येक देशवासी के लिए सुलभ कर दूंगा। मैं गो हत्या को भी रोकूंगा। मैं देश में कृषि के विकास का भी बीड़ा उठाऊंगा। खाद, जुताई, सिंचाई आदि के नवीन उपयोगी तरीकों का देश में प्रचलन कराऊंगा। कृषि के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए कृषि विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित करूंगा। ऐसा यत्न करूंगा कि देश की भूमि शस्य-श्यामला होकर अन्न से भर जाये, एक भी देशवासी भूखा न रहे। मैं पूषा से यह भी शिक्षा लेता हूं कि यातायात के लिये सड़कों की भी समुचित व्यवस्था कराऊंगा।

पूषा के बाद मैं अपने सजातीय 'इन्द्र' का स्मरण करता हूं। जैसे मैं आज राष्ट्रपति बना हूं, वैसे ही इन्द्र देवों का राष्ट्रपति है। वह 'विशौजा' है। मैं भी उस इन्द्र की तरह सच्चे अर्थों में 'विशौजा' बनूंगा, प्रजा को ही अपना ओज अपना बल समझूंगा, उसे अपना वध्य शिकार नहीं समझूंगा। इन्द्र वीरता का भी देव है। उसकी वीरता का वेदों में बहुत वर्णन हुआ है। वह वृत्र, अहि, शम्बर, शुष्ण, नमुचि आदि अनेक असुरों का संहारक तथा आर्यों का रक्षक है। वैसे ही मैं भी असुरों का संहार और आर्य प्रजा की रक्षा करूंगा। मैं अपने देश के नर-नारियों को भी वीर बनाऊंगा और उनके लिए सैनिक-शिक्षा का यथोचित प्रबन्ध करूंगा। इन्द्र ऐश्वर्य का अधिपति व ऐश्वर्यप्रदाता भी है। वैसे ही मैं ऐश्वर्याधिपति बनूंगा और राष्ट्र को समृद्धि व ऐश्वर्य के शिखर पर पहुंचाने के लिये यत्नवान् रहूंगा।

इन्द्र के बाद मैं उस 'बृहस्पति' का स्मरण करता हूं, जो ब्रह्मत्व का अधिपति है। ब्रह्म का अर्थ है ब्राह्मण बल, ज्ञान, आस्तिकता, धर्म। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि अपने देश में जहां इन्द्रत्व का, क्षात्रबल का विकास करूंगा, वहां साथ ही ब्रह्मबल का भी उत्थान करूंगा। मेरे देश में उच्चकोटि के स्वाध्यायशील ब्राह्मण पैदा हों, मेरा देश ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पिछड़ा न रहे, मेरे देश के लोग सच्चे आस्तिक और धर्मपरायण हों, इसके लिए मैं सदा यत्न कराता रहूंगा और मैं स्वयं भी राजनीति-विज्ञान का कुशल ज्ञाता, ईश्वर का स्मरण रखकर कार्य करने वाला तथा धर्मनिष्ठ बनूंगा।

बृहस्पति के बाद मैं ओजस्वी 'वरुण' का स्मरण करता हूं। वरुण पाशी है, उसके पास सैकड़ों पाश हैं, जिनसे वह अपराध करने वाले को बांधता है। कोई भी असत्य आचरण करने वाला उनके पाश से मुक्त नहीं हो पाता। वरुण के सहस्रों गुप्तचर हैं, जो सर्वत्र विचर रहे हैं। कोई भी कहीं भी जाकर छिप जाए, चाहे द्युलोक के भी परले पार पहुंच जाये, उनकी दृष्टि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से नहीं छूट पाता मैं भी वरुण जैसा बनने का ही प्रयत्न करूंगा। जहां सज्जन निर्भय होकर देश में स्वच्छन्द विचरेंगे, वहां अपराधियों को मैं पाश से हथकड़ी-बेड़ियों से बाधूंगा भी और तब तक वे मुक्त नहीं हो पायेंगे जब तक अपने अपराध का यथोचित दण्ड नहीं भोग लेंगे। मैं देश की एक-एक गतिविधि से परिचित रहूंगा। चारों ओर मेरे गुप्तचर छूटे रहेंगे जो देश के कोने-कोने की खबर मुझे पहुंचाते रहेंगे। मैं भी वरुण की तरह प्रजा के सत्यानृत को देखता रहूंगा और सत्य को प्रोत्साहित तथा असत्य का दमन करता रहूंगा।

वरुण के बाद मैं तेजस्वी 'अग्नि' का स्मरण करता हूं। मैं अग्नि के समान स्वयं प्रकाश-पूर्ण तथा दूसरों को प्रकाश देकर राह दिखाने वाला बनूंगा। मैं बुझे कोयले की तरह निस्तेज होकर नहीं पड़ा रहूंगा, अपितु अग्नि-ज्वाला की तरह चमकूंगा। जैसे अग्नि की ज्वाला को कोई कितना ही नीचा करना चाहे, वह सदा ऊपर को ही ऊठती है वैसे ही विघ्न, शत्रु या परिस्थितियां मुझे कितना ही नीचे दबाने का यत्न करें, मैं ऊपर ही उठूंगा, बल्कि जितने वेग से मुझे नीचे दबाने का यत्न किया जायेगा, उसके दूने वेग से मैं ऊपर उठूंगा, और राष्ट्र को भी ऊपर उठाऊंगा। अग्नि में जो आहुति डाली जाती है, उसे वह अपने पास नहीं रख लेता, किन्तु उसका रूपान्तर करके उसे सार्वजनिक हित के लिए वायुमण्डल में चारों ओर फैला देता है। वैसा ही प्रजा द्वारा जो आहुति मुझ में पड़ेगी, जो कर (टैक्स) राष्ट्र को प्राप्त होगा उस मैं सार्वजनिक हित के कार्यों में ही व्यय करवाता रहूंगा। अग्नि मनुष्यों और देवों के बीच में दूत का कार्य करने वाला है, वह मनुष्यों की प्रार्थना पर उनके पास देवों को बुलाकर लाता है और मनुष्यों के दिये हव्य को देवों के पास पहुंचाता है। मैं भी प्रजा और देवों (विद्वानों) के बीच में यह दूत-कार्य करने में अपना गौरव मानूंगा। किसी स्थान की प्रजा जिस देव को, जिस विद्या के विद्वान् को, जिस विशेषज्ञ को अपने बीच बुलाना चाहेगी, उसे उसके पास पहुंचाने का मैं यत्न करूंगा। इस प्रकार मैं कृषि-विशेषज्ञ, चिकित्सा-विशेषज्ञ, ज्योतिर्विद्या-विशेषज्ञ आदि विविध देवों को प्रजा के पास पहुंचाने वाला देवदूत बनूंगा। साथ ही प्रजा की दी हुई आहुति को देवों के पास पहुंचाने रूपी दूसरे दूत-कार्य को भी मैं करूंगा। प्रजा जिस विद्या की उन्नति के लिए जो दान मुझे भेजेगी उसे मैं उस-उस विद्या के अनुसन्धानादि कार्य में संलग्न विशेषज्ञ के पास पहुंचा दूंगा। एवं मैं सच्चे अर्थों में अग्नि बनने का यत्न करता रहूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अग्नि के बाद मैं राजा 'सोम' का स्मरण करता हूं। सोम नक्षत्रराट् चन्द्रमा है। चन्द्रमा की तरह मधुर, सौम्य और आह्लादक बनूंगा। एक ओर जहां मुझ में अग्नि जैसा प्रचण्ड तेज होगा वहां दूसरी ओर चन्द्र जैसा मधुर तेज भी होगा। मैं पूर्णिमा के चन्द्र की तरह षोडश कलाओं से समृद्ध भी बनूंगा। इस आकाशीय सोम के अतिरिक्त एक अन्य सोम पृथ्वी पर भी है, जो औषधियों का राजा है और जिसका रस रोग तथा निर्बलता को हर कर अमरता देने वाला है। वैसे ही-मैं भी मरते हुओं के लिए अमृत-रस बनूंगा, निर्बलों का बल बनूंगा, रोगियों के रोग हरने वाला बनूंगा। अपने राज्य में सोम-विद्या या औषधि-विज्ञान को भी विकसित करूंगा। यह सब सन्देश मैं सोम राजा से ग्रहण करता हूं।

अन्त में मैं व्यापकता के देव त्रिविक्रम 'विष्णु' को स्मरण करता हूं, जिस देव ने अपने तीन चरणों से त्रिलोकी माप लिया है। मैं भी त्रिलोकी में कदम रखूंगा, ज्ञान के चरणों से त्रिलोकी में व्यापक हो जाऊंगा। मेरे देश के अध्यवसायी ब्राह्मण वैज्ञानिक त्रिलोकी की कोई वस्तु अज्ञात नहीं छोड़ेंगे। यही क्यों, मेरे देश के वैज्ञानिक ऐसे यन्त्रों का भी आविष्कार करेंगे जिनसे हम त्रिलोकी की यात्रा कर सकेंगे। इस त्रिलोकी के अतिरिक्त मेरी एक और भी त्रिलोकी है। मेरे देश के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ये तीन लोक हैं। वैश्य पृथिवी लोक है, क्षत्रिय अन्तरिक्ष लोक है, और ब्राह्मण द्युलोक है। इसमें स्नेह-भाव से मैं व्याप्त रहूंगा, तीनों के हृदयों में अपना स्थान बनाऊंगा।

आज आप सबके सम्मुख मैं इन प्रतिज्ञाओं को लेता हूं। दसों देवों से प्रेरण ग्रहण करता हुआ ही मैं राष्ट्रपति के कार्यभार को वहन करूंगा। प्रभु मुझे बल दे कि मैं अपनी इन प्रतिज्ञाओं पर सदा स्थिर रहूं। □

---

(१) एक बार किसी किसान के खलिहान से गेहूं की बोरों की चोरी हो गयी, लोगों ने कहा "पुलिस में रिपोर्ट करो।

किसान ने उसे मृदु भाव से बतलाया, 'चोर से पुलिस कहां आएगी और और पुलिस को अपने घर पर बुलाकर मैं अपना बाकी गेहूं भी गवाना नहीं चाहता।

(२) पिता अपने बेटे से—बेटे तुम टाइम से पढ़ने क्यों नहीं जाते।

पुत्र—इसलिए कि वह समय मेरे खेलने का है। आपने ही तो कहा था टाइम से खेलने जाया करो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनों से अपनी बात—
उत्तिष्ठत जाग्रत......

—प्रदीपकुमार आर्य

हमारी आज की सबसे बड़ी समस्या है भोगवाद। हम अपनी संस्कृति से विमुख हो गए हैं। अपने इतिहास को भूल गए हैं। हमारी युवा पीढ़ी फिल्मों के पीछे दीवानी है। इस स्थिति को बदलना है, अन्यथा विनाश का सामना करना होगा।

"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" कितना सुन्दर और महान् नारा है। इसके लिए कितने बलिदान हुए। इससे एक नए युग का सूत्रपात हुआ। एक नई दिशा हमें मिली। "वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है" यह घोषणा गगनमण्डल में गूंज उठी। पाखण्ड खण्डिनी भूमण्डल पर लहरा उठी। आह, क्या दिव्य मानव हमारे बीच आविर्भूत हुआ, जिसकी वेदना "मेरी आंखें वह दिन देखने को तरस रही है। जब काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक आर्यों का एकछत्र राज्य स्थापित होगा" में स्पष्ट झलकती है। हर भारतीय आर्य बने, यह एक इच्छा थी, जिससे प्रेरित वह महापुरुष सतत संघर्षों से जूझता हुआ, विधर्मियों का पर्दाफाश करता हुआ, वह ब्रह्मनिष्ठ योगी हलाहल विषपान करके महामृत्यु की गोद में समा गया। मुझे कभी-कभी असामान्य-सा महसूस होने लगता है, जब यह विचार उठता है कि वह दयानन्द अपना उत्तराधिकार हमें दे गया है—अपनी विशाल सम्पत्ति हमें सौंप गया है। मित्रो ! क्या यह सच है......हां हां बिल्कुल सच है वास्तव में हम उसके उत्तराधिकारी हैं, एक देवर्षि के अनुयायी हैं। अरे, तो फिर हमें नींद क्यों सता रही है ? यह प्रमाद क्यों हमारे जीवन से खिलवाड़ कर रहा है ? यह स्वार्थ और निकृष्ट भोगवाद क्यों हमारी संस्कृति के गौरव को कुचलता हुआ निर्मम अट्टहास कर रहा है। यह हमें त्रिद्वेष में जला रहा है। दुःख का विषय है कि आज हमारा राष्ट्र अत्यन्त खतरनाक दौर से गुजर रहा है। ओह, यह विचारों का प्रदूषण, भावनात्मक प्रदूषण जिससे हमारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्त:पटल धुंधले हो गये हैं। हमारे चरित्रों पर यह कालिमा, गन्दी कालिमा का आवरण छाया हुआ है। हम आर्य कहलाने वाले भारतीय गहन अन्धकार, घोर निराशा, दुःख और अविद्या के गहन गर्त में गिरते जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानो कठोर कल्मषों का समुद्र हिलोरें भर-भर कर हमारी वैदिक संस्कृति का उपहास कर रहा हो अथवा घोर निराशा, दुःख, नास्तिकवाद की काली घटायें घिरती आ रही हों। क्या कहें, कैसे कहें, स्थिति वहुत नाजुक होती जा रही है। अणु बमों के दौर से गुजरता यह क्रूर मानव "मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे"—यजुर्वेद ३६।१८ का मजाक उड़ा रहा है। युगपुरुष गांधी की भावनाओं को पैरों तले कुचल रहा है। तब क्या यह शान्ति के अग्रदूत गांधी का युग है? बुद्ध और महावीर का युग है? नहीं-नहीं लगता है। असुरता के घटाटोप तम से परिपूर्ण यह रावण व दुर्योधन का युग है। दैत्यों ने आज फिर देवों को परेशान कर रखा है, परन्तु कोई दधीचि दिखाई नहीं देता। आज जहां एक ओर मानवता आतंकवाद और हिंसा से ग्रस्त है वहां दूसरी ओर भोगवाद रूपी राक्षस हमें सता रहा है। ये भव्य अट्टालिकायें, मठाधीशों के ये मन्दिर और स्वर्ण कलश अन्याय शोषण के कुचक्र में फंसे गरीबों, दलितों की झुग्गी झोंपड़ियों के करुण क्रन्दन। को सुन आनन्दित हो रहे हैं। गांधी और दयानन्द के भटकते अनुयायियो, कब तक चलेगी यह व्यवस्था? ये भोगवादी रोज दावतें उड़ाते रहेंगे, सबका अन्नदाता मजदूर और किसान शोषण के चक्र में फंसा रोटी के लिए भटकता रहेगा। आज बड़े दुःख का विषय है कि हमारी युवा पीढ़ी तेजी से पतन को जा रही है। हमारे आर्य नौजवान विलसिता में फंसे, फिल्मी दुनिया में डूबे, दुःशासन के सदृश अश्लील नग्न चित्रों के हमजोली वने ये कृत्रिम अंग्रेज अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। आज वहुत से आर्य नौजवान, आर्यसमाज के सदस्य कुछ अंशों में इस महामारी से ग्रस्त है। स्त्री का घोर अपमान हो रहा है और हम प्रसन्न हो रहे हैं। आर्यवीरो, हम अपनी संस्कृति से विमुख हो गये, अपने इतिहास को भूल गये। हमें शर्म आती है राम और कृष्ण की गाथा सुनने में, हमें घृणा होती है। ऋषियों की जीवनियां पढ़ने में। हमें स्वाध्याय की फुर्सत नहीं है, वैदिक साहित्य पढ़ने की फुर्सत नहीं है, सत्संग में जाने की फुर्सत नहीं है। हम उपन्यास पढ़ सकते हैं,, अश्लील कहानियां पढ़ सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं, महफिल में बैठे गप्पें लड़ा सकते हैं। हां-हां, क्यों नहीं, यह तो हमारी आदत है। ओह! अब भी जाग लो, उठो देखो आज भी पाखण्डियों की बाढ़ आ रही है। गद्दार व्यक्ति धर्म की आड़ में झूठे चमत्कारों से हमारे आदर्शों को मिटाते जा रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। पंथों और सम्प्रदायों की सीमायें बढ़ती जा रही हैं। जिस राष्ट्र में युगद्रष्टा का सत्यार्थ-प्रकाश अपनी अमर वाणी का प्रसार कर रहा हो, जिस राष्ट्र में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम व योगिराज भगवान् कृष्ण जैसे देवताओं की प्रेरणा हो, ऋषियों की स्थली हो, वहां लोग मदोन्मत्त पाखण्डी कृत्रिम भगवानों के शिकंजे में फंसते जायें, मन्दिरों में देवदासियों के साथ बीभत्स कुकर्म किये जायें, "सम्भोग से समाधि जैसे सिद्धान्तों वाले घिनौने पंथ अनभिज्ञ भोली जनता को पथभ्रष्ट करते रहें। मिशनरी अपने षड्यन्त्र में दलितों को फंसाते रहें, भाई-भाई का रक्त पीने को उतारू होते जायें, नौजवान काम वासनाओं में फंसे जीवन को बर्बाद करते जायें, यह बड़ी शर्म की बात है। ओह दयानन्द के भटकते अनुयायियो, इस विध्वंस यज्ञ को रोकना है तो हमें संघर्ष करना होगा। महान् त्याग और तपस्या की ओर जाना होगा। जरा जागो तो सही देखो यह धुंआं नजर आ रहा है। हमारे पूर्व आदर्शों के पुष्पों में पराग नहीं रहा, वे कुम्हला गये हैं। ऐसी स्थिति में वे बन्धु जो किसी न किसी तरह आर्यसमाज से सम्बन्द्ध हैं, उन्हें इस समय सतर्क रहना होगा, जानना होगा तथा अपने लक्ष्य का विशेष ध्यान रखना होगा। स्मरण रहे, हमारा लक्ष्य दूसरों कोसुधारना ही नहीं, बल्कि सर्वोच्च लक्ष्य योग साधना द्वारा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति भी है। अरे निकाल फेंको आर्य-समाज से गन्दी राजनीति को, गन्दी विचार-धाराओं को हमें महापुरुषों से अपनी तुलना करते हुए अपने चरित्रों का परिष्कार करना होगा। क्या हम 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नाटक कर रहे हैं ? सावधान मित्रो अतीत की स्मृतियां हमें धिक्कार रही है। व्योममण्डल में विचरती ऋषि आत्मायें खून के आंसू बहा रही हैं हमें देखकर, परन्तु हमारी आंखों में पानी नहीं है। अब हमें जागना होगा, आज इस राष्ट्र को पुनः दयानन्द की जरूरत है, श्रद्धानन्द की जरूरत है। ये विभूतियां आसमान से नहीं उतरेंगी। नहीं ये हममें ही छिपी हैं, जिनके जागने भर की जरूरत है। "यह कार्य असम्भव है" ऐसा कहना हमारी कायरता है, आत्महीनता है। तब दयानन्द के भटकते अनुयायियो जाग उठो, आज फिर आंधी उठाने का समय आ गया है। हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी, निभानी होगी अन्यथा हमारे आदर्श अतीत के गर्भ में छिपे रह जायेंगे। अतः अब भी जाग जाओ, अपनी संस्कृति की रक्षा करो वेद कहता है "यथो रक्ष धिया कृतान्।" इसके लिए आइये हम संकल्प करें कि हम वेद के आदर्शों पर चलते हुए, संघर्षों से जूझते हुए, राष्ट्र व समाज के लिए अपने को समर्पित कर देंगे और एक उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होंगे। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दान-दाताओं की सूची

११०१) श्री वाम्बे बोरिंग वर्क्स, बम्बई, ५०१) कलाकेन्द्र बासवाड़ा, ५००) श्री रतनलाल गुप्त दिल्ली, १०१) श्री प्रेमचन्द पंडित चण्डीगढ़, १०१) श्री मन्त्री आर्य समाज दिल्ली-१८, १०१) श्री रामकृष्ण गुप्त दिल्ली, १०१) श्रीमती निर्मला जी गाजियाबाद, १००) श्री पूनमचन्द अग्रवाल हैदराबाद, ५१) श्री अजयकुमार दिल्ली, ५१) श्री हरीसिंहमावर्मा, ५१) श्री सत्यदेव दिल्ली, ५१) आर्य समाज सिकन्दराबाद, ५१) डा० आर०के० गोयल नई दिल्ली, ५०) श्री आनन्दभूषण शर्मा इलाहाबाद, ५०) श्री अवधेशशर्मा ग्वालियर,२५) श्री स्वामी बिशनदास कोटा ,२१) श्री रतनलाल गुप्ता दिल्ली,२१) श्री नारायण दास जी हैदराबाद, २०) श्री हीरालाल नई दिल्ली, २०) श्री हीरालाल पहाड़गंज, ११) श्री हरीसिंह वर्मा दिल्ली, ११) श्री गोविन्द तुलसीराम जी, १०) श्री किशोरी लाल आर्य लुहारू, ५) श्री श्रीमती इन्द्रा देवी गुप्ता भुंमेर, ५) श्री आर्य उद्योग कुटीर भीलवाड़ा, ५) श्री सोहनलाल सोनी भीलवाड़ा, ५) श्री सूबेदार सुभाष राम शर्मा ।

सुयोग्य कन्यायें चाहिए

'कन्या ही दहेज है ?के मानने वाले परिवार के स्वयं के रोजगार से लगे हुए सुसम्पन्न २५-वर्षीय हाई स्कूल तथा २३-वर्षीय एम० काम० सुन्दर, स्वस्थ, सुयोग्य, स्वरोजगारी, स्वावलम्बी, संस्कारी, सनाढ्य ब्राह्मण युवकों के लिए स्वस्थ, सुघड़ सुन्दर-सुस्वभावी कन्यायें चाहिये । दोनों युवक पृथक् पृथक् स्वयं की जमीन-जायदाद के स्वामी हैं तथा स्वयं केव्यापार में संलग्न हैं । विज्ञापन उत्तम चयन के लिए है । कन्याओं का सुन्दर होना परमावश्यक है । अविलम्ब सम्पर्क करें — 'निर्भय हाथरसी, निर्भय नगर' हाथरस (अलीगढ़) २०४१०१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज के विशिष्ट कार्य

(१) मनुष्य में संस्कारों के विकास हेतु जन्म के पूर्व से मृत्युपर्यन्त सोलह संस्कारों की व्यवस्था। एक ईश्वर की उपासना व उसका सही रूप।

(२) सोलह संस्कार, वर्णआश्रम व्यवस्था, पंचयज्ञ, यम, नियम, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि द्वारा चरित्र निर्माण।

(३) आर्यसमाज में साप्ताहिक सत्संग, वार्षिक उत्सव, वेद-विषयक प्रतियोगितायें व वेदों का पठन-पाठन।

(४) भारतीय संस्कृति को विश्व के सामने प्रमाण के साथ सर्वोपरि सिद्ध करना व भारतवासियों के स्वाभिमान को जागृत करना, स्वदेश व स्वसंस्कृति के प्रति श्रद्धा पैदा करना, विदेशी शासन को उखाड़ फेंकने की प्रेरणा देना और स्वराज्य की उपयोगिता बताना।

(५) मनुष्य को स्वास्थ्य की शिक्षा और उसके चरित्र का विकास।

(६) शिक्षा के विकास हेतु डी०ए०-वी० कालेजों व गुरुकुलों की स्थापना व आचरणशील विद्वानों द्वारा शिक्षा।

(७) शिक्षा को लिंगभेद व जाति भेद से अलग करना, सह-शिक्षा निषेध करना, नारी शिक्षा को उचित स्थान तथा आर्य कन्या विद्यालयों व गुरुकुलों की स्थापना।

(८) राजनीति व धर्म में समन्वय व वैदिक शासन व्यवस्था की कल्पना।

(९) जाति प्रथा निवारण।

(१०) वर्णव्यवस्था कर्म से न कि जन्म से।

(११) छुआछूत निवारण, अछूतोद्धार और शुद्ध आन्दोलन।

(१२) बाल विवाह निषेध, विधवा विवाह का प्रचलन, सती प्रथा का अन्त और दहेज प्रथा का उन्मूलन।

(१३) दीन-दुखियों व अनाथों की सेवा, दयानन्द अनाथालयों की स्थापना।

(१४) सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण व सामाजिक कानून निर्माण, मद्यपान, धूम्रपान और बलिप्रथा जैसी कुरीतियों का उन्मूलन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१५) शब्दों का सही अर्थ, ऋषि ग्रन्थों का [illegible] और धर्म का सही रूप। जिस वैदिक संस्कृति से भारत कभी विश्व गुरु था उस संस्कृति का पुनरुत्थान।

(१६) जनता की सेवा हेतु अनाथालय, औषधालय, वाचनालय, विद्यालय की स्थापना। आर्य वीरांगना दल, आर्य वीरदल तथा आर्य कुमार सभा का गठन।

(१७) देश-विदेश में हिन्दू हितों की रक्षा। □

बम्बई में महर्षि निर्वाण सप्ताह का आयोजन

बम्बई। आर्य समाज सान्ताक्रुज द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। १३-११-८५ को महर्षि के जीवन से सम्बन्धित कार्यक्रम दूरदर्शन केन्द्र पर बम्बई, हैदराबाद तथा बंगलौर केन्द्रों से एक साथ प्रसारित किया गया।

१७-११-८५ को बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य-समाज मन्दिर सान्ताक्रुज में माननीय श्री शिवाजीराव पाटिल निलंगेकर (मुख्यमंत्री महाराष्ट्र राज्य) के सभापतित्व में महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस का आयोजन किया गया। श्री रामचन्द्र राव पाटिल (विधि,न्याय एवं तकनीकी शिक्षा राज्यमंत्री) तथा श्री दयानन्द आर्य मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर बोलते हुए श्री निलंगेकर ने कहा कि मैं आर्यसमाजी होने के कारण ही मुख्य मन्त्री के पद तक पहुंचा हूं।

समारोह का संयोजन कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के सप्ताह के ही सन्दर्भ में दिनांक २४-११-८५ से २७-११-८५ तक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला में निरन्तर ४ दिन तक महर्षि के जीवन चरित्र डाक्टर सविस्तर श्री भवानीलाल भारतीय (अध्यक्ष दयानन्द पीठ, चण्डीगढ़) के व्याख्यान हुए।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

—डा० बोधायन

स्वास्थ्य के संबंध में लोगों की धारणायें अलग-अलग होती हैं और एक सामान्य व्यक्ति तो अपने को तभी अस्वस्थ कहता है जब उसका अहसास कोई डाक्टर कराता है या वे स्वयं ही अपना कार्य करने के लिए असमर्थ हो जाते हैं। मोटे व्यक्ति को कोई खाते-पीते घर का कहकर उसे स्वस्थ कहता है और कोई अधिक ताकत वाले व्यक्ति को स्वस्थ मानता है। किसी रोग कीटाणु न होना ही कोई स्वास्थ्य का लक्षण मानते हैं। परन्तु इन बातों से आप अपने स्वास्थ्य की सही पहचान नहीं कर सकते।

भारतीय चिकित्सा शास्त्र ने स्वास्थ्य की निम्न परिभाषा दी है—

समदोष: समाग्निश्च समधातुमलक्रिय: ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमना: स्वस्थ इत्यभिधीयते ।।'

आपका स्वास्थ्य

अर्थात् वही व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ है जिसके शरीर में वात यानी स्नायु-मण्डल, पित्त यानी पाचकाग्नि एवं रक्त-संवहन और कफ यानी ओज तथा मलोत्सर्ग ये तीनों ही निश्चित अवस्था में बराबर-बराबर, एक समान हों और तीनों ही कार्य प्रणालियां यथावत् कार्य करती हों। इसके साथ ही जिसकी आत्मा, मन और इन्द्रियां प्रसन्न और संतोषी रहें। स्वास्थ्य के इन लक्षणों में जीवन के समस्त पहलुओं का समावेश हो जाता है। सम्भवत: संसार के किसी चिकित्सा शास्त्र में स्वास्थ्य की इतनी सूक्ष्म व्याख्या नहीं मिलती।

स्वास्थ्य की पहचान कैसे करें?

अपने स्वास्थ्य की पहचान करने के लिए दो बातों पर विचार करिए—

१. स्वस्थ्य रहने के लिए आपको जो करना चाहिए, वह कितना कर पाते हैं ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२. स्वास्थ्य विरोधी बातों या कार्यों से आप कितना बच पाते हैं ? वास्तव में ये दोनों ही बातें एक-दूसरे की पूरक हैं। एक पक्ष पूरा ही तब हो सकेगा जब दूसरा पक्ष भी मान्य होगा। वात, पित्त और कफ की साम्यावस्था की बात यदि आप ठीक प्रकार से नहीं समझ पाते तो निम्नलिखित प्रश्नावली का उत्तर हां या न में दीजिए। हां का उत्तर स्वास्थ्य का परिचायक है। अपने उत्तरों से आप अपने स्वास्थ्य की पहचान स्वयं कर लेंगे और यदि आप वास्तव में स्वस्थ रहना चाहते हैं तो अपने नकरात्मक उत्तरों को हां में बदलने का प्रयास कीजिए—

१. आपको सुखमय स्वप्नरहित निद्रा आती है ?

२. प्रातः उठने पर शान्त और स्थिर बुद्धि होते हैं ?

३. शौचक्रिया में मलविकार पूरी तरह निकलकर पेट साफ हो जाता है ?

४. सारे दिन के कार्यों को सुचारु रूप से चलाने के लिए आप प्रातः ही संतुलित योजना बना लेते हैं और उसी के अनुसार कार्य करते हैं ?

५. प्रातः उठते ही उषाःपान करते हैं।

६. किसी कारण से शौचक्रिया में देर लगने की स्थिति में शौचालय में समाचार पत्र, पत्रिकाएं आदि नहीं पढ़ते हैं ?

७. शौच की हाजत के लिए चाय-काफी; सिगरेट आदि नहीं पीते हैं ?

८. मल-मूत्र के त्याग की कभी उपेक्षा नहीं करते ?

९. शरीर को स्वच्छ रखने के लिए घर्षण स्नान का प्रयोग करते हैं ?

१०. शरीर को स्वस्थ रखने के लिए नित्य योगाभ्यास करते हैं ?

११. मन को शान्त रखने के लिए नित्य ध्यान का अभ्यास करते हैं ?

१२. अपनी आस्था और विश्वास के अनुसार परमात्मा का भजन करते हैं ?

१३. नाश्ता करने में गरिष्ठ भोजन नहीं करते ?

१४. दायें स्वर में भोजन और बायें स्वर में पानी पीने का नियम बना लिया है ?

१५. भोजन करते समय अधिक पानी नहीं पीते ?

१६. भोजन के दोषों से बचे रहने का पूरा प्रयास करते हैं ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७. भोजन सदैव शान्त भाव से करते हैं और भोजन के समय किसी से ातचीत नहीं करते ?

१८. भोजन के बाद यथेष्ट विश्राम करते हैं ?

१९. अधिकांश समय शिर, गर्दन और मेरुदण्ड को सीधा रखकर बैठते हैं ?

२० कार्य के बाद थकान होने पर उसे दूर करने के लिए किसी नशीले दार्थ का सेवन नहीं करते ? उसकी बजाय शिथिलीकरण तथा गहराई से वास-प्रश्वास लेते हैं ?

२१. कार्य करते समय अपने को भरसक तनाव से दूर रखते हैं ?

२२. अपने कार्य को सदैव व्यवस्थित रखने का प्रयास करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर कोई चीज सरलता से मिल जाती है ?

२३. दिन में तय किए गए अधिकतर कार्य पूरे कर लेते हैं ?

२४. अपने सारे कार्य में पूरी रुचि लेते हैं और अपने कार्य के संबंध में बराबर शिकायत ही नहीं किया करते हैं ?

२५. अधिकतर सहयोगियों से प्रेम और सद्भावना का व्यवहार करते हैं ?

२६. विषम स्थिति के आने पर भी शान्त भाव से रहते हैं ?

२७. रात्रि में भोजन के सामान्य नियमों का पालन करते हैं ?

२८. अपने शरीर और मन की प्रकृति को पूरा सहयोग देने का प्रयास करते हैं ?

२९. शरीर को स्वस्थ और मन को शान्त रखने के लिए प्रायः सामान्य नियम-संयम का पालन करते हैं ?

उपर्युक्त प्रश्नावली पूरी नहीं है। फिर भी यदि आप इन प्रश्नों का उत्तर "हां" में देते हैं तो निश्चय ही समझिए कि आप स्वास्थ्य के मार्ग पर ठीक प्रकार से चल रहे हैं और आप प्रायः स्वस्थ रहेंगे। जितने अधिक प्रश्नों का उत्तर "न" में देते हैं उतना ही आप स्वास्थ्य से दूर हैं और यदि आपके सामने किसी रोग की स्थिति प्रकट नहीं है तो कुछ समय बाद ही रोगी होने के लिए तैयार हो जाइये। अपने स्वास्थ्य के बारे में आपको उदासीन नहीं होना चाहिए और न यह कभी सोचना चाहिए कि आजका दिन निकल गया, कलकी कल देखी जायेगी। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारत को तोड़ने के लिए विदेशी धन

—आलोक मेहता

बहुराष्ट्रीय निगम ईसाई मिशनों और तथाकथित स्वयंसेवी संगठनों को भारत में अस्थिरता पैदा करने तथा आतंकवादी गतिविधियां चलाने के लिए ार्थिक सहायता दे रहे हैं। केन्द्र सरकार अब इस स्रोत को मिटाने के लिए त बहुराष्ट्रीय संस्थानों और संबंधित संगठनों की छानबीन करवा रही है।

पता चला है कि गुप्तचर एजेंसियों ने हाल ही में सरकार को एक रिपोर्ट कर बहुराष्ट्रीय संस्थानों की इस 'संदिग्ध सहायता' के प्रति सचेत किया है। ताया गया है कि अमेरिका और पश्चिमी यूरोपीय देशों में इन संस्थानों के ख्यालय हैं। भारतीय चर्चों की राष्ट्रीय परिषद् बहुराष्ट्रीय निगमों और ारत में 'क्रांतिकारी परिवर्तन' के इच्छुक संगठनों के बीच तालमेल के लिए ध्यस्थ की भूमिका निभा रही है।

बताया जाता है कि तथाकथित खालिस्तान समर्थकों को अमेरिका में हर ंभव सहायता देने वाला संगठन 'इंटरनेट' दिल्ली फोरम फार क्रिश्चियन न्सर्न फार पीपुल्स स्ट्रगल, बम्बई अर्बन इंडस्ट्रियल लीग फार डेवलपमेंट, लित वायस, इंडियन सोशल इंस्टिट्यूट दिल्ली व मानव अधिकार संस्थान खनऊ को पालता-पोसता और जानकारियां इकट्ठी करता है। 'इंटरनेट' ो अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी सी० आई० ए० से सहायता मिलने का आरोप ी है।

इंटरनेट संगठन अमेरिका में सक्रिय तथाकथित खालिस्तानी नेता ० एस० भुल्लर और गंगासिंह ढिल्लों को समर्थन देने के साथ-साथ अमेरिकी ांग्रेस को यह समझाने में लगा रहा है कि भारत में सिखों पर बहुत जुल्म ए हैं और यह मानव अधिकारों की समस्या है।

इसी तरह इंटरनेट के जरिए भारत के दलितों पर तथाकथित अत्याचार े नाम पर दलित शोषित समाज संघर्ष समिति 'डी० एस०-४' मानव अधि-ारों के हनन की बात करती है। यह संगठन दलितों के लिए भारत में ्यापक क्रांति का सपना देखता है। संगठन अपने आंदोलन के लिए हर साल रीब-डेढ़-दो करोड़ रु० खर्च करता है।

डी० एस०-४ के अपने एक प्रकाशन 'ओप्रेस्ड इंडियन' से यह पता चलता ि कि वह दलित क्रांतिकारियों की फौज तैयार करने के लिए एक हजार रोड़ रु० खर्च करेगी। केवल अपने प्रकाशनों और प्रेस के लिए उसने १९९१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तक एक सौ करोड़ रु० के खर्च का बजट बनाया हुआ है। सवाल उठता है कि यह संगठन इतनी बड़ी धनराशि कहां से जुटा रहा है?

गुप्तचर एजेंसियों के अनुसार दलितों के नाम पर चलने वाले इस संगठन के नेता ईसाई मिशनों के अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लेते हैं और भारत में दलितों पर अत्याचार का विकराल रूप दिखाकर दलितों के अलग राष्ट्र के लक्ष्य की बात करते हैं। वे भारत में दलितों का आन्दोलन चलाने के लिए ईसाई मिशनों से आर्थिक सहायता लेने में भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करते। □

आर्यसमाज के कैसेट

मधुर एवं मनोहर संगीत में आर्यसमाज के ओजस्वी भजनोपदेशकों द्वारा गाये गये ईश्वरभक्ति, महर्षि दयानन्द एवं समाज सुधार से सम्बन्धित उच्चकोटि के भजनों के सर्वोत्तम कैसेट मंगवाकर-

आर्यसमाज का प्रचार जोरशोर से करें।

कैसेट नं. 1- पथिक भजन सिन्धु- गीतकार एवं गायक सत्यपाल पथिक का सर्वाधिक लोकप्रिय कैसेट।

2- सत्यपाल पथिक भजनावली- सत्यपाल पथिक का दूसरा नया कैसेट।

3- श्रद्धा- प्रसिद्ध फिल्मी गायिका आरती मुखर्जी एवं दीपक चौहान।

4- आर्य भजनावली- फिल्मी संगीतकार एवं गायक वेदपाल वर्मा।

5- वेदगीताञ्जलि- गीतकार एवं गायक- सत्यकाम विद्यालंकार

6- भजन सुधा- आचार्या प्रज्ञादेवी वाराणसी की शिष्याओं द्वारा गाये गये श्रेष्ठ भजन।

मूल्य प्रति कैसेट 1 से 3, 30 रु. तथा 4 से 6, 35 रु. है। डाक व्यय अलग
विशेष- 5 या अधिक कैसेटों का अग्रिम धन आदेश के साथ भेजने पर डाक व्यय फ्री। वी.पी.पी. से भी मंगा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान- आर्यसिन्धु आश्रम 141, मुलुण्ड कालोनी बम्बई-400082

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करेंगे योग, रहेंगे नीरोग

—योगाचार्य के. एस. गांगुली

योग एक ऐसी अद्‌भुत तथा आश्चर्यजनक भारतीय साधना है, जिससे हम सहज ही सुंदर शरीर, उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं। योग के सूक्ष्म रहस्यों के क्रमिक उद्‌घाटन से समूचा विश्व इस ओर आकर्षित हुआ। तथा भारतीय योग विश्वव्यापी योग नाम से लोकप्रिय हो गया है। एक प्राचीन उक्ति में शरीर को धर्म का साधन (शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्) कहा गया है परन्तु जिस शरीर की कल्पना उसमें की गई है वह सचमुच ऐसा शरीर होना चाहिए जिसमें मन और इन्द्रियों में पूर्ण समरसता हो। धर्म से अभिप्राय यहां किसी पूजापाठ से न होकर जीवन के कर्तव्य कर्मों से है, जिनकी पूर्ति में जीवन का सम्पूर्ण आनन्द समाया हुआ है। विद्वानों और वैज्ञानिकों के मत में योग जीवन जीने की वह आधारभूत कला अथवा विज्ञान है, जिससे मनुष्य जीवन का चरम लक्ष्य आनन्द सहज ही प्राप्त कर सकते हैं। योगासनों के अभ्यास से पुष्ठ शरीर प्राणायाम करते-करते जितनी चाहे आत्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। नीरोग जीवन के लिए योग रामबाण औषधि है।

आज विज्ञान की उन्नति और चमत्कारों ने जहां मनुष्य को चमत्कारिक ढंग से प्रभावित कर उसके रोग-शोक को हरने का प्रयास किया है, वहीं अनायास ही मानव जीवन कई चिंताओं का शिकार भी बना है। अपवाद छोड़कर शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति अथवा घर-परिवार हो, जो असंतोष, परेशानी और दुःख का घर बनकर न रह गया हो। इस बोझिल जीवन से सहज ही मनुष्य का क्षय हुआ है अथवा वह दुखःमय बना है। शरीर को सुखाने तथा मन को दुखाने वाली इस स्थिति में योग मनुष्य का सच्चा पथ-प्रदर्शक है। जीवन का खोया आनन्द और सोया भाग्य इसकी साधना से पुनः जगाया जा सकता है।

योगाभ्यास से आनन्द की अनुभूति

योगाभ्यास द्वारा शरीर, मन और इन्द्रियों की वह स्थिति प्राप्त की जा सकती है, जिससे शारीरिक कर्मों में आनन्द की अनुभूति लौटाई जा सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
अन्यान्य प्रकार की औषधियों से थोड़ी-बहुत शारीरिक स्फूर्ति तथा अन्यान्य व्यायामों से थोड़ा-बहुत शारीरिक बल अवश्य प्राप्त किया जा सकता है, परन्तु वह आनन्दमय स्थिति नहीं, जिसे केवल योग ही करा सकता है। कथन की अपेक्षा योग क्रिया की विद्या है, जिसे किन्हीं योग्य योगाभ्यासी के मार्गदर्शन में प्रत्यक्ष करके अनुभव किया जा सकता है। मानसिक और शारीरिक थकान से कोसों दूर यौगिक प्रक्रियाएं आपको न केवल एकदम हल्का-फुल्का बना देंगी, अपितु आपके ओठों की खोई मुस्कान भी आपको लौटा देंगी। रोग, शोक, थकान व दुश्चिन्तायें आपसे कोसों दूर भाग जाएंगी तथा शरीर सामर्थ्यपूर्ण होकर जीवन जीने योग्य बन जाएगा।

योगाभ्यास एक समूहवाचक शब्द है, जिसमें आसन, बंध, प्राणायाम, प्रत्याहार, जप-कीर्तन, धारणा, ध्यान तथा समाधि सम्मिलित हैं। कुशल तथा योग्य निर्देशन में सम्पन्न ये साधनाएं उत्तरोत्तर फलदायी हैं। सामान्य शारीरिक सौष्ठव के लिए इनमें से आसन, बंध, मुद्रा, क्रिया तथा प्राणायाम ही पर्याप्त हैं। इनके नियमित अभ्यास के चमत्कार आप प्रत्यक्ष देख सकते हैं।

शारीरिक व्यायाम से योग एकदम भिन्न है। व्यायाम शरीर को थकाकर उसे कड़ा कर देता है, जबकि योगासन उसे हल्का-फुल्का, लचीला तथा ताजगीपूर्ण बनाते हैं। व्यायाम से शरीर टूट जाता है जबकि आसनों से उसमें स्फूर्ति पैदा होती है। मांसपेशियां, नाड़ीतंत्र, रक्त प्रवाह तथा हड्डियों के जोड़ सभी पूर्वापेक्षा सजीव तथा सक्रिय हो जाते हैं और एनडाक्रिन ग्लांड्ज द्वारा स्रावित पोषक हारमोन अपने रस से शुष्क शरीर को भली प्रकार खींचकर उसे पुन: सरस बनाने लगते हैं व रीढ़ की हड्डी जो शरीर का आधार है, जैसी चाहिए वैसी लचीली बन जाती है। उसमें से निकलने वाली नर्व्ज इससे स्वस्थ होती हैं तथा बुढ़ापा भागने लगता है। एनडाक्रिन ग्लांड्ज से निकलने वाले रसों का शारीरिक प्रक्रियाओं पर अपना विशिष्ट प्रभाव पड़ता है और इन्हें नियमित करने वाले विशिष्ट आसान हैं। उदाहरण के लिए सर्वांग आसन से गर्दन में स्थित थायरायड ग्लांड को सुपुष्ट कर सकते हैं, जबकि शीर्षासन सिर में पिचुटरी ग्लांड को पुष्ट बनाता है। एनडाक्रिन ग्लांड्ज में यह ग्लांड मास्टर ग्लांड कहलाता है, क्योंकि शरीर की गतिविधि का यही नियामक है।

स्वास्थ्य ग्लांड्ज पर निर्भर

वैज्ञानिकों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि शरीर का सुन्दर तथा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वस्थ रहना इन ग्लांड्ज के स्वास्थ रहने पर निर्भर है। योग द्वारा उन्हें वैसा बनाया जाता है। विविध प्रकार की क्रियाएं शरीर को साफ-सुथरा बनाकर टाक्सिन मुक्त बनाती है जबकि बहुविध प्राणायाम शरीर में ऊर्जा की उत्पत्ति करते हैं। श्वास-प्रश्वास के नियमन से इन्द्रियों पर नियंत्रण सहज हो जाता है तथा मन काबू में आने लगता है। इसके बाद प्रत्याहार से योगाभ्यासी अंतर्मुखी होकर आनन्द की खोज में निमग्न हो जाता है, जो कहीं बाहर न होकर हृदय में है। एक बार इस स्थिति को पा लिया कि फिर कहां की चिंताएं और कहां की अशांति ? सारा अंतर्व्दन्द्व समाप्त होकर सच्चा सुख प्राप्त होने लगता है।

बीमारियों से निपटने में योग सहायक

आयुर्विज्ञान की उन्नति से आधुनिक काल में चेचक, हैजा, प्लेग, मलेरिया, टाइफाइड, तपेदिक सदृश कितने ही भयावह रोगों पर विजय प्राप्त की गई है। इसी प्रकार पौष्टिक खाद्यान्न के अभाव में जीवन को संकटमय बनाने वाले सूखा, बेरी-बेरी और अनीमिया जैसे रोग भी जीते गए हैं। पौष्टिक खाद्यान्न से मनुष्य की औसत आयु बढ़ी है परन्तु इसके बावजूद वैज्ञानिक उन्नति की बदौलत ही वह अनेक प्रकार के मानसिक दबावों तथा तनावों का शिकार होने लगा है। वृद्धावस्था-जन्य रोग, हृदयरोग, कैंसर आदि उसके पीछे पड़ गए हैं और जीवन मानसिक चिंताओं से घिर गया है। पर्यावरणीय प्रदूषणों, औद्योगिक दुर्घटनाओं, मद्यपान तथा धूम्रपान सहित अन्यान्य व्यसनों ने उसे पूरी तरह घेर लिया है। इन सब भयावह परिणामों से निपटने की शक्ति योग में निहित है। यह कोई कोरी गप्प अथवा प्रचार नहीं, अपितु पिछले २२ वर्षों में २५ हजार से भी अधिक योगाभ्यासियों के नियमित सम्पर्क से उत्पन्न यथार्थ है। क्रोध, सर्वाईकल, स्पांडेलाइटिस, एसिडिटी, डायबिटीज आदि का इलाज आसानी से हुआ है तथा रोगी तनावमुक्त हुए हैं। क्रोध का इलाज क्रूमसिन, सर्वाईकल तथा स्पांडेलाइटिस का मार्जार आसान, एसिडिटी का मयूर आसन, कुंल क्रिया तथा सर्पासन, डायबिटीज का वज्रासन, सुप्त वज्रासन, उष्ट्रासन तथा लघु शंख प्रक्षालन से हुआ है। मोटापा, खांसी, जुकाम, ब्लडप्रेशर, हृदय रोग एवं वृद्धावस्था से उत्पन्न बीमारियां भी ठीक होती देखी गई हैं तथा सिर, मन और पेट के रोगी स्वस्थ हुए हैं। भोपाल गैस कांड के कुछेक रोगी भी योगाभ्यास से पूर्णतः स्वस्थ हुए। इनमें से एक का केस उल्लेखनीय है। गैस के प्रभाव से उनका गला सूज गया था तथा आवाज बन्द हो गई थी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब प्रकार का इलाज असफल होने के बाद वे हमारे पास योग साधन केन्द्र में आए और वहां की नियमित साधना में लीन हो गए, जिसका उन्हें भरपूर लाभ हुआ।

ये महाशय शासकीय कर्मचारी हैं तथा नगर के जाने-माने कलाकार हैं। सभी योगासनों में सूर्य नमस्कार तथा शवासन सचमुच चमत्कारिक है। इनके अभ्यास से सब प्रकार के तनावों से मुक्त शरीर और मन स्वयंस्फूर्त और बलशाली बनता है।

वास्तव में योग की महिमा अवर्णनीय है। इसके मीठे फल चखने के लिए योगासनों का नियमित अभ्यास आवश्यक है। योगाभ्यासी का अंतर्मन जैसे-जैसे जागने लगता है, वैसे-वैसे वह शरीर के विभिन्न भागों में ध्यान केन्द्रित करने में समर्थ होता है। परिणामस्वरूप उसका स्वास्थ्य सुधरने लगता है तथा शरीर सुन्दर, सुडौल बनने लगता है।

कुशल निर्देशन तथा सहयोगियों के मध्य रहने से कठिन से कठिन यौगिक प्रक्रियाएं सरल बन जाती हैं तथा सीखना आसान हो जाता है। ढीले वस्त्र, प्रातःकाल का सुन्दर सुहावना समय तथा एक कम्बल अथवा चटाई के अलावा इसमें किसी महंगे परिधान अथवा सामग्री की कोई आवश्यकता नहीं। □

जन-ज्ञान (मासिक)

की

१० प्रतियां केवल २०) की वी० पी० से मंगाएं और अपने मित्रों को भेंट करें। २० या २० से अधिक प्रतियां मंगाने पर मूल्य १.७५ पैसे प्रति होगा।

कागज-छपाई-डाक व्यय सब मंहगे

पर प्रचार के लिए

हम जन-ज्ञान आज भी लागत से कम मूल्य पर दे रहे हैं।

हिन्दू राष्ट्र घोषित कराने के लिए

हमारा साथ दीजिए।

जन-ज्ञान (मासिक), नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद ही शिक्षा नीति का आधार हो

—कर्पूरचन्द्र कुलिश

क्या कहें अहबाब क्या कारेनुमायां कर गये
बी० ए० किया नौकर हुए, पिन्शन मिली औ मर गये

हमारी शिक्षा-प्रणाली पर महान् व्यंग्यकार अकबर इलाहाबादी का उक्त शेर सोलहों आना सही बैठता है बल्कि इससे अच्छी टीका कहीं देखने में नहीं आयी। अकबर इलाहाबादी का यह शेर आज से कोई पचास साल पहले का लिखा हुआ है। गंभीर से गंभीर तत्त्व की बात अकबर ने जितने सरल रूप में कही है, वह आश्चर्यजनक है। अकबर का इशारा साफ है, वे कहना चाहते हैं कि शिक्षा को पेट से बांध दिया गया। उसका उद्देश्य केवल खाना-कमाना और मर जाना रह गया है।

देश के स्वाधीन होने के बाद से अब तक जितने भी राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री हुए हैं, शिक्षा-प्रणाली की आलोचना करते रहे हैं, परन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। बहु-उद्देश्यीय शिक्षा प्रणाली दस-जमा दो इत्यादि प्रयोग भी किए जा चुके हैं। उनकी परिणति जो होनी थी, वही हुई। शिक्षा को लेकर इन दिनों जो नवीनतम विचार चल रहा है, वह रोजगार मूलक शिक्षा पर आधारित है।

हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए लार्ड मैकाले को कोसते हुए अघाते नहीं हैं परन्तु पिछले ३८ वर्षों में हमने क्या किया, इसकी जवाबदारी उठाने को कोई तैयार नहीं है। मैकाले को भी सिर्फ इसलिए दोष देते हैं कि हमें कोई जवाबदारी न उठानी पड़े। वरना मैकाले को दोष देना कोई माने नहीं रखता। मैकाले ने वही शिक्षा-प्रणाली हमारे देश में लागू की जो उनके देश ब्रिटेन में उस समय थी। अन्तर केवल राष्ट्रीय परिस्थितियों का और आर्थिक उतार-चढ़ाव का ही है। अलबत्ता भाषा उसकी अंग्रेजी है। क्या भाषा के लिए भी मैकाले को दोष देना होगा? यह तो ऐसी चीज है कि बदली जा सकती है। हां, देशवासी ही अंग्रेजी न छोड़ना चाहें या शासकों में ही संकल्प न हो तो फिर मैकाले को कोसना ही एक मात्र उपाय है। खिसियानी बिल्ली खम्भा ही नोंचती है।

हम तो अभी तक भी तय नहीं कर पाये कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या शिक्षा का प्रयोजन मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है ? क्या शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अभिव्यक्ति को बल देना है ? क्या शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य का संस्कार करना है ? क्या इसका अभिप्राय पेट भरना है ? जब कभी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन का विचार नौकरशाह करने लगते हैं (और देश का दुर्भाग्य है कि यह काम नौकरशाही से ही चलता है) कभी यह तय नहीं किया जाता कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है ? जब कुछ नहीं सूझता या कुछ नहीं सोचा जाता तो देश में चारों ओर पनप रही बेकार शिक्षितों की भीड़ कचोटने लगती है और शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने का "विचार" चल पड़ा है। विचार की परिभाषा बदल जाती है।

शिक्षा का उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा का उद्देश्य रोजगार देना है ? यदि ऐसा ही है तो फिर शिक्षा की आवश्यकता क्या रह जाती है ? रोजगार तो शिक्षा-विहीन लोग भी करते हैं और अच्छा करते हैं। दूसरा प्रश्न है कि रोजगार का मतलब नौकरी क्यों ? यह सच है कि जीविका उपलब्ध होना आवश्यक है। जीविका का प्रबन्ध हुए बिना सभी बड़ी-बड़ी बातें फीकी लगती हैं, सुहाती नहीं। फिर प्रश्न उठता है कि जीविका का मापदण्ड क्या हो ? क्या वह रोटी, कपड़ा और मकान तक सीमित है ? एक प्रश्न यह भी है कि रोटी, कपड़ा और मकान का ही प्रश्न है तो वह केवल शिक्षितों के ही सामने नहीं है। अशिक्षित लोग भी रोटी, कपड़ा और मकान के अधिकारी हैं। कुल मिलाकर देखें तो यह मुद्दा आर्थिक है, शैक्षणिक कदापि नहीं है। भला इसी में है कि शिक्षा नीति को पेट से बाहर निकाला जाए और अर्थनीति को पेट से जोड़ दिया जाए। शिक्षा नीति को लेकर अब-तक जो भी भुल-भुलैया बनी हुई है,उसका समाधान तब तक नहीं होगा जब तक कि उसे पेट से बांधे रखेंगे। एक पीढ़ी तक एक युवक को शिक्षा देने की व्यवस्था सरकार करे और उसके बाद उसका पेट भरने का जुगाड़ भी सरकार करे, अर्थात् नौकरी दे, तो यह कुचक्र कभी बन्द ही नहीं होगा। अभी यही तो हो रहा है। हाई स्कूल तक यदि किसी किसान के लड़के ने पढ़ाई कर ली तो हल को हाथ लगाना छोड़ दिया, खाती का लड़का लकड़ी को भूल गया और लुहार के लड़के ने लोहे से मुंह फेर लिया। उसको नौकरी चाहिए। नौकरी मिल भी गई तो वह कैसी होगी और उसकी जिंदगी की जो तस्वीर बनेगी वह कैसी होगी, कहने की आवश्यकता नहीं। हाई स्कूल पढ़ा-लिखा नौकर क्या कभी अपने या अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकेगा ? अलबत्ता वह अपना पारिवारिक धन्धा छोड़ बैठेगा ; हो सकता है घर भी छोड़ दे और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शहरों में जाकर गंदी बस्तियों की आबादी बढ़ाए। यही तो हो रहा है प्रतिदिन। कोई भी रोजगारमूलक शिक्षा देश को इस दुर्गति से छुटकारा नहीं दिला सकती।

तब फिर मैं मैकाले पर विचार करना चाहूंगा। हमारे यहां जो शिक्षा प्रणाली मैकाले ने प्रारंभ की मैं उसमें छल नहीं देखता अपितु अज्ञान का पुट देखता हूं। इस शिक्षा पद्धति में आमूलचूल रिक्तता है। अतः उसे प्राप्त करके जो स्नातक तैयार होता है वह भी अपने आप को रिक्त अनुभव करता हैं। उसके व्यक्तित्व में जो कुछ ठोस या रचनात्मक होता है वह घरेलू संस्कारों या भारत के समष्टि जीवन का प्रभाव होता है। हमारे शिक्षा क्रम में व्यक्तित्व निर्माण के गुणों का नितान्त अभाव है। जिन तत्त्वों से व्यक्तित्व की नींव मजबूत होती है उनका शिक्षा पद्धति में समावेश नहीं है।

भाषा का सवाल

शिक्षा पद्धति का एक पक्ष भाषा है। इस देश में संस्कृत जैसी देववाणी और देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि होते हुए भी हम उनका समुचित ज्ञान अपने बालक को नहीं करवाते। हम भाषा पढ़ाते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वर्ण क्या हैं, कैसे उत्पन्न होते हैं, शब्द क्या है, उसकी शक्ति क्या है, उसकी रचना कैसे होती है? उसका अर्थ किस प्रकार किया जाता है? देवनागरी लिपि पढ़ने-लिखने में सरलतम है और संकृत (भाषा) अभिव्यक्ति के लिए सरलतम माध्यम है। इस भाषा में नए-नए शब्दों की रचना का भी अजस्र स्रोत है और वह ज्ञान कोष भी विद्यमान है जो मानव सृष्टि का आदि ज्ञान है। हम बार-बार विज्ञान-मूलक दृष्टिकोण की बात करते हैं, परन्तु हमने शिक्षा पद्धति से उन सब वैज्ञानिक तत्त्वों को बहिष्कृत कर रखा है जिनकी सहायता से हमारी शिक्षा वैज्ञानिक बन सकती है। भाषा के अतिरिक्त शिक्षा का दूसरा पक्ष है आचार एवं विषय वस्तु। इस अर्थ में हमारी शिक्षा पद्धति पूर्णतः निस्सार है। बालक को हम आचारशास्त्र या नीतिशास्त्र से सवर्था विलग रखते हैं। विषय वस्तु के नाम पर हम प्रारम्भ से ही बालक को पुस्तकों के भार से लाद देते हैं, जिससे कोमल अन्तरंग वाला बालक कुंठित प्राय हो जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि बालक को शिक्षा देने की श्रेष्ठतम विधि लालित्यपूर्ण होती है। ललितभाव से शिक्षा का श्रेष्ठतम माध्यम हमारे देश में पुराण, पंचतत्र, हितोपदेशादि हो सकते हैं और इसकी भी पालना श्रुति के माध्यम से हो। मानव का आदि ज्ञान ही श्रुत के रूप में प्रकट हुआ है और व्यक्ति का आदि ज्ञान श्रुति से क्यों नहीं उपार्जित हो,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसे प्राप्त करके बालक उत्फुल्ल हो। [illegible] शिक्षा तथा कहानी से बढ़कर कोई चीज नहीं है जो बालक को उत्फुल्ल कर सके। यह कार्य उतना ही रुचिकर है जितना कि खेलकूद।

श्रुति के माध्यम से दस वर्ष तक की आयु के बालक को सम्पूर्ण पुराणों का ज्ञान हो सकता है, और तोन या चार भाषाएं सिखाई जा सकती हैं। पुराणों के सहारे इतिहास, भूगोल, साहित्य, नीति इत्यादि विषयों के समझने की क्षमता भी बालक में उत्पन्न हो जाएगी। आज तो हमारे पाठ्यक्रम का हाल यह है कि शहरी स्कूलों के बच्चे 'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' जैसी दर्जनों अंग्रेजी कविताएं रटे हुए होते हैं। परन्तु किसी बालक या शिक्षक को देवनागरी के आठ अक्षरों वाला गायत्री मंत्र नहीं आता। सन्ध्या करने से एक सांस में विश्व ब्रह्माण्ड के सातों भुवनों के नाम याद हो जाते हैं। उसी दौरान उसे तीन या चार भाषाएं भी पढ़ाई जा सकती हैं और साधारण गणित भी। भाषा शिक्षा को हम तीन भागों में बांट सकते है। (१) मातृ-भाषा, शास्त्र भाषा और राष्ट्र भाषा। मातृभाषा हर बालक को मां के दूध के साथ ही मिलती है। शास्त्र भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाए और राष्ट्रभाषा हिन्दी है ही। जो लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने को तैयार नहीं हैं उनके भाग्य पर दया करना ही उचित है। वे चाहें तो 'हिब्रू' भी पढ़ सकते हैं।

राष्ट्रभाषा का सवाल

अंग्रेजी के पक्ष में लोग यह तर्क देते हैं कि अंग्रेजी में विज्ञान विषय की पुस्तकें हैं और वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है अतः उसका देश में प्रचलित रहना अनिवार्य है। जहां तक भाषा सीखने का प्रश्न है कोई भी भाषा हो, उसे सीखना एक श्रेष्ठ कार्य है। परन्तु यह कहना कि अंग्रेजी विज्ञान का माध्यम है, संसार की अन्य भाषाओं का अपमान है। यदि अन्त-र्राष्ट्रीय भाषा के नाम पर ही अंग्रेजी का व्यवहार अनिवार्य माना जाता होता तो संयुक्त राष्ट्र संघ से बड़ा अंतर्राष्ट्रीय मंच कहां है। यदि यह कहा जाता कि अंग्रेजी व्यवसाय की भाषा है तो भी बात समझ में आ जाती। हमारा व्यवसायी वर्ग एक सीमा तक अंग्रेजी में कारोबार करता है। व्यव-साय में शासनतंत्र इत्यादि को भी शामिल किया जा सकता है। ये सब व्यवसाय के ही रूप में वर्णित हैं। व्यवसाय का स्थान भी कालान्तर में स्वदेशी भाषाएं ले सकती हैं।

अब मैं फिर विज्ञान की बात पर आना चाहूंगा। जो लोग अंग्रेजी को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
विज्ञान का माध्यम मानते हैं उन्हें अपना भ्रम शीघ्रातिशीघ्र दूर कर लेना चाहिए। अंग्रेजी ही नहीं अपितु पश्चिम में जिस किसी भाषा में भी भौतिक विज्ञान का उदय हुआ है उसे विज्ञान कहना विज्ञान शब्द का दुरुपयोग कहा जाएगा। विज्ञान के नाम पर ये लोग अज्ञान का प्रचार कर रहे हैं या व्यवसाय कर रहे हैं। ये वही लोग हैं जो कल तक धरती को सपाट या चपटी मानते रहे हैं। बेचारे गैलीलियो को अटकल (अनुसंधान) लगाते-लगाते यह जानकारी हाथ आई कि धरती गोल है। उस बेचारे ने इस बात को प्रकट कर दिया। चूंकि बाइबल में धरती को सपाट लिखा था, गैलीलियो को जेल में रहना पड़ा। एक अरसे के बाद इन लोगों ने मानना शुरू किया कि धरती गोल है। अब वे यह मानते हैं कि धरती घूमती है परन्तु सूर्य स्थिर है। यह गैलीलियो की देन है। सूर्य के आगे भी कुछ है वे अबकुछ-कुछ मानने लगे हैं। आज भी पश्चिम के वैज्ञानिक मानते हैं कि सूर्य से ताप उत्पन्न होता है। आम धारणा भी यही है, परन्तु वैज्ञानिक नहीं है। अनेक भ्रांतियों को पाले हुए वे लोग विज्ञान के नाम पर प्रयोग पर प्रयोग करते जा रहे हैं। इस दौर में एक ओर व्यवसाय पनप रहा है, दूसरी ओर अनिष्ट यह अमंगल और विनाशकारी शस्त्र संचय हो रहा है।

सृष्टि का आदि ज्ञान

इसके विपरीत इस देश में वह ज्ञान-विज्ञान विद्यमान है जो सृष्टि का आदि ज्ञान है। यहां से सम्पूर्ण ज्ञान व विज्ञान का प्रसार हुआ। इसी से देश का दुर्भाग्य और अधःपतन हुआ कि जिस वेद को ज्ञान का उद्गम माना जाता है उसी को भुला दिया गया। हमारी दुर्गति भी इसीलिए हुई कि हमने अपने स्वरूप को ही भुला दिया और नाना प्रकार के क्षुद्र मत-मतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय, आदि में ज्ञान को विशृंखल कर दिया। शिक्षा से तो उसे समूल विच्छिन्न कर दिया।

सृष्टि के समग्र विज्ञान की पूंजी एकमात्र वेद है और वह आज भी विद्यमान है। जीव क्या है—जगत् जानता है? भूत और प्राण क्या है। ऋतु परिवर्तन प्रकाश, अन्धकार, दिशा और काल, जीवन और मृत्यु, वर्ण, अक्षर, क्षर आदि कोई ज्ञान ऐसा नहीं जो वेद में नहीं है। वेदों ने मानव सृष्टि के आदि में यह भी बताया कि धरती घूमती है और गोल है—और सूर्य भी परिक्रमा करता है। स्थिर नहीं है। प्रकृति का कोई अंग और उपकरण स्थिर और अपरिवर्तनीय नहीं है।

हमारा दुर्भाग्य है कि वेद जैसे आदि ज्ञान को, श्रेष्ठ को और सम्पूर्ण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
विज्ञान के आधार को एक रहस्यमय और बुद्धि से बाहर की वस्तु बनाकर हौवा बना दिया गया है जो सभी रहस्यों और गुत्थियों के खोलने वाला विज्ञान है उसी को हमने अज्ञेय बना दिया। हमारी दुर्गति इसलिए हुई कि हम वेद को भूल गए, हमारा उद्धार वेद विज्ञान से ही होगा। विडम्बना से आज मशीन ही विज्ञान का प्रतीक बनी हुई है। आवश्यकता है इस भ्रांति को दूर करने की। विडम्बना है कि हम वेद को कर्मकांड और रहस्य की वस्तु मानने लग गए। आवश्यकता है इस भ्रांति को तुरन्त मिटाने की :

हमारी शिक्षा नीति का आधर ही वेद होना चाहिए और यही एक विद्या है। जो मानव के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यही एक विद्या है जिसका किसी धर्म, सम्प्रदाय, मत, पंथ, जाति, वर्ण इत्यादि पर कोई आग्रह नहीं, बल्कि इसी से मनुष्य को सही दिशा और ज्ञान प्राप्त हो सकता है वेद ही वह ज्ञान है जो भूत और प्राण, आत्मा और शरीर, ब्रह्म और जगत् सभी को सत्य मानता है। जगन्मिथ्या वाला घोष वेद नहीं मानता और वेद यह भी नहीं मानता कि आत्मा ही सत्य है शरीर नहीं। भौतिक उन्नति से वेद का कोई विरोध नहीं। सरस्वती और लक्ष्मी के बीच वैर होने की भ्रांति भी वेद नहीं मानता। वेद जीवन का विज्ञान है और हमारी सम्पूर्ण दिन-चर्या का कोई पक्ष या अंश ऐसा नहीं जिसकी जानकारी वेद में नहीं है।

मैं पुनः जोर देकर कहना चाहूंगा कि देश में जो भी शिक्षा प्रणाली चालू की जाए उसका आधार वेद को ही बनाना होगा। इस देश की शिक्षा को मैकाले ने कोई नुकसान नहीं पहुंचाया बल्कि उन लोगों ने पहुंचाया जिन्होंने वेद को ज्ञान धारा से अलग कर दिया और केवल पारलौकिक रहस्यों की वस्तु बना दिया। यदि दस वर्ष की आयु के बाद सूत्र रूप में वेद की शिक्षा (अन्यान्य विषयों के साथ) हमारे किशोर तरुणों को मिलने लगी तो देश की एक पीढ़ी में ही मनोदशा बदल जाएगी। यह शिक्षा पाकर जो युवक जीवन क्षेत्र में प्रवृत्त होगा वह शंकर और विवेकानंद ही होगा। रोजगार के लिए तो वह दीनात्मा बनकर किसी के सामने हाथ नहीं पसारेगा।

वेद एक विद्या है, उत्कृष्ट कोटि का विज्ञान है जिसमें ज्ञान और विज्ञान को इस प्रकार परिपादित किया गया है—एकज्ञानं ज्ञानम्, विविध ज्ञानं विज्ञानम्। एक को जानना ज्ञान है और एक को आधार मानकर विविध को जानना ही विज्ञान है। ज्ञान को ही दूसरे शब्दों में ब्रह्म कहा गया है और यज्ञ के बारे में जो धारणाएं हमारे यहां बन गई है, उन्हीं के कारण वेद के विषय में भी भ्रान्तियां बनी हुई है। इसी तरह की भान्तियां पुराणों के बारे में बनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुई है परन्तु, हमारे पुराण वेद को जानने की ही कुंजी है। कपोल कल्पना नहीं, दोनों का समन्वय ही आज जग के धर्म के जानना है ज्ञान और विज्ञान दोनों का अजस्र स्रोत वेद ही है। इसकी शिक्षा प्राप्त कर लेने पर अन्य सभी विषयों में मनुष्य के गति सहज ही हो जाएगी। आधुनिकतम विज्ञान को भी सही दिशा के लिए वेद की ही शरण में आना होगा। □

प्रत्येक हिन्दू परिवार में होना ही चाहिए

पवित्र धर्म-ग्रन्थ : परमात्मा की अमरवाणी

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र-शब्दार्थ-भावार्थ-छन्द-स्वर-देवता आदि सहित

लागत मूल्य : ५०० रु०

किन्तु प्रचार के लिए

पुस्तकालय संस्करण : ३०० रु०

उपहार संस्करण : लागत मूल्य : १,००० रु०

अभी केवल ८०० रु० में लीजिये।

आदेश के साथ ५० रु० अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

जन-ज्ञान [मासिक]

के

आजीवन सदस्य बनकर

आगे बढ़ने में सहयोग दीजिए। अपने मित्रों-परिचितों को भी आजीवन सदस्य बनाइए। आज ही ५०१ रुपया भेजिए।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू कहू तो मारिये मुसलमान वी ना ।
पंच तत्त दा पुतला ते नानक मेरा नां ॥
जगत् भिखारी फिरत है सबको दाता राम ।
कहु नानक मन सिमर तिह पूरन होवहिं काम ॥
चिन्ता ताकी कीजिये जो अनहोनी होय ।
एहि मारग संसार को नानक थिर नहिं कोय ॥
जो उपजियो सो विनस है मरो काल के गाल ।
नानक हर गुन गाय ले छांड़ सकल जंजाल ॥
राम गयो रावण गयो जाको बहु परिवार ।
कह नानक थिर कछु नहिं सुपने जियुं संसार ॥
झूठ बखान कहा करे जग सुपने जियुं जात ।
इनमें कछु तेरो नहिं नानक कहियो बखान ।
विरथा कहो कोऊ सांचो निज मन की ।
लोभ ग्रसयो दिस धावत आस लगयो धन की ॥
संग सखा सब तज गये कोऊ न निबाहियो साथ ।
कहु नानक एहू विपत में टेक एक रघुनाथ ॥

—श्री गुरु नानक देव जी

जो हमको हरमेस उचरि है ।
ते सब नरक कुंड मंहि परि है॥

—दशमेश गुरु गोविन्दसिंह जी महाराज

पंजाबी चंदू हलवाई करांचीवाला

प्रधान कार्यालय—१८५, वालकेश्वर मार्ग, तीनवत्ती, बम्बई-४००००६

१. जावेरी बाजार २. ग्रांट रोड ३. कोलाबा ४. दादरा टी०टी ५. वरल नाका ६. सर्कल ७. ठाकुर द्वार ८. सूर्योदय स्टोर, चर्च गेट ९. घाटकोपर (पश्चिम) १०. लिंकिंग रोड, बांदरा ११. रेलवे स्टेशन के साम सांताक्रुज (पश्चिम)

कारखाना—'चन्दू भवन', सुपर सिनेमा के पास, ग्रांट रोड
बम्बई-४००००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहर भरा है—चाय व अण्डे में

—चन्द्रशेखर

आज देश में चाय पान एवं अंडा भक्षण अत्यधिक बढ़ता जा रहा है जबकि मानव शरीर के लिए ये दोनों ही विष के तुल्य हैं। किसी लेख में मैंने पढ़ा था कि चाय में आठ प्रकार के विष हैं। ये हैं—टैनिन, कैफिन, थीन, मैफिन, साइनोजन, स्ट्रिकनाइन, साइराइड तथा ऐरोमैटिक आयल। यह कहां तक सत्य है, यह तो अन्वेषण का विषय है। इस सबंध में भी खोज की जानी अपेक्षित है कि चाय में मिले हुए इन द्रव्यों से मानव शरीर कहां तक क्षतिग्रस्त होता है, किन्तु इस तथ्य को पूर्णरूपेण नकारना कठिन ही है कि चाय में विष का कोई न कोई अंश तो अवश्य ही है।

इन दिनों जनसाधारण में बढ़ती हुई दूसरी लत है अण्डा भक्षण। अब तो अनेक तथाकथित प्रगतिशील परिवारों में प्रातःकाल का नाश्ता भी अण्डे के बिना पूर्ण नहीं माना जाता और बालकों को नित्य प्रति दो-दो अण्डे गटकवा कर उन्हें स्वस्थ बनाने का स्वप्न अभिभावक अपने मन में संजोते हैं।

अण्डे के संबंध में भी विदेशियों द्वारा प्राप्त जानकारी मैंने **डा० जे. एम. विलक्न्ज और डा० कैथराइन नम्मो** के लेखों में पढ़ी है जो इस प्रकार है—.

अण्डे की जरदी अण्डे का नितांत खतरनाक अंश है। इसमें कैलस्टरोल नामक भयानक विष पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। यह विष एक प्रकार का चिकना एल्कोहल होता जो जिगर में जाकर जमा होता है और हृदय से रक्त ले जाने वाली नाड़ियों में अवरोध उपस्थित करता है।

इससे हृदय रोग, उच्च रक्तचाप तथा मानसिक रोग एवं पित्त की थैली में पथरी और जोड़ों में दर्द हो जाता है। आज जैसे-जैसे चारों ओर अण्डों का प्रचार बढ़ता जा रहा है, वैसे-वैसे दिल की धड़कन बन्द होने से मौतें भी बढ़ती जा रही हैं।

डा० आर० जे० विलियम्स और डा० इरविंग डेविडसन लिखते हैं कि—

"अण्डे की सफेदी अण्डे का सबसे अधिक खतरनाक भाग है। अण्डे की सफेदी में 'एवीडिन' नामक, जहरीला मच्छर पाया गया है जो कैंसर, एग्जिमा, चर्मरोग, लक्वा, शरीर की सूजन कैसे भयंकर रोगों का कारण होता है। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे खुली किताब थे

—अक्षयकुमार जैन
(भूतपूर्व सम्पादक, नवभारत टाइम्स)

गांधीजी एक खुली किताब की तरह थे। जैसा वे कहते थे, उसी प्रकार उनका आचरण होता था। उनकी मान्यता थी कि श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधन की आवश्यता होती है और यदि साधन पवित्र नहीं है तो लक्ष्य की प्राप्ति भी हो जाये, किंतु उसमें वह मधुरता, टिकाऊपन नहीं आ सकता, जो पवित्र साधनों के सहयोग से प्राप्त किया जा सकता है।

बात सन् १९३० की है।

उस समय महात्मा गांधी सारे देश की यात्रा पर निकले थे और उसी सिलसिले में अगस्त या सितम्बर के महीने में उनका अलीगढ़ आना हुआ था। उनके आगमन के समाचार से जिले में बड़ी चहल-पहल थी। छोटे से छोटे गांव के लोग भी उनके दर्शनों की लालसा रखते थे। लोग उस नंगे फकीर को अपनी आंखों से देखना चाहते थे, जो देश को आजाद कराने के लिए निहत्था अंग्रेजों से लड़ाई मोल ले रहा था—उस अंग्रेज से, जिसके राज्य में कहते हैं, सूर्य नहीं डूबता था। अलीगढ़ में गांधीजी के कार्यक्रम की व्यवस्था जिले के बड़े कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने की थी और क्योंकि उन्हें एक दिन से भी कम समय ठहरना था, इसलिए उनसे मिलने आदि का समय पहले से ही निर्धारित हो गया था।

मैं नवीं कक्षा का विद्यार्थी था। उत्सुकता, निष्ठा और एक प्रकार से उनके दर्शन मात्र करने की लालसा मेरे अन्तःकरण में भी हिलोरें ले रही थी। अलीगढ़-स्थित लायल लाइब्रेरी में, जिसे आजकल मालवीय पुस्तकालय के नाम से जाना पहचाना जाता है, गांधीजी ठहरे थे। सायंकाल सार्वजनिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभा होने वाली थी। पुस्तकालय के द्वार से लेकर उनके कमरे तक कई जगह स्वयंसेवकों की टोलियां खड़ी थीं। मुझे किस काम से या किस कारण बापू के सामने जाने का अवसर मिला, यह तो अब ठीक से याद नहीं, शायद बच्चा समझकर किसी ने न रोका हो, पर जब मैं उनके कमरे में पहुंच गया तो वहां बैठे प्रदेश और जिले के कई नेताओं को अचरज हुआ था।

गांधीजी चर्खा चला रहे थे और पास बैठे कांग्रेसी नेताओं से विचार-विमर्श भी करते जा रहे थे। शायद धागा टूट गया था और उसे ही ठीक करने के लिए बापू ने सिर उठाया। तभी उनकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। मैंने झुककर प्रणाम किया। दर्शन हो चुके थे, इससे आगे मुझे और कुछ चाहिए भी नहीं था, पर गांधीजी ने मुझ सिर से पैर तक देखा और मेरे मिल के बने हुए बढ़िया कपड़ों को देखकर हंसते हुए बोले, "तुम खद्दर नहीं पहनते ?"

मैं कुछ देर पसोपेश में रहा कि क्या उत्तर दूं, पर अचानक मेरे मुंह से निकल गया, "कपड़े मेरे बाबा बनवाते हैं, मुझे नहीं मालूम।"

यह सुनकर उन्होंने अपनी लड़खड़ाती हिन्दी में कहा, "तो तुम अपने बाबा से कह क्यों नहीं देते कि खद्दर पहनूंगा।"

अपने जमींदार-परिवार में खद्दर के बारे में जो कुछ सुन रखा था, उसे मैं छिपा न सका। मैंने कहा, "खद्दर तो मोटा और महंगा होता है।"

मेरी बात सुनते ही बापू जोर से हंस पड़े। पास बैठे नेताओं—डा० मलखानसिंह और पं० श्रीकृष्णदत्त पालीवाल आदि को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा, "यह बालक तो सुनी-सुनाई बात कह रहा है, पर इसकी दिलजमई करने के लिए आप लोग जवाब दीजिए।"

दोनों नेताओं ने क्रुद्ध दृष्टि से मेरी ओर देखा, मानो कह रहे हों कि कैसी ऊल जलूल बात इतने बड़े महापुरुष के सामने कर दी।

बापू को लगा कि मेरी बात का ठीक जवाब नहीं दिया जा रहा तो खुद बोले, अच्छा, यह तो बताओ कि तुम्हारी मां तो है ?"

मैंने कहा, "जी हां।"

"वह जाड़ी (मोटी) हैं या दुबली ?

मैंने कहा, "न मोटी हैं, न पतली।"

उन्होंने कहा, "अगर वह मोटी होतीं तो तुम उन्हें प्यार करते या नहीं ? मां मानते या नहीं ?"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैंने कहा, "जरूर प्यार करता। भला कौन ऐसा बालक होगा जो अपनी मां को प्यार न करे, भले ही वह मोटी ही क्यों न हो !"

मेरी बात सुन और कुछ देर तक रुककर बापू ने कहा, "मान लो कि तुम्हारे पिता ने अपनी शादी के समय तुम्हारे नाना-मामा को कुछ रुपया दिया होता—"

मैं बीच में ही बोल बैठा, "हमारे यहां तो लड़की वाले रुपया देते हैं, लड़के वाले नहीं।"

इस पर बापू बोले, "हमारे गुजरात में कुछ लोगों में शादी-ब्याह के समय लड़के वाले ही रुपया देते हैं। अगर तुम गुजराती होते और तब तुम्हारे पिता को रुपया देना पड़ता और इस तरह तुम्हारी मां महंगे में आती तो क्या तुम अपनी उस महंगी माता को मां मानते या नहीं और उससे स्नेह करते या नहीं ?"

इस प्रश्न का जो सहज उत्तर था, वह मैंने दिया, "मां तो मां है। चाहे वह कैसी भी हो, बच्चा मां के बिना नहीं रह सकता। मां का प्यार उसके लिए सब-कुछ है। जिस बच्चे की मां नहीं होती, उसे लोग अभागा कहते हैं।

मेरी बात सुनकर बापू ने कहा, "यह जो खद्दर है, वह भी तो माता के समान पवित्र और शुद्ध है।" फिर कुछ देर रुककर उन्होंने कहा, "कहो, अब खद्दर पहनोगे या नहीं ?"

बापू की वाणी का मुझपर जादू का-सा असर हो चुका था। मैं मन-ही मन लज्जित हो रहा था। मैंने बापू से कहा, "अब मैं अवश्य खद्दर पहना करूंगा।"

बापू ने खद्दर की विशेषता में क्या कुछ कहा, यह तो मुझे आज याद नहीं; किन्तु इतना उनका कथन अवश्य याद है कि खद्दर खरीदने से बहुत सारे परिवारों को रोजी-रोटी मिलती है।

उस दिन सार्वजनिक सभा में जो कुछ उन्होंने कहा, वह भी आज तक याद है। उन्होंने कहा कि देश की गरीबी की जड़ विदेशी सत्ता है। सबसे पहले इसे हटाना चाहिए। कांग्रेस ने इसे हटाने और आजादी लेने का संकल्प किया है। सभी को उसे अपना सहयोग देना चाहिए। विदेशी सत्ता को कमजोर करने के लिए हर आदमी को अपने हाथ का कता हुआ खद्दर पहनना चाहिए। अगर लोग खद्दर पहनने लगें, स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने लगें, तो देश का धन विलायत नहीं जायेगा। खद्दर बनाने वाले लाखों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
करोड़ों भाई-बहनों का भला होगा। जब तक देश के गांव-गांव में बसने वाले करोड़ों लोग खुशहाल नहीं होंगे तब तक देश में समृद्धि नहीं आ सकती।

साधनों की कठिनता

गांधीजी एक खुली किताब की तरह थे। जैसा वे कहते थे, उसी प्रकार उनका आचरण होता था। उनकी मान्यता थी कि श्रेष्ठ लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पवित्र साधन की आवश्यकता होती है। और यदि साधन पवित्र नहीं है तो लक्ष्य की प्राप्ति भी हो जाये, किन्तु उसमें वह मधुरता, टिकाऊपन नहीं आ सकता, जो पवित्र साधनों के सहयोग से प्राप्त किया जा सकता है।

गांधीजी की वह बात मुझे आज भी याद है. जो स्वराज्य के बाद उन्होंने कांग्रेस को समाप्त कर देने के संबंध में कही थी। प्रार्थना-सभा में उन्होंने कहा था कि कांग्रेस का काम समाप्त हो गया। कांग्रेस की स्थापना देश को स्वराज्य दिलाने के लिए की गई थी। देश आजाद हो गया। अब देश को मजबूत बनाने और लोगों को अधिक सुख-सुविधा पहुंचाने की बात है, उसके लिए अलग संस्था बनाई जानी चाहिए।

उस समय मुझ जैसे व्यक्ति पर गांधीजी के उक्त विचार ने कुछ अच्छा असर नहीं डाला था; किन्तु कांग्रेस की जो स्थिति हुई और उसमें पद-लोलुप एवं स्वार्थी लोगों की भरमार हो गई, उसे देखते हुए यह कहने में अतिशयोक्ति न होगी कि गांधीजी दूरद्रष्टा थे। उन्हें आभास हो गया था कि आगे चलकर कांग्रेस की दुर्गति हो सकती है।

यह एक विचित्र संयोग था और इसे मैं अपना सौभाग्य भी मानता हूं कि राष्ट्रपिता के अंतिम समय में भी मुझे उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दर्शन ही क्यों, उनके विचार सुनने और समझने का भी अवसर मिला। १९४७ के आखिरी दिनों में जब गांधीजी नई दिल्ली-स्थित बिड़ला भवन में रहते थे और प्रार्थना-सभा में प्रवचन किया करते थे तो अपने पत्र "नवभारत" (उस समय 'नवभारत टाइम्स' का यही नाम था) के विशेष प्रतिनिधि की हैसियत से मैं उनकी सभा में उपस्थित होकर समाचार संकलन किया करता था। जिस समय मदनलाल पाहवा ने पटाखा छोड़ा, उस दिन भी मैं प्रार्थना-सभा में उपस्थित था। बड़े ही गहन दुःख के साथ गांधीजी ने उस दिन देश में हो रहे सांप्रदायिक दंगों की बात कही थी।

उन्होंने कहा, "हम लोग पशु बन गए हैं। भाई ही भाई की हत्या कर रहा है। माता-बहनों और छोटे-छोटे बच्चों को मौत के घाट उतारा गया है। उनका अपमान किया गया है। क्या इसी सबके लिए कांग्रेस ने आजादी की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लड़ाई लड़ी थी ? क्या इसीलिए लाखों [illegible] इसीलिए हम आजाद हुए हैं ?"

और उसी सभा में जब किसी बहन ने यह कहा था कि इज्जत जाने से तो मर जाना बेहतर है तब गांधीजी ने, महिलाएं बिना हथियार रखे किस प्रकार अपना अस्तित्व बरकरार रख सकती हैं, इसकी विवेचना की थी।

आज भी वह दृश्य मेरी आंखों में ज्यों का-त्यों मौजूद है। ज्योंही पटाखा फूटा, धुएं से वातावरण भर गया। सभा में हलचल मच गई। लोग 'बम-बम' चिल्लाने लगे। स्वयंसेवक गांधीजी के दाहिनी और बाईं ओर जमा हो गए।

गांधीजी ने बड़ी संयत भाषा में कहा, "आप लोग शांत बैठे रहिए, कोई खास बात नहीं हुई।" और जब हम चार-पांच अखबार वाले उस ओर दौड़े तब हम धुआं तो देख पाए, किन्तु वह विस्फोट किसने किया, इसका पूरा विवरण शाम को मिल सका।

३० जनवरी, १९४८ को जब उस महामानव का प्रयाण हो गया, तब सभी लोगों की जिह्वा पर यही चर्चा थी कि यदि उस विस्फोट का अंदाज लगाकर काम किया गया होता तो शायद राष्ट्रपिता को बचाया जा सकता था। उस दिन मैंने दिल्ली नगर के कई चक्कर लगाए। मेरा तो अनुमान है कि शायद ही किसी घर में चूल्हा जला हो। घर से पुरखा के चले जाने पर जो दशा होती है, भारत की वही दशा थी।

गांधीजी की शव-यात्रा ऐतिहासिक महायात्रा थी। मैंने राजघाट के उस स्थान पर, जहां उनका दाह-संस्कार हुआ था, नये बने पाकिस्तान के दो नेताओं को रोते हुए देखा था। □

नौजवान उठ करवट बदले तो इतिहास बदल सकता है
केवल भुजा उठाने से युग का विश्वास बदल सकता है
तेरी आशाओं में जग की आशा जगती और सोती है
एक साथ मिल सांस सभी लो तो आकाश बदल सकता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लालबहादुर शास्त्री : जो भीतर-बाहर समरस थे

—सुरेश राम

(रचनात्मक क्षेत्र के निष्ठावान् कार्यकर्त्ता)

"तुम लाल बहादुर शास्त्री से मिलो। वे तुम्हें बतायेंगे कि क्या करना है।" राजर्षि पुरुषोत्तमदास जी टंडन ने मुझसे कहा।

उन दिनों यूरोप में महायुद्ध छिड़ा हुआ था। भारत पर ब्रिटिश सरकार द्वारा उसका बोझ लाद देने के खिलाफ देश " व्यक्तिगत सत्याग्रह चल रहा था। विनोबाजी पहले सत्याग्रही थे, जवाहरलालजी दूसरे। दोनों जेल में थे। तब तक कई हजार सत्याग्रही गिरफ्तार हो चुके थे। इलाहाबाद जिले से भी सौ के लगभग लोग जेल जा चुके थे।

आन्दोलन जोरों पर था। प्रदेश का काम बाबूजी (टंडन जी) देख रहे थे, लेकिन इलाहाबाद और अन्य कई जिलों की जिम्मेदारी श्री लालबहादुर शास्त्री के सुपुर्द थी। इसी वजह से बाबूजी ने मुझे उनके पास भेजा।

इलाहाबाद में साउथ मलाका में पार्क के पास कोने में एक दुमंजिला, लेकिन छोटे से मकान में शास्त्रीजी रह रहे थे। उनके पास सुबह के वक्त पहुंचा और उन्हें बताया कि बाबूजी के आदेश पर आया हूं। वे मुस्कराये और बोले, "बाबूजी के बिना कहे भी आप आ सकते थे। आपका इस घर में हर वक्त स्वागत है।"

शास्त्रीजी जांघिया और बनियान पहने थे। बोले, "मैं नहाने जा रहा था। पांच मिनट में आता हूं और तब आपसे बातें करूंगा।"

पांच की बजाय वह चार मिनट में ही आ गये। तभी अल्पाहार आ गया। उसी बीच उन्होंने पूछा, "आप इलाहाबाद बाद के देहात में पहले कभी घूमे हैं ?

शर्माकर मैंने जवाब दिया, "नहीं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"कोई हर्ज नहीं। मैं नाम पते दे दूंगा। आपको कोई दिक्कत नहीं होगी।"

उन्होंने तफसील के साथ सारी जानकारी दी, इलाहाबाद जिले के नक्शे पर भी बताया कि कहां-कहां जाना है और क्या करना है। करीब डेढ़ घंटे तक समझाते रहे। कई नेताओं और कार्यकर्त्ताओं के बारे में भी बताया। फिर कहा, "आपको कोई कठिनाई हो, उस समय अपने विवेक के अनुसार जैसा ठीक लगे, वैसा कीजिये।"

यूनिवर्सिटी से ताजा सार्वजनिक क्षेत्र में मैं घुस रहा था। मेरे मन में कुछ संकोच था। उसे उन्होंने भांप लिया था और कहा, बेधड़क होकर काम कीजिये। बापू का साहित्य तो आपने पढ़ा ही है। 'हरिजन' भी लगातार देखते होंगे। ज्यादा और कुछ कहने की जरूरत नहीं है।"

मैं चलने लगा, लेकिन कदम बहुत धीरे रख रहा था। मुड़ा और कहा "आप इजाजत दें तो एक बात पूछ सकता हूं।"

"जरूर, बड़े शौक से।"

"आप पिछले पंद्रह बरस से देश-सेवा में लगे हैं, मैं नया हूं। अपने अनुभव के आधार पर सार्वजनिक जीवन का रहस्य आप मुझे बतायें तो वह मेरे लिए अचूक मार्ग-दर्शन का काम करेगा। बाकी चीजें तो विस्तार की हैं।"

"बहुत अच्छा। लेकिन आपको क्या बताऊं?" यह कहकर वे छत की तरफ देखने लगे। फिर सिर हिलाया और बोले, "अपने जीवन में जो चीज मुझे मदद दे रही है, वह आपको बता सकता हूं।"

"वही मैं चाहता हूं।" मैंने कहा।

"एक जुमले में कहूं तो वह है, बी व्हाट यू आर, अर्थात्, जैसे हो वैसे ही रहो। आप मेरा मतलब समझे?"

"जी हां, आपका मतलब यह है कि कार्यकर्त्ता अपने स्वाभाविक रूप में रहे और कृत्रिम रूप में कुछ बनने की कोशिश न करे।'

"ठीक समझा आपने।"

उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैंने कहा, "तो अब चलता हूं। आशीर्वाद दीजिये।"

"अभी से मुझे बुजुर्ग मत बना दीजिये। मैं तो आपकी ही तरह एक कार्यकर्त्ता हूं।" उन्होंने मुस्कराते हुए कहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"नहीं, आपका बरसों का तजुरबा है। अनेक जिम्मेदारियां आप संभाल चुके हैं। मेरे लिए तो आप हमेशा पूज्य रहेंगे।"

उन्होंने मेरे हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "भैया यह 'पूज्य' आदि की बात छोड़ो। सबको मिलकर काम करना है, साथ चलना है।"

□ □ □

एक हफ्ते के अन्दर ही, इलाहाबाद जिले की सिराथू तहसील के प्रसिद्ध कस्बे दारानगर में मैं गिरफ्तार किया गया, रात को थाना सैनी में बंद रखा गया, अगले दिन कोतवाली में। वहां से जिला जेल (मलाका) और पंद्रह दिन बाद नैनी सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया।

वहां मुझे रहते पूरा एक महीना भी नहीं बीता था कि एक दिन सुबह शास्त्रीजी आ गये। देखते ही उन्होंने मुझे सीने से लगा लिया और बोले, "आप तो बहुत पहले पकड़ लिये गये। बधाई!"

जिस बैरक में मैं था, उसी में शास्त्रीजी को भी एक कमरा मिला। रात को भोजन के समय एक ही मेज पर बैठकर खाना खाते थे। हम बीस कैदी उस बैरक में थे। शास्त्रीजी के एक पुराने मित्र ने सबका परिचय कराया।

दूसरे रोज शास्त्रीजी ने मुझसे पूछा, "आप राष्ट्रपति से मिले या नहीं?" कांग्रेस अध्यक्ष को उन दिनों राष्ट्रपति कहा जाता था। वे थे मौलाना अबुल कलाम आजाद।

"नहीं, दूर से देखा है, एक बार।"

"तो चलिये मेरे साथ।"

शास्त्रीजी लिवा ले गये। उस समय मौलाना से मेरी पहली भेंट हुई।

शास्त्रीजी सूबे में आन्दोलन की जानकारी मौलाना साहब को देने लगे। मैं यह सोचकर कि कहीं उन्हें कोई खास बात न करनी हो, उनके कमरे में चला गया और मौलाना की किताबें देखने लगा। अरबी, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, फ्रांसीसी आदि भाषाओं की बहुत-सी चुनी हुई किताबें थीं। करीब आधा घंटा वहां रुककर हम दोनों लौट आये।

□ □ □

नैनी में हमारी उस बैरक में दिन भर खूब मजाक चलता। शास्त्रीजी के आ जाने से रौनक और भी बढ़ गई। दूसरी बैरकों के मित्र भी आकर जमा होते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक महानुभाव बड़े विचित्र थे। वे हर घड़ी अपनी मूंछों पर ताव देते रहते थे और हाथ देखकर भविष्य बताया करते थे कि कौन कब छूटेगा। इसलिए उनके पास प्रायः लोग आते रहते थे। एक दिन शास्त्रीजी के पास वे खुद आये और बोले, "शास्त्रीजी, मुझे अपना हाथ तो दिखाइये।"

"क्या कीजियेगा हाथ देखकर ?" शास्त्रीजी ने कहा।

"आपका भविष्य बताऊंगा।" उन्होंने उत्तर दिया।

इतनी देर में वे भाई भी आ गये, जिन्होंने सबका परिचय कराया था। उन्होंने कहा, "शास्त्री जी, इनके साथ हम लोग तकल्लुफ नहीं करते।"

"मैं कब तकल्लुफ करता हूं। लेकिन वे पहले अपना हाथ देखें और…"

शास्त्रीजी की बात को बीच में ही काटते हुए उन्होंने कहा, "अपना हाथ तो मैं देख चुका। मेरा सब तय है और उसे मैंने लिख रखा है। एक-एक बात सच निकल रही है।"

शास्त्रीजी ने हंसते हुए पूछा, "तो बताइये, आप कभी आजाद देश के नागरिक बनेंगे या नहीं ?"

यह सुनकर सब हंस पड़े। पुराने मित्र ने कहा, "हमारे जेल की यह सबसे ज्यादा इंटरेस्टिंग फिगर हैं। अब इनका पाला आपसे पड़ा है।"

"फिगर हैं या फैक्ट ?" शास्त्रीजी बोले।

"यह बात खूब कही आपने, शास्त्रीजी ! ये दर असल फैक्ट हैं।"

ये कहीं फिक्शन तो नहीं हैं ?" शास्त्रीजी ने हंसकर कहा।

फिगर, फैक्ट और फिक्शन का यह मजाक कई रोज तक चलता रहा।

□ □ □

कानपुर के एक भाई, जिनकी वहां हलवाई की पुश्तैनी दुकान थी, रोज तरह-तरह की मिठाइयां बनाया करते थे। त्योहार हो तब तो पूछना ही क्या था ! चार रोज पहले से तैयारियां चलतीं और वे रात-दिन रसोई में ही जुटे रहते।

दीवाली का मौका था। उस दिन खास पकवान बनाये गये। एक मिठाई विशेष रूप से उन्होंने तैयार की—अंगूर। वह मिठाई एक दम अंगूर जैसी लगती थी। अन्दर का बीज भी साफ चमकता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन भाई ने एक तश्तरी में शास्त्रीजी को अंगूर लाकर दिये और कहा, "इसको चखिएगा। आपको पसद आ जायंगे तो-हम समझेगे कि हमारी मेहनत सफल हो गई।"

शास्त्रीजी ने दो अंगूर लेकर मुंह में डाले और कहा, "वाकई, बहुत अच्छे बने हैं।"

"आप खायें भी तो। दो दानों में क्या होगा!" उन भाई ने कहा।

"बाकी खाने के साथ खाऊंगा। अभी तो बानगी देखी है।"

वे भाई जब चले गये तो शास्त्रीजी ने कहा, "मैंने अंगूर चख लिए, तारीफ भी कर दी, अच्छे बने भी हैं, लेकिन…"

यह कह कर वे रुके और मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा, "मुझे ऐसी बनावटी चीजें पसन्द नहीं। अंगूर चाहिए तो ताजे ले लिए जायें, न कि मिठाई बनावें। कितनी मेहनत बेचारे को पड़ी होगी इसके बनाने में। यह समझ का फेर है।"

"यह बात कुछ अपने विकास पर निर्भर करती है," मैंने कहा।

वे बोले, "आपने ठीक कहा। वह आगे की कल्पना कर ही नहीं सकता। इतनी ही मेहनत किसी सार्थक चीज के लिए करे तो कितना बड़ा काम हो सकता है, जैसे मैडम क्यूरी ने किया था।"

"अद्भुत परिश्रम था उनका।"

वे बोले, "उस दम्पती की कहानी पढ़कर मैं दंग रह जाता हूं। सच पूछिये तो मैडम क्यूरी का मैं बहुत ही भक्त हूं। एक आदर्श महिला थीं वे।"

आगे चलकर शास्त्रीजी ने मैडम क्यूरी की जीवनी भी हिन्दी में लिखी। कुछ देर वे सोचते रहे। फिर बोले, "ये बनावटी चीजें तो मुझे जरा भी नही भातीं।"

मुझे शास्त्रीजी से हुई अपनी पहली मुलाकात की याद आ गई। मैंने कहा, "यह चीज तो आपने उस दिन घर पर मुझे बताई थी।"

"अच्छा, आपको याद है!" वे बोले, हाँ, जेल में भी आप देखते हैं कि लोग बनते हैं। हैं कुछ, जाहिर कुछ और करने की कोशिश करते हैं।"

फिर कुछ दुःख के साथ कहा, "आप रोज यहां जेल में देख रहे हैं। छोटी-छोटी चीजों के लिए लोग लड़ते हैं। कोई मक्खन न मिलने की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
शिकायत करता है, कोई चीनी की, कोई दूध की, मानो इन्हें खाने-पीने के अलावा दूसरा कुछ काम ही नहीं है। कहां इतना छोटापन और कहां ऊपर से बनते हैं बड़े देशभक्त !"

"मैं तो देखता हूं कि बहुतों के पास साबुन, तेल वगैरा विलायती हैं।" मैंने कहा।

वे बोले, "क्या कहा जाय ! गांधीजी की सबसे बड़ी देन दुनिया को यह है कि निजी और सार्वजनिक जीवन में एक समान होना चाहिए। यहां जमीन-आसमान का फर्क कर रखा है इन लोगों ने।" थोड़ा रुककर उन्होंने कहा, "पता नहीं, स्वराज्य के बार हमारा क्या हाल होगा और नई पीढ़ी को हम क्या प्रेरणा दे सकेंगे।"

"जिम्मेदारी महसूस करने पर गंभीरता अपने आप आयेगी।'

"आनी तो चाहिए।...मैंने जो अपने लिए सूत्र बनाया है—भीतर बाहर समरस पूरी तरह ऐसा होना कठिन है, लेकिन दोनों में जितना ज्यादा अन्तर होगा, उतना ही हम अयोग्य सिद्ध होंगे।" □

जन-ज्ञान [मासिक] में विज्ञापन दीजिए

- यह आपको एक लाख पाठकों से मिलवायेगा।
- आपके उत्पादन-संस्थान का उनसे परिचय करवायेगा।
- जन-ज्ञान केवल एक पत्रिका नहीं, एक आन्दोलन है।
- एक यज्ञ है यह, आप इसमें आहुति भी देंगे—जब आप जन-ज्ञान में विज्ञापन देंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सच्ची सत्याग्रह भावना

३० मार्च रविवार की सारी रात मेरे बिना पलक झपकाए जागते बीत गई एक मुस्लिम शहीद की लाश किसी तरह वल्लोमारान के भाइयों को मिल गई, जिसे एक मस्जिद में रक्खा गया। इसकी खबर मिलते ही अधिकारियों ने मस्जिद पर वार-वार आक्रमण किए और धमकियां दीं कि यदि लाश उनको न सौंपी गई, तो वे मातम मनाने वालों को शूट कर देंगे। इसकी और दूसरी अन्य घटनाओं की खबरें प्रति घण्टे मुझे बराबर मिलती रहीं और लोगों को मैं डटे रहने की सलाह देता रहा। अन्त में अधिकारियों ने धमकाने के झांसे देना रोक दिया। शहीद के जनाजे के साथ हजारों लोग चल दिए। रास्ते में एक और मुस्लिम शहीद का जनाजा मिल गया। मातम मनाने वाले दोनों दल मिल गए और हम लोग, जो अब संख्या में लगभग ३५,००० मुसलमान और हिन्दू थे, कब्रिस्तान पहुंच गए। हमारे पीछे-पीछे सशस्त्र कारें आ रही थीं, जो खड़खड़ाती हुई कब्रिस्तान तक आकर ठहर गई।

शहीद के कदमों के पास हकीम अजमल खां से मेरी पहल-पहल मुलाकात हुई और उस दिन से हम दोनों के बीच भाई-भाई जैसा याराना हो गया। लोग काफी शान्त रहे और जब हकीम अजमल खां और मैंने उनको धैर्य धारण करने और अपनी दुकानें खोलने को कहा, तो सब लोगों ने एकमत होकर हमारी बात मान ली। तीसरे पहर जब हम लोग दुकानें खुलवाने की सोच रहे थे, टाउन हाल के पास कुछ रेलवे स्टेशन पर मारे गए और घायलों के शव, नगरपिताओं के एक डेपुटेशन की मध्यस्थता से जो चीफ कमिश्नर से अपील करने गया था, मिल गए।

इस प्रकार बरामद हुई लाशों में दो के जनाजे कब्रिस्तान ले जाए गए जिनके साथ लगभग १५,००० लोग गए, जिनमें हिन्दुओं की संख्या अधिक थी। तीन लाशें श्मशान ले जाई गईं, जिनके साथ लगभग ३० हजार लोग गए, जिनमें मुसलमानों की संख्या अधिक थी।

मुसलमान नेताओं ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं हिन्दू अरथियों के साथ जाऊं, जिनमें से अनेक नेता हमारे साथ श्मशान भूमि तक गए। वह एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
विचित्र दृश्य था। मुस्लिम जनाजे मुख्यतया हिन्दुओं के कन्धों पर ले जाये जा रहे थे, और हिन्दुओं की अरथियां मुसलमानों के कन्धों पर ले जाई जा रही थीं। और तारीफ की बात यह हुई कि बाद में कन्धा देने वालों में से किसी ने यह शिकवा-शिकायत नहीं की कि उन्होंने किसी काफिर अथवा म्लेच्छ के शव को कन्धा दिया।

जैसे ही जनाजा मस्जिद में प्रातः की नमाज के लिए ले जाया गया और मुल्लाओं ने मुझसे और हिन्दुओं से पीठ फेर कर खड़े होने को कहा, उसी समय दौड़ता हुआ इमाम उनके पास आया, उनको रोका, और मुझसे बोला—"स्वामी! हम सब लोग खुदा के बन्दे हैं। हम चाहते हैं कि आप हमारे साथ नमाज में शामिल हों।" और मैं पूरी श्रद्धा के साथ नमाज में शरीक हुआ।

यहां तक सत्याग्रह की भावना सर्वोच्च रही। यद्यपि मृत लोगों के परिवार बड़े दुःख से पीड़ित थे और सभी लोग मातम मना रहे थे, तथापि वैमनस्य का कोई चिन्ह भी नहीं दीख पड़ता था और न सरकार के विरोध में कोई हिंसक घटना हुई। श्मशान भूमि पर मैंने लोगों से दुकानें खोलने के लिए जोरदार अपील की और अगले दिन प्रातः से अपना काम धन्धा शुरू करने को कहा।

प्रातः काल से मैंने कुछ खाया-पिया न था और वैसा करने की मैं सोच ही रहा था कि उसी समय डा० अब्दुर्रहमान ने कुछ विचार-विमर्श के लिए मुझे बुलाने को आदमी भेजा। डा० अन्सारी अभी भी दिल्ली से बाहर थे, और सरकार का सामना तथा लोगों का नेतृत्व करने के लिए एक अध्यक्ष की जरूरत थी। अतः डा० अन्सारी की अनुपस्थिति में मुझे अध्यक्ष बनने की स्वीकृति देनी पड़ी, और जब पहली अप्रैल को डा० अन्सारी वापस आए, तो उन्होंने जिद की कि मैं ही स्थानीय सत्याग्रह सभा का अध्यक्ष बना रहूं।

मंगल (१ अप्रैल १९१९) को प्रातः तड़के ही मैं घंटाघर पहुंचा। पांच मिनट भी न बीते होंगे कि लगभग २,००० लोग इकट्ठा हो गए। मैंने उनको जोर देकर कहा कि वे अपनी दुकानें खोल दें। वे लोग वैसा करने को वापस लौटने वाले ही थे कि उनमें से कुछ लोगों ने टाउन हाल की ओर मेरा ध्यान आकर्षित किया, जहां उत्तेजना भड़काने वाला फौजी प्रदर्शन हो रहा था, और चांदनी चौक के सामने म्युनिसिपल उद्यान के दोनों फाटकों पर पुलिस गार्ड मुस्तैद थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसी समय हकीम अजमल खां भी आ गए और भीड़ की संख्या बढ़कर ५,००० हो गई। हकीम साहब और मैंने सन्तरियों से एक फाटक का द्वार खोलने को कहा। द्वार खुलने पर हम दोनों अन्दर गए और हमने मि० पी० एल० ओर्ड और सी० आई० डी० पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट से कहा कि सेना लोगों की आंखों के सामने से हटा ली जाए, जिससे दुकानें खोलने वालों को कोई कठिनाई न हो। मि० ओर्ड ने कहा कि वे डिप्टी कमिश्नर से परामर्श करेंगे और वे फोन पर बात करने के लिए चले गए। थोड़ी ही देर में वे वापस लौट आए और सेना को लोगों की आंखों के सामने से हटने का आदेश दे दिया। मि० ओर्ड को धन्यवाद देकर हम वहां से चल दिए।

अब जनता के नेताओं ने सारे नगर की गश्त लगाई, जिससे दोपहर १२ बजे तक सारी, यहां तक कि दूर-दूर की बस्तियों की भी दुकानें खुल गईं और काम धन्धे चालू हो गए। आखिरी दुकान खुलवाकर जब मैं सूईवालान बाजार से लौट रहा था, मुझे खबर मिली कि घंटाघर बाजार के समीप सेना और पुलिस फिर मुस्तैद कर दी गई है। मैं वहां के लिए अकेला ही तुरन्त चल पड़ा और वहां जाकर मैंने देखा कि एक सशस्त्र पुलिस का दस्ता, कुछ घुड़सवार और प्यादा के साथ सैनिक कमाण्डिंग अफसर घोड़े पर सवार और मि० ओर्ड पैदल चौक में डटे हुए थे।

मैंने ओर्ड से इसका मतलब पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया कि चूंकि नेता लोग दुकानें खुलवाने में सफल नहीं हुए, और भारी भीड़ जमा हो गई, इसलिए मजबूर होकर उन्हें फौज और सशस्त्र पुलिस को बुलाना पड़ा। मैंने इकट्ठे हुए लोगों से पूछा कि वे लोग वहां क्यों आए। इस पर उन्होंने उत्तर दिया कि सेना को देखकर आकर्षित होकर वे लोग आए, तो डर से कुछ लोगों ने अपनी दुकानें बन्द कर दीं।

मैंने मि० ओर्ड से कहा कि सेना और पुलिस के साथ वे वहां से हट जाएं, और भीड़ की जिम्मेदारी मैंने अपने ऊपर ले ली। मैंने यह भी कह दिया कि यदि उत्तेजित करने वाली सेना लोगों की आंखों के सामने रहेगी, तो होने वाली गड़बड़ी के लिए सारी जिम्मेदारी उनके ऊपर होगी। मि० ओर्ड ने मेरा कहना मान लिया, जिसके बाद दस मिनट के भीतर ही सारी भीड़ तितर-बितर हो गई।

दोपहर ढले १ बजे मैंने फिर सारे शहर का एक दौरा लगाया। बाजारों का कामकाज चल रहा था और लोग शान्त दीख पड़ रहे थे। मैं अपने स्थान पर पहुंचने को ही था कि मुझे खबर मिली कि वाइसराय की स्पेशल ट्रेन ३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बजे आ गई थी और स्थानीय अधिकारी लोग दिल्ली रेलवे [illegible] पर उनसे वार्ता कर रहे थे। कोई सवारी न मिल सकी इसलिए मैं पैदल ही रेलवे स्टेशन की ओर चल पड़ा किन्तु वाइसराय की स्पेशल मेरे पहुंचने से पहले ही छूट गई। मैं इस विचार से वहां गया था कि मैं वाइसराय से कहूं कि वे ट्रेन से उतरें और जनरल अस्पताल जाकर घायलों को देखें जिससे स्थिति में कुछ सुधार हो परन्तु वह नहीं होना था। मैं बुरी तरह हताश हो गया, किन्तु यह खबर सुनकर कि वाइसराय ने यह आदेश दिया है कि एक गैर-सरकारी कमेटी सारे मामले की जांच करे और अपनी रिपोर्ट दे, इससे कुछ तसल्ली हुई। लेकिन उस समय मेरा आश्चर्य बढ़ा और उसके साथ उसके फलस्वरूप मेरी निराशा बढ़ गई जब बाद में मालूम हुआ कि वाइसराय की विज्ञप्ति में अक्षरशः वही एक पक्षीय रिपोर्ट पुनः प्रकाशित कर दी गई, जो अधिकारियों ने दी थी।

सायं लगभग ७ बजे मैं अपने आश्रम लौटा और मैंने ८ बजे खाना खाया। इसके बाद पूरे तीन घण्टे विचार-विमर्श चलता रहा, और अकेला निर्णयदाता पंच होने के नाते प्रार्थनापत्र पेश होते रहे। मैं ११ बजे सो गया और ढाई बजे उठ पड़ा। प्रातः ५ बजे तक मैं नित्य कृत्यों से निवृत्त होकर अविलम्ब शहर के लिए चल पड़ा। १९ अप्रैल, १९१९ तक मेरा यही कार्यक्रम रहा, जिस दिन हड़ताल समाप्त हो गई। एक गिलास शरबत मैं तीसरे पहर पीता था और रात को ८ बजे खाना खाने का मेरा प्रतिदिन का कार्यक्रम था। जब तक रौलट बिल स्थगित नहीं हो गया, तब तक प्रत्येक रविवार को २४ घण्टे मैं व्रत रखता था।

दूसरी और तीसरी अप्रैल शान्तिपूर्वक बीत गई। केवल कर्नल बीडन (दिल्ली के डिप्टी कमिश्नर) की यह उक्ति चित्त को खटकाने वाली हुई कि जिनको शूट कर दिया जाना चाहिए था वे अभी भी आजादी से मटरगश्ती कर रहे हैं। स्पष्ट ही उनका मतलब मुझसे और मेरे सत्याग्रही साथियों से था। हिन्दुओं और मुसलमानों की मिल्लत का एक बड़ा अच्छा परिणाम यह हुआ कि चोरियों और झगड़े बखेड़ों का अन्त हो गया, शराबी लोग पीकर बाहर निकलने में शर्माने लगे, और जुए के अड्डे भी वीरान हो गए। पूरे बीस दिनों के लिए ऐसा जान पड़ने लगा, मानो दिल्ली में रामराज्य आ गया।

उलझनों वाले दीवानी के मुकद्दमे जो वर्षों से निपटारे के लिए लटके हुए थे, हकीम अजमल खां साहब ने सरपंची के लिए मुझे सौंप दिए। एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
मामले में हिन्दुओं का मुसलमानों से विरोध था। उसकी सीधी सादी जांच हुई। मैं पार्टियों के मोहल्ले गया। दोनों पक्षों ने सत्य कबूल कर लिया और मेरे लिखाए वक्तव्य के अनुसार एक संधिपत्र पर दोनों पक्षों ने हस्ताक्षर कर दिए। बिना ब्रिटिश अदालतों की शरण लिए डिग्री तुरन्त प्राप्त हो गई। बावड़ी बाजार में एक झगड़ा हो गया। मैंने लाला बुलाकी दास को समझौते के लिए मामला भेज दिया। अपराधी पक्ष के लोगों ने, यद्यपि वे ऊंची जाति के लोग थे, माफी मांगी और कुछ धन सत्याग्रह कोष के लिए दान किया, और तदनुसार मेरे पास रिपोर्ट भेजी गई। मैं ठीक-ठीक नहीं जानता कि हकीम अजमल खां साहब ने कितने मुकद्दमों के फैसले किए, मगर अपने विषय में मुझे याद है कि मैंने लगभग दो दर्जन से अधिक मुकद्दमों पर फैसले दिये, जो ब्रिटिश न्यायालयों में वर्षों तक लटके रहते।

हिन्दू-मुस्लिम एकता एक आश्चर्यजनक बात थी। सारे सन्देहों और मन-मुटावों का अन्त हो गया था। मेरे कहने का आशय एक मुकद्दमे से समझ में आजाएगा। एक आदमी जेब में पांच रुपये के नोट लिए जा रहा था। उनमें एक नोट की झलक बाहर दीख पड़ रही थी। एक चौदह वर्ष के मुस्लिम बालक ने पास से गुजरते हुए दो उंगलियों के बीच दबाकर उसे खींच लिया। ड्यूटी पर तैनात सन्तरी ने उसे गिरफ्तार कर लिया और उसे लेकर लपकते हुए उस हिन्दू के पास गया और बोला—"महाशय! इस बदमाश ने यह नोट आपकी जेब से निकाल लिया।"

लालाजी ने लड़के की ओर दया की दृष्टि से देखा। फिर अपनी जेब से नोटों का बंडल निकाला, और प्रकाश्य रूप में उन्हें गिनने लगा और गिनने के बाद बोला कि उसके नोट पूरे हैं। लाला ने जोर देकर कहा कि लड़के को छोड़ दिया जाए। वह छोड़ दिया गया, और लालाजी एक गली की ओर मुड़ गए। उसी समय लड़का दौड़कर लाला के पास पहुंचा और उनके हाथों में नोट देकर उनके पैरों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ा कर बोला—"महाशयजी, मेरी बूढ़ी मां और मेरी छोटी बहन ने दो दिनों से कुछ खाने को नहीं पाया, और मैं हड़ताल के कारण बेकार हूं। इसीलिए मैं अपने को न रोक सका। महाशय, मुझे माफ कीजिए।

हिन्दू व्यापारी, जिसने शायद दिल पर आत्मा के डंक मारने की पीड़ा पहले कभी अनुभव न की होगी, हतप्रभ हो गया। वह बोला—"मेरे बेटे! अब यह नोट तुम्हारा हो गया। मेरे साथ, आओ, मैं तुम्हारी माता के लिए कुछ भेंट दूंगा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह हिन्दू लड़के को अपने घर ले गया, जहां उसे कुछ आटा, घी और दाल दिया गया, जिससे उसने अपने परिवार की क्षुधा-निवृत्ति की।

यह घटना १२ अप्रैल की है, जब हड़ताल पूरे जोरों पर चल रही थी। यह सारी घटना उस लड़के बशीर ने स्वयं मुझको बताई।

गुण्डों का अस्तित्व ही मिट गया जान पड़ता था। प्रत्येक मुसलमान प्रत्येक हिन्दू महिला को अपनी माता, बहन या लड़की की तरह मानता था। जैसा प्रत्येक हिन्दू प्रत्येक मुस्लिम महिला को मानता था।

काश एक सप्ताह को वह पुरानी भावना जो सारी राजधानी में फैल गयी थी, फिर लौट आती और सारे भारत में फैल जाती; तो वर्तमान की अपवित्र भावनाओं और हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य का सदा के लिए अन्त हो जाता। □

चुटकुले

(१) पत्नी को सामान बांधते देख पति ने पूछा, "यह क्या कर रही हो ?"

"अब मुझसे और अधिक नहीं सहा जाता, शादी के बाद की सारी जिन्दगी घरेलू झगड़ों, बहसबाजी में बीत गयी। अब मैं घर छोड़कर अपने पिता के यहां शांति से रहूंगी," पत्नी ने रोते हुए कहा।

"ठीक है, अब मुझसे भी नहीं सहा जाता मैं भी घर छोड़कर अपने ससुर के यहां शांति से रहूंगा, "पति ने कहा।

(२) नाई ने ग्राहक की दाढ़ी बनाते हुए उससे पूछा "आप कितने भाई हैं ?" उत्तर मिला, "तुम्हारे उस्तरे से बच गया तो चार, नहीं तो तीन"

(३) जज : तुमने होटल में चोरी की ?

चोर : जी हां, मैं भूखा था।

जज : तो तुमने खाना चुराने की बजाय नोट क्यों चुराए ?

चोर : हुजूर : मैं इज्जतदार आदमी हूं, बगैर बिल चुकाये खाना नहीं खाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज अजमेर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर का १०४ वां वार्षिक महोत्सव २४ से २६ नवम्बर तक समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस उत्सव में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० शिव कुमार शास्त्री (भू०पू० सांसद), श्री वेदप्रकाशजी श्रोत्रिय (दिल्ली), ख्याति प्राप्त भजनोपदेशक पं० बेगराज जी (मेरठ), श्री ओम् प्रकाश जी वर्मा (रेडियो सिंगर यमुनानगर) ओजस्वी वक्ता श्री स्वामी कर्त्तव्यानन्दजी, राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के भजनोपदेशक श्री भूपेन्द्रसिंहजी, हिमाचल प्रदेश के ब्रह्मचारीआर्य नरेश आदि के तीन दिन तक व्याख्यान प्रवचन, उपदेश, भजन आदि की अमृत वर्षा होती रही जिसका अजमेर के हजारों धर्म प्रेमी नर-नारियों ने लाभ उठाया।

उत्सव के प्रथम दिवस रविवार २४ नवम्बर को अजमेर में भव्य और विशाल शोभा यात्रा (नगर कीर्तन) निकाली गई, जिसमें घोड़े, ऊट, बग्घी, नगाड़े, बैंड, सैकड़ों नर-नारी अजमेर नगर की शिक्षण संस्थाओं की हजारों छात्र छात्राओं, भजन मंडलियों, ग्रामीण समुदाय के लोगों ने ओ३म् पताकायें और विभिन्न बैनर लिए हुए और नारे लगाते हुए उत्साह पूर्वक भाग लिया :

प्रो० देव शर्मा की अध्यक्षता, एवं डा० कृष्णपालसिंह के संयोजन में आर्य युवक सम्मेलन हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से इस प्रकार सम्पन हुआ।—प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य, महामन्त्री श्रीभगवान्देव "चैतन्य", वरिष्ठ उपप्रधान श्री ज्ञानप्रकाश "आर्य", उपप्रधान श्री (?)तशशि मितल व श्रीमती चांदरानी शर्मा, संयुक्त मंत्री श्री रामकृष्ण गोतम, उपमंत्री श्री रोशन लाल बहल व श्री शान्ति कुमार, वित्त मंत्री श्री शिवदत्त (?)हता, प्रचार मन्त्री श्री स्वामी सुबोधानन्द, वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी (?)ह्मानन्द, संचालक आर्य वीरदलश्री कृष्ण चन्द्र "आर्य", उपसचांलक श्री (?)हिनसिंह व श्री मुरारीलाल "आर्य"।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रजनीश हिमगिरि की शरण में

—सत्यपाल शास्त्री

रजनीश जैसे 'भगवान्' बनकर कब तक जनता को गुमराह करते रहेंगे ?

कुल्लू-मनाली सड़क पर एक छोटे-से मोटल (होटल, जिसमें मोटर गराज भी हो) के तीन मामूली कमरे, सेवा के लिए मुट्ठीभर सेवक, बेंत की एक मामूली कुर्सी—नवकुबेरों के शक्तिशाली गुरु रजनीश का यह पतन नहीं तो और क्या है, जो केवल एक-डेढ़ मास पूर्व ३।। हजार सदस्यों वाले रजनीशपुरम् कम्यून का सर्वेसर्वा था। जैसा आप जानते हैं, रजनीशपुरम् अमरीकन राज्य ओरेगान के अविकसित अन्दरूनी भाग में फैला हुआ है। कहना चाहिए, फैला हुआ था।

अभी रजनीश का भविष्य अनिश्चित है, लेकिन उनका पिछला रिकार्ड देखा जाये, तो आश्चर्य न होगा, यदि वे शक्तिशाली राजनीतिबाजों और सरकारी अधिकारियों को जुल दे जायें। रजनीश अच्छी तरह जानते हैं कि धर्म को धन्धे के रूप में कैसे चलाया जाता है। उन्हें यह खेल खेलने में महारथ हासिल है।

रजनीश की लगभग एक सौ रॉल्स रायस कारें छिन गयीं, विमान छिन गये, सुन्दर संन्यासिनियों की फौज का साथ छूट गया, शान-शौकत और अय्याशी की वह जिन्दगी न रही, जिस पर संसार के बड़े-बड़े शक्तिशाली और समृद्ध लोग रश्क करते थे प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि इतना कुछ हो जाने पर भी रजनीश को इस बात का मलाल या परेशानी नहीं कि देखते ही देखते यह क्या हो गया।

दो सप्ताह से अधिक हुए, जब रजनीश एक चार्टर्ड वायुदूत एक विमान में कुल्लू घाटी के भुन्तर हवाई अड्डे पर उतरे और एक टोयटा का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में सीधे ३७ किलोमीटर दूर कटराई के निजी स्वामित्व वाले स्न रिजार्ट्स नामक मोटल में ले जाये गये। ड्राइवर की सीट पर बैठे थे उनके विश्वस्ततम शिष्यों में से एक विनोद भारती (भूतपूर्व फिल्मी अभिनेता विनोद खन्ना)। रजनीश जिस कमरे में रहते हैं, उसमें मोटल के किसी कर्मचारी को जाने की अनुमति नहीं। शिष्यों को उनके दर्शन तभी होते हैं (वह भी दूर से) जब वे समीप में ही बह रही व्यास नदी के किनारे घूमने आते हैं।

उनकी दो निकटतम सलाहकार देवियां मां प्रेमहास्या (अमरीकन) और मां योगलक्ष्मी (भारतीय) देश भर का दौरा कर रही हैं, ताकि उनके विवादास्पद गुरु को रहने के लिए कोई स्थान मिल जाये। विनोद भारती, स्वामी देवराज (जार्ज मैरेडिथ रजनीश के निजी चिकित्सक और मां प्रेमहास्या के पति) एवं तीन चार अन्य अमरीकन शिष्य अपने गुरु की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उनके साथ रहते हैं।

मां प्रेमहास्या सन् १९७५ तक हालीवुड के अलफान प्रोडक्शन्स से सम्बन्धित थीं। वे छह वर्ष तक वहां काम करती रही हैं। अब वे रजनीश फ्रैंड्स इंटरनेशनल की अध्यक्षा हैं और उन्हें संसार के विभिन्न भागों में रजनीश कम्यून चलाने का काम सौंपा गया है। इस समय इस प्रकार के छह कम्यून जर्मनी में और एक-एक स्विटजरलैंड और आस्ट्रेलिया में चल रहे हैं। इससे पूर्व मां प्रेमहास्या बवर्ली हिल्स की एक डिजाइन कम्पनी और हालीवुड की एक कला कम्पनी में भी रह चुकी हैं।

मां प्रेमहास्या का नाम पहले फ्रांसुआ रूडी था। वे 'गाडफादर" की संयुक्त प्रोड्यूसर हैं। वे इस फिल्म के डायरैक्टर की तलाकशुदा पत्नी हैं। उनका कहना है कि 'भगवान् रजनीश को चौंकाने में मजा आता है!' उन्होंने ही 'हालीवुड ग्रुप नाम से जाने जाने वाले गुट के शिष्यों को (विशेषतः दक्षिण कैलिफोर्निया के धनी लोगों को) रजनीशपुरम् के शक्तिशाली 'मां आनन्द शीला गिरोह' का स्थान लेने के लिए संगठित किया। मां प्रेमहास्या का कहना है कि 'मां आनन्दशीला मुझ से बहुत ईर्ष्या करती थीं, क्योंकि मेरे पति भगवान् के निजी चिकित्सक होने के नाते उनके अत्यन्त निकट थे।'

रजनीशपुरम् की 'महल क्रान्ति' के बाद 'सालीवुड ग्रुप' हावी हो गया और मां आनन्दशीला (पहले जो शीला अम्बालाल पटेल के नाम से जानी जाती थीं) जर्मनी भाग गयीं। शीला गुजराती हैं और अमरीकन से ब्याही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हैं। जब रजनीश बे-आबरू होकर अमरीका से निकले, तब उनके शिविर में भगदड़ मच गई। लेकिन मां योग लक्ष्मी के हमदर्द भारतीय शिष्य इस बात से प्रसन्न हैं कि रजनीश पुनः भारत लौट आये हैं।

मां योगलक्ष्मी का नाम पहले लक्ष्मी ठाकरसी कुरुवा था। उनकी उम्र ५२ वर्ष है। पुणे आश्रम में वे रजनीश की निजी सचिव और रजनीश फाउंडेशन की भारतीय शाखा की मैनेजिंग ट्रस्टी थीं। समझा जाता है कि तब वे रजनीश के सबसे अधिक निकट थीं। उस समय मां आनन्दशीला और मां प्रेमहास्या रजनीश के सम्राज्य रूपी सोपान में बहुत नीचे थीं। सन् १९८१ में जब कम्यून के लिए नये स्थान की खोज प्रारम्भ हुई और रजनीश अमरीका चले गये, तब मां आनन्दशीला (उम्र ३५ वर्ष) के भाग्य का सितारा चमका और वे पटरानी बन गयीं।

चार वर्ष से अधिक समय तक अमरीका में रहने के बाद रजनीश पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंगे गये हैं। अब वे बातचीत को रोचक बनाने के लिए बिच (कुतिया), फ्रीक (सनक) बुलशिट (असंगतिपूर्ण उक्ति) सदृश अमरीकन बोल चाल के शब्द बोलने लगे हैं।

पर्वतीय विश्राम स्थल कटराई में रजनीश की बातें सुनने के बाद आगन्तुक सोचने लगता है कि भारत की जटिल समस्याओं के बारे में जो लोग रजनीश को जानकारी देते हैं, वे कितने योग्य अथवा अयोग्य हैं। यदि रजनीश अखबार नहीं पढ़ते और टैलीविजन नहीं देखते, तो भी कुछ लोग होंगे, जो उन्हें सामयिक घटनाओं की जानकारी देते होंगे। रजनीश राजनीति से लेकर परिवार नियोजन तक प्रायः सब विषयों पर अपने विचार प्रकट करते रहते हैं। कुछ बुद्धिजीवियों का मत है कि रजनीश वाग्मी नहीं, अपितु वाचाल हैं। वे बोलते जाते हैं, बोलते जाते हैं, बोलते जाते हैं; चुप होने का नाम ही नहीं लेते। यह प्रश्न उत्तर मांगता है कि इन सब विषयों पर उन्हें सामग्री कौन देता है। अकेला एक व्यक्ति तो इतने विषयों की गहरी जानकारी प्राप्त नहीं कर सकता।

इस यक्ष प्रश्न के उत्तर पर ही उनका भावी भाग्य निर्भर है, क्योंकि अब जनता उनके स्वच्छन्द यौनाचार सम्बन्धी विचारों को समझ ही नहीं पा रही; उन्हें हज्म करना तो दूर की बात है।

□

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जाएं।

२. मजहब के आधार पर पुलिस, सेना या किसी भी सरकारी विभाग में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

३. पंजाब, कश्मीर, असम व देश के अन्य भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यंत्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

४. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

५. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाए और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

६. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटाई जाए और वहां भारत के नागरिकों के स्थायी तौर पर बसने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन्हें वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह लिखे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त मिटाया जाए।

११. बिहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश तुरन्त रद्द किया जाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वधु व वर की आवश्यकता

२२-वर्षीय कान्यकुन्ज वैश्य (कन्नौजिया वैश्य) युवक शिक्षा १२वीं तक व्यापारी के लिए वधु व १८-वर्षीय युवती शिक्षा १२-वीं तक गेहुंआ रंग, इकहरा शरीर, के लिए वर की आवश्यकता है।

एम· एस. गुप्त

३१९ घोड़पदेव रोड, बम्बई-१०

वर चाहिए

लड़की की आयु २० वर्ष, कद ५ फुट १ इंच, दसवीं पास, दो भाई, एक बहिन, पिता प्रिंसिपल, रंग साफ, नाक-नक्श अति सुन्दर, गृह कार्य में दक्ष। सम्पर्क करें—

जन-ज्ञान (मासिक) करौल बाग, नई दिल्ली-५

केवल इक्कीस रुपए दक्षिणा देकर जन-ज्ञान में अपना वैवाहिक विज्ञापन प्रकाशित करवायें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य

१. ऋग्वेद (६ मण्डल) महर्षि दयानन्द कृत भाष्य

२. ग्रन्थ १०X१५ इंच के ६०४ पृष्ठों में है। सुनहरी कपड़े की जिल्द। वजन लगभग २ किलो है। मन्त्र, शब्दार्थ सहित

पुस्तकालय संस्करण : मूल्य १२५)

आर्ट पेपर पर उपहार संस्करण : २७५)

३. ऋग्वेद (७ से १० मण्डल) —भावार्थ

४, सुनहरी जिल्द (१०X१५ इंच साइज, पृष्ठ ५०० से अधिक) वजन लगभग २ किलो पुस्तकालय संस्करण : मू० १२५)

उपहार संस्करण : मू० २७५)

५. यजुर्वेद-सामवेद भाष्य—पृष्ठ ४८०। साइज १०X१५ इंच। वजन लगभग २ किलो। भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती—आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री। पुस्तकालय संस्करण : मू० १२५)

उपहार संस्करण : मू० २७५)

६. अथर्ववेद भाषा भाष्य : १०X१५ इंच के ४५६ पृष्ठ।

सुनहरी जिल्द पुस्तकालय संस्करण मूल्य १२५)

उपहार संस्करण : मूल्य २७५)

७. वैदिक सम्पत्ति स्व. रघुनन्दन शर्मा मू० १०१)

८. यजुर्वेद भाष्य महर्षि दयानन्द कृत सजिल्द मू० ८५)

९. अथर्ववेद परिचय : पं० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड। मू० ८)

१०. सामवेद भाष्य सजिल्द मू० ८०)

११. पुकार पशुओं की मू० १५)

१२. वेदांजलि सजिल्द मू० ३५)

१३. अपने प्रभु से प्रार्थना मू० १०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४. श्री मद्दयानन्द प्रकाश : स्वामीजी का भक्तिपूर्ण जीवन चरित्र

स्वामी सत्यानन्द जी की लेखनी का प्रसाद, जिसे पढ़कर आप भाव विभोर हो जाएंगे। सजिल्द मू० ३०)

१५. उपनिषद् संग्रह : महात्मा नारायण स्वामी जी। मूल्य २०)
पांच उपनिषदों की विस्तृत व्याख्या।

१६. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी) नया संस्करण मू० १)५०

१७. वैदिक अर्थशास्त्र परिचय : पं० भारतेन्द्रनाथ। मूल्य २)

१८. ईश्वर-भक्ति : स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती मू० ३)

१९. धर्म का मार्ग—पं० सुरेश चन्द्र विद्यालंकार मू० ३)
—महात्मा नारायणस्वामी

२०. धर्म का सार ९ कथाएं मू० ३)

२१. आर्याभिविनय (काव्यमय व्याख्या) मू० ३)

२२. ऋषि दयानन्द ने कहा था : मू० ३)

२३. ईश्वरीय पुस्तक में क्या होना चाहिए ? मू० १)५०

२४. यज्ञ प्रसाद (महात्मा आनन्द स्वामी) मू० १)५०

महात्मा आनन्द स्वामी के उपदेशों का सार यज्ञ के बाद प्रसाद रूप में सभी वांटें।

२५. स्वामी दयानन्द [जीवन चरित्र] मू० ३)

२६. ज्योति स्तम्भ मू० १०)

२७. विश्व को आर्य समाज का सन्देश : पं० भारतेन्द्रनाथ मू० ६० पैसे

२८. सत्यार्थ प्रकाश : १. अनुपम शताब्दी संस्करण १०X१५ इंच, बड़ा साइज मूल्य १५१ रु०

२९. ,, २, अनुपम शताब्दी संस्करण १०X१५] इंच, सुनहरी जिल्द, आर्ट पेपर पर २५१)

३०. संस्कार विधि सजिल्द मूल्य १५)

३१. आदर्श परिवार छोटा साइज) मू० २)

३२. सुखी गृहस्थ ६० पैसे

३३. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश (छोटा साइज) मू० ५० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३४. बोधरात्रि (महाकाव्य) मू० १५)
३५. दयानन्द चित्र कला (१८ चित्रों सहित सम्पूर्ण जीवनी) मू० २)
३६. गीत मंजरी (नया संस्करण) मू० ३)
३७. वैदिक संध्या (३२ पृष्ठ) मू० ६० पैसे

प्रचार पुस्तिकाएं (ट्रैक्ट)

३८. आर्य समाज क्या मानता है ? श्री मदनमोहन विद्यासागर मूल्य ६० पैसे

३९. महर्षि दयानन्द की विशेषताएं : महात्मा नारायणस्वामी मू० ६० पैसे

४०. आर्य समाज की मान्यताएं : पं० रामचन्द्र देहलवी मू० ६० पैसे

४१. विश्व को वेद का सन्देश : भारतेन्द्रनाथ मू० ६० पैसे
४२. आर्य समाज के दस नियम : व्याख्या सहित मू० ६० पैसे
४३. मां गायत्री मू० ६० पैसे
४४. सुख का मार्ग : पं० भारतेन्द्रनाथ मू० ६० पैसे
४५. आर्य कौन ? पं० हरिशरण सिद्धांतालंकार मू० ६० पैसे
आर्य के सम्बन्ध में शास्त्रों व महापुरुषों के विचार
४६. स्वामी दयानन्द सरस्वती : संक्षिप्त जीवनी १)५० पैसे

अंग्रेजी साहित्य

४७. Light of Truth—By Swami Dayanand Saraswati—
सत्यार्थ प्रकाश का सर्वश्रेष्ठ अंग्रेजी अनुवाद Rs. ५०)
४८. Light of Truth (Abridged) Rs. ५)
४९. The Concept of God Rs. ५०)
५०. An Introduction to the Commentary on the Vedas by Swami Dayanand Rs. २५)
५१. Teachings of Swami Dayanand Rs. ५.००
इस ग्रंथ में स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला गया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५२. Message of the Arya Samaj to the Universe Rs. १.००
(आर्य समाज का विश्व को संदेश का अंग्रेजी अनुवाद)

५३. Vedic Prayer ६) सजिल्द Rs. ८.००
५४. Dayanand the Great paise ६०
५५. An Introduction to the Arya Samaj paise ६०
५६. What is Yoga ? paise ६०
५७. History of the Assassins Rs. ३०)
५८. A short Life of Swami Dayanand Saraswati Rs. ५)
५९. The Great Gayatri paise ६०
६०. Inside Congress Rs. ३०)
६१. Essence of Vedic Religion paise ६०
६२. The Fundamentals of the Arya Samaj paise ६०
६३. Ramayana (Two parts) by Shri H.N. Kapoor Rs. ३०)

विविध साहित्य

६४. वेदज्योति—चारों वेदों के १००-१०० मंत्रों का अर्थसहित संग्रह संग्रहकर्त्ता व भाष्यकार—स्वामी अच्युतानन्द जी सरस्वती। मूल्य १५)

६५. भाई परमानन्द : जीवन चरित्र—बनारसीसिंह सजिल्द मूल्य २०)

बच्चों में राष्ट्र व धर्म भक्ति के भाव भरने के लिए प्रस्तुत जीवनी अत्यन्त उपयोगी है। मू० ५)

६६. वन्दना के स्वर (काव्यसंग्रह) क्षेमचन्द्र 'सुमन' मूल्य १५)
६७. योग की राह पर : योगिराज जगन्नाथ पथिक मूल्य १)
६८. बृहस्पति राजधर्म सूत्र मू० २)
६९. उपनिषद् कथा माला : महात्मा नारायण स्वामी मू० ३)
७०. स्वामी श्रद्धानन्द (जीवन परिचय) मू० २)
७१. योग और ब्रह्मचर्य (सचित्र) मू० ३)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७२. मुझे आर्यसमाज क्यों प्रिय है?—यशपाल आर्यबन्धु मू० १)५०पैसे

७३. भारत के वीर बच्चों की अमर कहानियां मू० ३)

पुस्तक बच्चों के लिए अत्यन्त प्रेरक व उपयोगी है।

७४. उपदेश मंजरी-महर्षि दयानन्द के पूना में दिए गए व्याख्यानों का संग्रह। मू० ५)

७५. वैदिक समाज व्यवस्था लेखक—डा० प्रशान्त वेदालंकार सजिल्द मूल्य २०)

७६. ईश्वर : ससार के प्रसिद्ध वैज्ञानिकों वी दृष्टि में। सजिल्द मूल्य २०)

७७. महर्षि दयानन्द के राजनैतिक सिद्धान्त
श्री लक्ष्मीदत्त दीक्षित लिखित मूल्य २)

७८. गोमांसाहार वैदिक नहीं मू० २)

७९. जीवन को उन्नत करने का मार्ग—पं० विश्वनाथ विद्यामार्त्तण्ड मू० २)

८०. गायत्री मंत्र का चार्ट चार रंगों में मूल्य १)५०

८१. कायाकल्प—पं० बुद्धदेव विद्यालंकार की अमर रचना मू० ३)

८२. सोम सरोवर—स्व. पं० चमूपति मू० २५)

८३. कांग्रेस की अन्तःकथा—अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द मू० ४०)

८४. सुखी गृहस्थ मूल्य ६० पैसे

८५. ऋग्वेद शतक मूल्य ३)

८६. प्रार्थना पुष्पांजलि—डा० रामनाथ वेदालंकार मूल्य ८)

८७. यज्ञ-मीमांसा (अग्निहोत्र दर्पण डा० रामनाथ वेदालंकार) मू० ३०)

८८. प्रकृति और सर्ग : आचार्य उदयवीर शास्त्री मू० ८)

८९. सत्यार्थ-प्रकाश का महत्त्व : पं० बिहारीलाल शास्त्री मू० १०)

९०. सत्यार्थ-प्रकाश में क्या है ? प्रो० धर्मवीर मू० १)५०

९१. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका मू० ३०)

९२. योगासन मू० २)

९३. वैदिक डायरी (१९८६) मू० ८)

९४. पांच रंग का कलैन्डर बढ़िया, नेताओं के रंगीन चित्रों सहित मू० २)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू धर्म रक्षक प्रचार साहित्य बांटिए

१. चुनौती इस्लामी साम्राज्यवाद की ६० पैसे
२. भारत के मुसलमानों का क्या करें ? — वेदभिक्षुः ६० पैसे
३. हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः ६० पैसे
४. मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर ५ रु०
५. हम सब हिन्दू हैं—वीर सावरकर ६० पैसे
६. पोस्टर—दो प्रकार के १)२० पैसे
७. इस्लाम में क्या है ?—राकेशरानी ६० पैसे
८. इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियां—जहीर नियाजी ६० पैसे
९. हिन्दू जागो ! देश बचाओ ! ६० पैसे
१०. इस्लाम—एक परिचय ६० पैसे
११. Bible in the Balance १ रु०
१२. A Challenge to the Christian Faith ३० पैसे
१३. पोप की सेना का भारत पर हमला—वेदभिक्षुः ६० पैसे
१४. पादरियों को चुनौती ६० पैसे
१५. बाइबिल को चुनौती—ओम्प्रकाश त्यागी ६० पैसे
१६. क्या ईसा खुदा का बेटा था ! ६० पैसे
१७. …और पादरी भाग गया ६० पैसे
१८. Christianity Unmasked १ रु०
१९. The Clarion Call ६० पैसे
२०. जन-ज्ञान मासिक का जय हिन्दू विशेषांक ६ रु०
२१. हमने इस्लाम क्यों छोड़ा ? ६० पैसे
२२. क्या भारत का एक और विभाजन होगा ? ६० पैसे
२३. तमिल ट्रैक्ट : क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे ? ६० पैसे
२४. हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा ६० पैसे

१००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और
५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन
प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से
कम १/४ धन अगाऊ अवश्य भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री

श्री अक्षय कुमार जैन द्वारा लिखित लेख

(इसी अंक में देखें।)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P.O. अलीपुर दिल्ली-३६	पौष २०४२ जनवरी, १९८६	D-C-201 R.N: 107119/65

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

एम डी एच

दंत मंजन
लौंग युक्त

23 जड़ी बूटियों से निर्मित
आयुर्वेदिक औषधि
दांतों का डाक्टर

दांत का दर्द

मुंह की दुर्गन्ध

मसूड़ो की सूजन

ठंडा गर्म पानी लगना

डिस्ट्रीब्यूटर्स
महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०
9/44, इण्डस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर
नई दिल्ली-110015 फोन : 539609.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi